व्लादिमीर नाबोकोव

लोलिता

मैं जब भी लोलिता को देखता हूं, एक अजीब किस्म की सनसनाहट से भर जाता हूं। वह अभी बच्ची है, मगर उसका वही बचपना ही तो मुझे सबसे अधिक उत्तेजित करता है। आप मुझे पागल समझ रहे होंगे, सचमुच मैं इस मामले में पागल ही हूं। मुझे तो उसकी हर अदा भा गयी थी। वह सामने हो और मैं उसे देखता रहूं—हर समय इसी बात की इच्छा होती थी। जब वह मेरी निगाहों से ओझल होती, तो मुझे दुनिया वीरान और अंधेरे में डूबी नज़र आती। जब वह सामने पड़ जाती, तो पूरी दुनिया में बहार आ जाती, दिन का उजाला सा खिल जाता। उसकी हर आहट, हर चाप पर मेरे कान लगे रहा करते थे। उसकी अटपटी—चटपटी बातें मेरे पागलपन को और भी दहका देती थी।

विश्व विख्यात उपन्यास

लोलिता

दो शब्द :

प्रस्तुत उपन्यास 'लोलिता' विश्व प्रसिद्ध बहुचर्चित उपन्यास है। लोलिता बहुचर्चित इस अर्थ में है कि योरोप और भारतीय जगत में इसे यकायक अश्लील उपन्यास की संज्ञा दी गयी। वर्षों तक इसके अश्लीलता पर साहित्य जगत के मनीषियों के बीच वाद–विवाद चलता रहा। अदालती कार्यवाहियां भी हुई। बहुत सोच–विचार के बाद विद्वान न्यायाधीश विदों ने इसे अश्लीलता से मुक्त कर दिया।

प्रश्न उठता है कि श्लीलता और अश्लीलता की परिभाषा क्या है—इरादतन जो चीज इस उद्देश्य से लिखी जाए कि उसे पढ़कर बिना वजह उत्तेजना–कामुकता उत्पन्न हो वह निःसन्देह अश्लील है। मगर जिस उपन्यास और चरित्र को पेश करने में कुछ ऐसे शब्दों को वर्णित करने की आवश्यकता पड़े, जो मानवीय शारीरिक सम्बन्धों के लिए आवश्यक हो, वह अश्लील नहीं श्लील है। सम्भव है आप और विद्वान जगत के लोग कोई और परिभाषा भी निकालें, मगर ऊपरी तौर पर यही बात सामने आती है।

लोलिता का मुख्य नायक, जिसकी उम्र परिपक्व है 35-40 के मध्य उम्र का फ्रेंच–इंग्लिश भाषा का विद्वान, बारह–तेरह वर्ष की लड़की के लिए अपना जीवन और भविष्य बर्बाद कर लेता है। वर्षों उसे अपने साथ रखता है। उसे अपने सम्पर्क में रखने के लिए उसकी माँ से शादी कर लेता है। मगर उसका अंत क्या हुआ ? अंत शिक्षाप्रद है, यही कहानी की मांग थी, यही उपन्यास का सबसे रोचक विषय है।

कृपया आप भी उपन्यास पढ़े और स्वविवेक से निर्णय करें कि क्या लोलिता अश्लील उपन्यास है।

आबिद रिज़वी

- *उपन्यास :*

  लोलिता

- *मूल लेखक :*

  व्लादीमीर नाबोकोव

- *अनुवादक :*

  आबिद रिज़वी

- *मूल्य :*

  बीस रुपये केवल

- *प्रकाशक :*

  राधा पॉकेट बुक्स

  33, हरी नगर, मेरठ 250002

  दूरभाष-(0121)-518734, 518025

- *लेज़र टाइप सैटिंग :*

  सरस्वती कंप्यूटर्स

  1032/3, शास्त्री नगर, मेरठ 250005

- *मुद्रक :*

  प्रमानन्द ऑफसेट प्रिंटर्स,

  K-19, नवीन शहादरा, देहली

लोलिता

लोलिता

लोलिता ! लोलिता !! लोलिता !!! हां, मैं उसी लोलिता की कहानी आपके सामने दोहराने जा रहा हूं, जिसके कारण आज मैं अदालत के इस कटघर में खड़ा हूं—जिसके बारे में आपने इस मुकदमें की कार्यवाई के दौरान समाचार पत्रों में काफी कुछ पढ़ लिया है।

ज्यूरी के माननीय सदस्यों, उसका नाम लोलिता था। उसकी मां उसे प्यार से 'लो' कहती थी, जानने वाले 'लोला' और स्कूल वाले डौली कहते थे। लेकिन मेरी बांहों में वह सदा लोलिता रही। एक लड़की जो प्यार की गर्मी पाकर खिली और खुरदुरे स्पर्शों की लहुलुहान आंच में झुलस कर बिखर गयी।

हां, हां, यह वही लोलिता थी जिसका मैं दीवाना था, जिसका मैं पुजारी था। वह जब मेरी बांहों में आकर समा जाती थी तो वह केवल लोलिता होती थी, लोलिता।

हां-हां, वह उस समय केवल लोलिता ही होती थी, जिसे मैं अपनी दुनिया कहूं या फिर अपने बिखरे हुए प्यार का संसार या वह प्यार का अमर गीत जो मेरी जिन्दगी में आकर मुझे बरसों के लिए महका गया था।

लोलिता की इस राख में दबी हुई चिंगारियां अब भी मेरे शरीर में आग लगा रही हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है, जैसे मेरा सब कुछ जल रहा हो। मैं आपके सम्मुख एक प्रेमी के रूप में नहीं बल्कि एक अपराधी, एक हत्यारे, एक खूनी के रूप में खड़ा हूं। मगर मैं बार-बार सोच रहा हूं, क्या मैं खूनी हूं ? आप फैसला देने से पहले शायद मेरे बारे में कुछ जान लेना चाहें।

स्कूल के सर्टीफिकेट में मेरी जन्म तारीख 1910 लिखी है। मां बताती है कि जब मैं पैदा हुआ तो हम लोग पेरिस में थे। मुझे अपने पिता की याद आती है, जो एक हंसमुख, मिलनसार और मितभाषी व्यक्ति थे। हमारे

खानदान में पहले शराब, फिर जवाहरात और फिर सिल्क का काम होता रहा है। पर मेरे पिता ने जमाने की हवा समझते हुए शुरू से ही होटल लाइन को चुना। टिबैरिया के किनारे उन्होंने एक आलीशान होटल खोला। मुझे होटल के साफ सुथरे कमरे दूधिया रोशनी में नहाती हुई हल्के पीले रंग की दीवारें और लम्बे बरामदे में बिछे हुए गुदगुदे कालीन अच्छी तरह याद हैं।

होटल में मेरी बड़ी पूछ थी। सब मुझे प्यार करते थे। नौकर चाकर तो मेरी अंगुलियों पर नाचते थे।

मेरे पिता हर समय बहुत खुश रहते थे। हर एक से हंसकर बातें करना उनकी आदत थी। उनकी हंसी हर समय उनके मोटे होंठों पर नाचती रहती थी। वे अपने आपको जमाने के साथ-साथ बदलना चाहते थे, तभी तो उन्होंने शराब और जवाहरात के खानदानी कारोबार को छोड़कर होटल का कारोबार चुना था।

जिन्दगी में और ज्यादह तरक्की करने के लिए उन्होंने टिबैरिया के तट पर एक बहुत बड़ा होटल तैयार करवाया था। जिसकी, आकाश से बातें करती सफेद बिल्डिंग पूरे शहर में अपने किस्म की एक ही इमारत थी। मुझे यह साफ-सुथरा और सुन्दर होटल बहुत पसन्द था। उसके कमरों की सजावट देखकर मेरा मन खुशी से झूम उठता था।

मैं अपने जितने भी रिश्तेदारों से मिला हूं, उन सबने मेरी मां की सुन्दरता का किसी न किसी ढंग से उल्लेख जरूर किया है। मुझे मां की कोई विशेष बात याद नहीं आती--केवल धुंधली-धुंधली स्मृतियां ही हैं। उनकी मृत्यु के समय मैं तीन साल का था। मां के बाद मेरी मौसी हमारे यहां चली आयी थी। पहले-पहल मेरी देखभाल करने के लिए, फिर पिताजी के कहने पर घर-गृहस्थी का एक अनिवार्य अंग होकर वह हमारे यहां ही टिक गई।

चूंकि मां की मुझे स्मृतियां ही शेष हैं, अतः उनके बारे में ज्यादह न कहकर मैं पिता और मौसी के बारे में ही जो कुछ कहना है कहूंगा।

अपनी औलाद से हर पिता को प्यार होता है। हर अच्छा पिता अपनी औलाद के भविष्य के लिए चिंतित रहता है। मेरे पिता भी मुझसे बहुत प्यार करते थे। जब भी मैं उनसे कहता कि मुझे आपका ये होटल बहुत पसन्द है तो खुशी से झूम कर कहते-"बेटे ! ये सब कुछ तुम्हारा ही तो है। मैं जो कुछ भी कर रहा हूं, तुम्हारे लिये ही तो कर रहा हूं।"

मैं उनकी बातों से खुश हो जाता। वास्तव में मुझे उस होटल में आकर आनन्द आने लगा था। नौकर चाकर भी मेरा बड़ा सम्मान करते थे।

मां की मृत्यु के दो वर्ष बाद मुझे स्कूल भेज दिया गया। स्कूल

मैं अपनी क्लास में मैं सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी तो नहीं पर फिर भी अच्छे विद्यार्थियों में गिना जाता था। अध्यापक मुझसे खुश थे, और पिता जी प्रसन्न। क्रिकेट खेलते हुए, छुट्टियों में देश-विदेश का भ्रमण करते हुए और जी लगाकर पढ़ते हुए मेरे दिन बड़े मौज से कट रहे थे। इसी बीच मेरी मुलाकात अन्ना बेल से हुई।

अन्ना मुझसे एक क्लास पीछे पढ़ती थी। मुझे उसकी बदसूरत मां और उसके गंजे बाप में कोई भी ऐसी बात न दिखाई देती थी, जिससे मैं उनकी ओर आकर्षित हो सकता। लेकिन होटल के इर्द-गिर्द सबसे निकट मकान उसी का था। अन्ना से मेरी मुलाकात खेलते-खेलते हुई थी। हम दोनों समुद्र के तट पर घरौंदे बनाते-बनाते मिले थे। कई दिन तो यूं ही इधर-उधर की बातों में कट गये। फिर हमने महसूस किया कि हमारी रुचियां और आदतें बहुत हद तक मिलती-जुलती हैं। हमारे सपने भी लगभग एक दूसरे की राहों को काटते हुए गुज़रते थे। वह एशिया में किसी निकट के देश में नर्स बनना चाहती थी और मैं बड़ा होकर एशियाई देशों में रचे जाने वाले षड़यंत्रों का पर्दाफाश करने वाला फिल्मी जासूस।

वैसे अन्ना से मुलाकात से पहले मैं घरेलू वातावरण के बारे में थोड़ी रोशनी डाल लूं तो मेरी कहानी समझने में आपको कुछ अधिक सुविधा होगी। बालक के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण बहुत कुछ वातावरण पर निर्भर करता है।

मौसी के सामने आने पर मैं अक्सर अपनी मां के बारे में सोचने लगता था। इस बात को सोचे बगैर न रहता था कि मां मुझे स्वेच्छा से छोड़कर न गई होंगी, उन्हें तो ईश्वर ने बुला लिया होगा, इसमें दोष मेरी मां का नहीं, ईश्वर का है, जिसने तीन साल के बच्चे से उसकी मां को छीन लिया।

सोचता हूं यह कैसा अन्याय है, कैसा जुल्म है ? कैसा अत्याचार है ? बेटे से मां को छीन लेने से बड़ा अत्याचार और क्या होगा ?

ईश्वर जब इतना बड़ा अन्याय करता है तो उसे कोई दोषी कहने का साहस नहीं करता, इसे प्रकृति का खेल कहा जाएगा।

जो कुछ भी हुआ था मेरे लिए बहुत दुःखदायक था। मैं कई दिनों तक मां की याद में रोता रहा। मौसी ने मुझे मां का प्यार देने का हर प्रयत्न किया। मुझे अपने सीने से लगाकर लोरियां गाती, मेरे दिल के जख्मों पर मरहम रखने का हर प्रयास किया। आखिर वह मेरी मां की बहन ही तो थी।

मौसी मेरी मां की उम्र से कुछ बड़ी थी। उनका नाम साइबिल था। उन्होंने मां का प्यार जुटाने का हर सम्भव प्रयास किया। एक छोटे और

बिन मां के बच्चे के टूटे दिल को जोड़ने के लिए, उसके अशान्त मन को शान्त करने के लिए उन्होंने कुछ भी न उठा रखा था। वे घर में ही रहने लगी थीं। उनके प्यार को पाकर मैं भी अपनी मां की जुदाई के दुःख को किसी हद तक भूलने लगा था।

मगर जैसे-जैसे मेरी आयु बढ़ रही थी, वैसे-वैसे मेरी बुद्धि भी तेजी से काम कर रही थी। मैं घर के वातावरण को बोझिल होता महसूस करने लगा था। मैंने कई बार अपने पिता और मौसी को छुप-छुप कर आपस में मज़ाक सा करते देखा था। उस मजाक और छेड़-छाड़ में कुछ प्यार का सा भाव था। ऐसी छेड़-छाड़ तो केवल पति-पत्नी के बीच होती थी। हालांकि यह विचार मेरे मस्तिष्क में कई वर्षों के बाद आ सके, अलबत्ता उस समय पिता और मौसी के बीच के उस छेड़-छाड़ को चोरी-चोरी देखने में मुझे आनन्द आता था।

उस समय मैं बच्चा था, बच्चों के मन में तो ऐसी कुतूहलताएं जन्म ले ही लेती हैं जो बड़े लोग नहीं सोचते। किन्तु इन सब बातों को मैं महसूस कर रहा था। पिता जी और मौसी दिन प्रति दिन एक दूसरे के निकट होते जा रहे थे। और एक दिन मैंने उन दोनों के मुंह से प्रेम की बातें सुनीं। प्रेममय शब्दों के साथ वे एक-दूसरे के इतना निकट आ गये थे कि उनके शारीरिक फासले भी मिट गये। जब कोई मर्द किसी औरत से रसीले बोल, बोलकर उसके होंठों पर अपने जलते अधर रख देता है तो एक बच्चे के मन पर यह दृश्य देखकर क्या बीतती है, यह किसी ने शायद ही कभी सोचा हो। अपने आनन्द में खोकर इन्सान पूरी दुनिया को भूल जाता है।

इस मामले में जो कुछ भी था, उसमें पिता जी ने अवश्य ही मुझे मौसी से बढ़ते सम्बन्धों के बीच अपने मार्ग का रोड़ा महसूस किया, तभी तो उन्होंने मुझे मां की मृत्यु के दो वर्ष उपरांत स्कूल भेज दिया था।

स्कूल में मैं किताबों में खोकर किसी हद तक अपनी मां की मृत्यु का दुःख भूलने लगा था। मगर मैं जब भी एकांत में बैठता पिता जी और मौसी के चेहरे मेरी आंखों के सामने नाचने लगते। उन दोनों का मिलन और प्यार की बातें एक-एक करके कांटों की तरह मेरे ज़ेहन में चुभने लगतीं। मुझे अपनी मां की धुंधली-धुंधली भोली-भाली और सुन्दर सूरत याद आने लगती। मेरी मां सुन्दर थी, तभी तो पिता जी भी उन्हें प्यार करते थे। वे उसकी सुन्दरता की तुलना चन्द्रमा से करते थे। पर समय कितनी तेजी से बदल गया था। वे उस चन्द्रमुखी के स्वर्गवास के साथ ही उसको विस्मृत करके, एक नयी दुनिया में गुम हो गये थे।

अब तो उनके सामने मौसी ही सब कुछ थी। मां तो शायद याद भी न आती थी। मेरे मन में इस बात को लेकर इतना विषाद भर गया था कि पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान लगाता, मगर ज़ेहन भटक जाता, शायद यही वजह थी कि मैं अपनी क्लास का सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी न बन सका। इसके बाद भी सारे अध्यापक मुझसे खुश थे, मैं पढ़ाई में होशियार था, सबका प्रिय था। पढ़ाई के साथ-साथ स्कूल के खेलों में भी मैं पूरी-पूरी रुचि लेता था। क्रिकेट का खेल मेरा मन प्रिय खेल था। मुझे क्रिकेट खेलने में खूब आनन्द आता था। इस क्रिकेट के खेल की वजह से आगे चलकर मुझे देश-विदेश भ्रमण करने का सुअवसर मिला।

हां, तो मैंने अन्ना का जिक्र किया था। अन्ना से मेरी मुलाकात हो चुकी थी। मुलाकात क्या, वह मेरी जिन्दगी में थी। वह मुझसे एक क्लास पीछे थी। शुरू-शुरू में मैं अन्ना के प्रति सहानुभूति में भरा था। यह सहानुभूति आगे चलकर आगे की कुछ और मंजिलें तय करने लगी थी।

हम दोनों समुद्र तट पर घरौंदे बनाते थे, खेलते हुए एक दिन महसूस किया कि हम एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं। प्यार के एहसास से मुझे शर्म भी आई, झिझक भी हुई, लेकिन जो होना था, वह हो गया था। यह प्यार कितना गहरा और उद्दण्ड था, इसकी कल्पना गीत लिखकर खो जाने या रोकर हल्के हो जाने वाले भावुक हृदय ही कर सकते हैं।

एक आग थी, जो हौले-हौले हम दोनों के बीच सुलगती जा रही थी और जब भी मौका मिलता, हम बड़ों की आंखें बचाकर एक-दूसरे को छूने, सहलाने या चुटकियां भरने की फिराक में रहते थे। तट पर घरौंदे बनाने का ढोंग करते हुए आहिस्ता-आहिस्ता रेत की सतह के नीचे एक-दूसरे के स्पर्श के लिए लालायित या कुर्सियों के पीछे घुटने से घुटना सटाकर खड़े हुए, पकड़े जाने के डर से उत्तेजित, हम आशंका और उत्तेजना के एक जाल में टंगे रहते। लहू में सनसनाती सुखद अनुभूतियों का यह जाल, कभी हमें हवा में उछाल देता और झटके से खुलते हुए किसी दरवाजे या हवा चलने से टकराती किसी खिड़की की आवाज से हमारी सांस जहां की तहां रह जाती। और कभी किसी झाड़ी में गेंद फेंक कर ढूंढ़ते-ढूंढ़ते कनपिटयों से कनपटियां सटाये कोई आहट, खट-खट माथे पर आ बजती और सहम कर झुरमुटों से बाहर भी देर तक आतंकित, अलग-अलग खेलते हुए, फिर मिलन का इन्तज़ार करते।

कभी-कभी तो ऐसा लगता कि सचमुच हम पकड़े जायेंगे, पर हमारी उम्र की वजह से किसी को शक न हुआ और किसी झाड़ी के पीछे सहमते-

सहमते एक-दूसरे के होठों को छू लेने का, समुद्र में नहाते-नहाते पानी के नीचे टांगों से टांगें सटाए रखने का और खेल-खेल में लड़ने का ढोंग कर, बार-बार उलझती हुई हमारी उंगलियों का यह खेल इसी तरह चलता रहा।

यादें दो तरह की होती हैं, हम जब कभी किसी के बारे में सोचने की कोशिश करते हैं तो पर्दों की स्मृति पटलों का प्रोजेक्टर पहले तो एक छाया डालकर चुप हो जाता है और फिर कई खुशबुऐं, रंग और रेखाचित्र, कटे हुए दृश्य अनुभूतियां, असम्बद्ध किन्तु तीखेपन से छूते हुए तेज-तेज गुजर जाते हैं। अंधेरे में जगमगाते इन भिन्न-भिन्न रोशनी के टुकड़ों की तरह अन्ना की याद मेरे लिए इतनी साफ नहीं है कि मैं उसे अपनी बांहों में पसीने से भीगी हुई चिकनी पिण्डलियों और भारी नितम्बों वाली युवती के रूप में पहचान सकूं और न ही इतनी अस्पष्ट की सस्ते वेश्याघरों से लेकर भद्र महिलाओं तक के ठण्डे गर्म स्पर्श उसे धो सकें, लेकिन जब भी कभी जेल में अपने सैल के बाहर झांककर भुनभुनाती हवाओं से मार्च की गंध पहचानने के लिए उतावला हो उठता हूं तो अन्ना और मार्च एक साथ वापस आ जाते हैं।

बहुत दिनों तक इसी तरह छुपा-छिपी खेलने के बाद आखिर एक दिन मैंने अन्ना को इस बात के लिए तैयार कर ही लिया कि वह रात को खाना खाने के बाद सैर करने के बहाने बाहर चली आये और बाग में टूटी हुई दीवार के पास बेलों की घनी छांव में बेंच पर बैठकर मुझसे मिले।

वहां अंधेरा भी था और एकांत भी। किसी के आने की आहट सुनकर अलग हुआ जा सकता था। मुझे याद आता है कि बेंच पर बैठने के बाद जब डरते-डरते हमने सामने देखा था तो खिड़की के रंगीन कांचों से छनकर आती अन्ना के घर की रोशनियां ऐसी लगी थीं जैसे कोई रंग बिरंगी लालटेन हिला-हिलाकर इशारे कर रहा है- "डैडी और मम्मी ब्रिज खेल रहे हैं।" अन्ना ने फुसफुसाते हुए कहा था।

और मैंने जब मैंने उसी अपनी ओर खींचकर उस पर झुकने से पहले आकाश की ओर देखा था तब नीचे बढ़ते मेरे हाथों और ऊपर देखती हुई मेरी आंखों ने लगभग एक ही समय जाना था कि पांच-दस मुट्ठी सितारों के पीछे आकाश और बादल की सी पतली फ्राक से ढंका अन्ना का शरीर-दोनों बिल्कुल नंगे हैं और जब मैंने उसकी

पिण्डलियों को सहलाना शुरू किया तो उसकी दोनों टांगे आपस में जुड़ी हुई थीं। लेकिन कानों पर से सरकते-सरकते जब मेरे होंठ यकायक उसके होंठों से मिल गये तो घुटने स्वतः ही धीरे-धीरे अलग होने लगे।

उसकी आंखों में तैरती हुई आशंका, भय और अपेक्षित आनन्द की अधखुली नमी को देखकर मैं कुछ देर के लिए ठहर गया था, लेकिन तभी मेरी ठोड़ी के नीचे से होकर गले के ऊपरी हिस्से को जमाती हुई एक गर्म सांस और अन्ना के हिलने से यकायक नीचे फिसल आए मेरे सहमे हुए हाथों ने मुझे फिर एक डगमगाती हुई किश्ती में फेंक दिया था। जिस बेंच पर हम बैठे थे वह सपाट नहीं थी, एक ओर झुकी हुई थी। अन्ना मुझसे ज़रा ऊपर थी और मैं ढलान वाली तरफ था, लेकिन इसमें कहीं दिक्कत नहीं थी, बल्कि हुआ यह था कि अन्ना के तपते होंठ, आहिस्ता-आहिस्ता थरथरा कर भिचती हुई उसकी बांहों, मेरे घुटने के दबाव से खुलती हुई उसकी आतुर जांघों के साथ-साथ खुशबू का हल्का सा बादल मेरे चारों ओर झुक आया था।

तभी कहीं हल्की सी आवाज हुई। अन्ना एकदम से पीछे हट गयी, लेकिन आवाज़ जितनी तेजी से उभरी थी, उतनी ही तेजी से डूब भी गई। आगे को झुकी हुई अन्ना पीछे हट कर दुबारा ज्यों की त्यों ढीली पड़ी रही। एक हाथ से उसकी कमर थाम, दूसरा हाथ उसके बालों पर फेरते हुए मैंने नीचे की ओर झुकना आरम्भ कर दिया।

मुझे और ज्यादह जोर नहीं लगाना पड़ा। मेरे होंठों पर पिसते हुए अन्ना के होंठ मुझे आपसे खींचकर नीचे की ओर ले गये। फिर रेशमी सतहों पर धीरे-धीरे सरकते हुए मेरे गर्म होंठ उसके अधपके सीने के बीच आकर ठहर गये और मेरे रग में खुशबू का नया झोंका तैर गया।

अवश्य ही अन्ना शाम को चोरी छिपे अपनी मां के कमरे में गई होगी और मुझसे मिलने की तैयारी में किसी कीमती पाउडर का फफ लगाकर आई होगी। मैंने होंठों में दबाई हुई अन्ना को बेंच पर लिटाकर कमर के आस-पास सहलाना शुरू किया ही था कि तभी अंधेरे में से एक जोर की गुर्राहट आई।

मैं सहम गया। अन्ना भी हड़बड़ा कर उठ बैठी। हम दोनों ने देखा-अन्ना के सामने बिल्ली खड़ी थी। शायद और कोई मौका होता तो हम लोग हंस पड़ते, लेकिन हमारे सूखे हुए गले से कोई आवाज न निकली। अन्ना अपने होठों को जीभ की नोक से तर करने के बाद मेरी आस्तीन खींचते हुए दुबारा अंधेरे में गुम हो जाना चाह रही थी कि तभी अंधेरे में से दूर से आती हुई उसकी मां के पुकारने की आवाज गूंजी थी-

"अन्ना, अन्ना बेटी, बाग में क्या कर रही हो ?"

मां की पुकार का जवाब देते हुए अन्ना को जाना पड़ा और मैं सितारों की छांव में बेलों से घिरे हुए वातावरण में एक पत्थर की पुरानी बेंच पर धीरे-धीरे तपता रहने के लिए अकेला छूट गया।

स्कूल में हम लोग कम ही मिलते-जुलते थे। हां कभी इत्तफाक से ही हमारी नज़रें एक-दूसरे से टकरा जातीं तो दिल में कुछ बेचैनी सी होने लगती। भले ही हम जुबां से कुछ नहीं बोलते थे मगर हमारी आंखें तो आपस में बात कर ही लेती थीं।

मुझे उस समय यह एहसास होने लगा कि हम एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं, अथवा हमें प्यार हो गया है। यह बात सोचकर हमें शर्म आयी।

मगर क्यों ? प्यार में शर्म क्यों ? प्यार तो हृदय की भावना का दूसरा नाम है, जो मन की गहराइयों से उत्पन्न होता है।

यह तो एक ऐसी आग थी जो धीरे-धीरे हम दोनों के दिलों में सुलग रही थी। हमें जैसे ही कोई मौका मिलता हम बड़ों की आंखों में धूल झोंककर एक दूसरे से मिलते। हमारा यह मिलन एक-दूसरे को और निकट ले आता। हम कुछ सहमे हुए से एक-दूसरे को चुटकी काट लेते। कितना आनन्द आता था, इस प्रकार के स्पर्श से। रेत पर बैठे-बैठे जब हमारे घुटने एक-दूसरे से टकरा जाते तो ऐसा प्रतीत होता जैसे पूरे शरीर में बिजली दौड़ गई हो। लहू में सनसनाती, सुखद अनुभूतियों का यह जाल कभी हमें हवा में उछाल देता और कभी तेज हवा के कारण खुलते बंद होते किसी द्वार या खिड़की की आवाज जब हमारे कानों में आती तो हमारी सांसें रुक जाती थीं।

मैं समझता हूं कि ये सब कुछ प्रकृति की ही देन थी। हम कुछ भी सोचकर नहीं करते थे, सब कुछ अपने आप ही हो जाता था। हमें इस खेल में इतना आनन्द आता था कि हम उन बीते क्षणों के स्पर्श को याद करके भी आनन्द महसूस करते थे।

उस दिन मां के पुकारे जाने पर जाने वाली अन्ना की खुशबुओं को दुबारा खिलने का चौबीस वर्षों तक मैं इन्तजार करता रहा।

चौबीस वर्ष।

जवानी के बारे में सोचता हूं तो लगता है कि किसी तेज रफ्तार दौड़ती रेलगाड़ी की खिड़की से फड़फड़ाते हुए दृश्यों को देख रहा हूं।

सब कुछ स्पष्ट है लेकिन फिर भी कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें आखिरी स्टेशन तक याद रखा जा सके।

जवानी !

बचपन से आगे जब जवानी में कदम रखा जाता है तो हर इन्सान अपने अन्दर एक विचित्र सा परिवर्तन करता है और विशेषकर मुझ जैसा भावुक इन्सान इस परिवर्तन को ज्यादह ही महसूस करता है।

लन्दन, पेरिस में कालेज की शिक्षा समाप्त करते-करते कई औरतों से मेरा सम्पर्क हुआ। अपने शरीर के सुन्दर गठन और सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार के कारण मुझे लड़कियां मिलने में कोई कठिनाई नहीं होती थी। अक्सर कोई न कोई लड़की मेरे चक्कर में पड़ी ही रहती थी। और अगर इर्द-गिर्द मंडराने वाली इन सभ्य लड़कियों से मैं ऊब जाता तो वेश्याओं के पास चला जाता। औरतों से मेरे सम्बन्ध मात्र औपचारिक थे। अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी औरत का इस्तेमाल कर लेने के बाद, मेरे मन में कोई भावनात्मक सम्बन्ध शेष न रह जाता था। दवाई पीकर फेंक दी गई खाली बोतलों की तरह, औरतें भी मेरे जीवन में आती और चली जातीं और मैं उन्हें बगैर किसी राग-द्वेष के खाली कपड़ों की तरह पहनता-उतारता रहा।

पहले सोचता था कि मनोविज्ञान का अध्ययन करूंगा, लेकिन फिर यह पाने के बाद कि मेरी रुचि अंग्रेजी साहित्य में अधिक है, मैंने धीरे-धीरे अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया और लन्दन से पेरिस चला आया।

पेरिस में दुनिया भर से आई फिल्में देखता, मर्जी से पढ़ता-लिखता और यदा-कदा कविता और शोध लेख प्रकाशित कराता रहता। कीट्स द्वारा बैंजोमिन वैली को लिखे गए एक पत्र के सम्बन्ध में मेरे विश्लेषणात्मक प्रस्ताव पर काफी तहलका मचा था। इन्हीं दिनों फ्रांस के एक प्रमुख प्रकाशक ने मुझसे फ्रांसीसी और अंग्रेजी साहित्य का तुलनात्मक सहायक ग्रंथ तैयार करने का आग्रह किया। मैं उसे कुछ दिनों तक टालता रहा, फिर तैयार हो गया। अंग्रेजी और फ्रेंच साहित्य के इस ग्रंथ को कई खण्डों में तैयार करना था। यदि कहूं कि मेरे जीवन के पिछले दो दशक किसी न किसी रूप में इस ग्रंथ की तैयारी से सम्बन्धित रहे हैं तो अतिशयोक्ति न होगी।

मैं जिस समय गिरफ्तार हुआ उस समय इस ग्रंथमाला का आखिरी खण्ड तैयार कर चुका था। बीच के कुछ दिन लिखने में मन न लगा तो मैंने प्रौढ़ों के एक स्कूल में पढ़ाने का काम भी स्वीकार कर लिया। यहां

मुझे सभी तरह के लोग मिले और लगभग सभी क्षेत्रों में मेरे सम्पर्क स्थापित हो गये।

अक्सर अपने सम्पर्कों का लाभ उठाकर मैं कोई न कोई मौका निकालकर, अनाथालयों, सुधार गृहों या लड़कियों के हॉस्टलों में जाता रहता था ताकि छोटी-छोटी बातों पर हंस-हंसकर पागल होती हुई दुबली-पतली किशोरियों के पास रहने की उत्तेजना से अपने आप को गरमा सकूं।

आपको यह बातें अजीब लगेंगी—कहां फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्य का प्रतिष्ठित विद्वान और कहां बारह-चौदह साल की छोकरियों के स्पर्श के लिए कुत्तों की तरह सूंघता एक मौन विकृत अपराधी। लेकिन इस बात को आप उस समय तक समझ ही न पायेंगे जब तक कि मैं अपनी बात पूरी न कर लूं।

दरअसल मुझे दस से लेकर चौदह साल की लड़कियां ही पसन्द आती थीं। जवान लड़कियां मुझे अपनी ओर आकर्षित न कर पातीं। इन मोटे-मोटे नितम्बों और बड़ी-बड़ी छातियों वाली लड़कियों की बांहों में जाते ही मेरी नसें थरथराने से इन्कार कर देतीं। मेरी उत्तेजनाओं का ताना-बाना सिर्फ दस से चौदह साल तक की लड़कियों के इर्द गिर्द बुना हुआ था। उनका खिलंदड़ापन, उनकी बदतमीजियां, उनकी फूहड़ हंसी, उनके मैले हाथ-पैर और चपर-चपर बातें। मैं खिले हुए फूलों से नहीं अधखिली कलियों के प्यार से दबकर पिसना चाहता था।

ज्यूरी के माननीय सदस्यों, आपको हैरानी हो रही है। एक विद्वान के मुख से ऐसी बातें सुनकर कौन हैरान न हो जाएगा। क्या आप समझते हैं कि इस तरह का विचार रखने वाला मैं संसार का पहला आदमी हूं। नहीं, नहीं महोदय, ऐसा नहीं है। मैं यह बात नहीं मानता। मैं पहला आदमी नहीं हूं जिसने ऐसा सोचा हो अथवा चाहा हो। यह बात अलग है कि बहुत से लोग वैसे विचार तो रखते हैं, मगर वे अपने मन की बात होंठों तक लाने का साहस नहीं करते। वे सेक्सी घुटन के शिकार रहते हैं। और आप में से तो सब सदस्य इस बात को जानते ही होंगे कि जेम्स कर्स्ट जिस समय राहब से मिला था, उस समय राहब की आयु केवल दस वर्ष की ही थी। और इससे भी आश्चर्य की बात तो यह है कि जेम्स उसकी जिन्दगी में आने वाला पहला आदमी न था।

मिस्र के बादशाहों, यूनान के देवताओं और पूर्व के मन्दिरों में अनगिनत ऐसे उल्लेख मिलते हैं, जहां रजस्वला होने से पहले ही लड़कियां कामदेव की पूजा में अर्पित कर दी जाती थीं। सन् 724 के मई महीने में जब

दांते फ्लोरेन्स की एक दावत में जिस वीनस को देखकर सब कुछ भुला बैठा था, वह वीनस उस समय बारह साल की ही थी।

मेरी दुनिया दो हिस्सों में बंट गई थी। मैं एक हिस्से में आम मर्दों की तरह दुनिया के सारे काम करता, शरीफ प्रोफेसर समझा जाता और जरूरत महसूस करने पर पैसे देकर या अन्य किसी तरीके जवान औरतों से बिस्तर गरमाता। मेरे व्यक्तित्व के दूसरे हिस्से में दुनिया के तमाम रीति-रिवाजों से अलग सिर्फ दस से चौदह साल की लड़कियों की उतावली देह-गंध और सिहरन मंडराती रहती।

जब मैं और कुछ न कर पाता तो एकाध पुस्तक लेकर लड़कियों के किसी स्कूल के पास वाले पार्क में जा बैठता, मुझे इन्तजार जरूर करना पड़ता, मगर कोई न कोई लड़की हंसती, खेलती, हांफती मेरे पास आकर बैठ जाती, मेरी बेंच के नीचे आकर छुप जाती। यह अवसर न आ पाता तो मैं खुद ही हंसती, खेलती किसी लड़की को अपने पास बुलाकर जहां तक हो सकता सहलाने और मसलने की कोशिश करता। कई बार मेरी किस्मत बहुत अच्छी होती तो कोई लड़की मेरी बेंच के नीचे आ छुपती और मैं बेंच की दरारों से उसके पसीने की खुशबुओं में डूबा, देर तक मंत्रमुग्ध बैठा रहता था फिर कभी कोई लड़की खेल खत्म करने के बाद, अपने जूते के तस्मे कसती हुई, बेंच पर पांव टिका देती तो उसकी फ्राक सरक जाने से कसे हुए अण्डरवियर से उभरी हुई जांघे देर तक मेरे अन्दर झनझनाती रहतीं।

कभी-कभी ऐसा भी होता कि कोई लड़की भागी-भागी थककर निढाल सी होकर मेरे पास आकर गिरने लगती तो मैं उसे अपनी बांहों में भरकर सहलाने लगता। खेलती हुई लड़कियों में से किसी का फ्राक ऊपर उठ जाता तो मेरी वासना भरी नज़रें उसकी जांघों को ऊपर तक देखने का अवसर न चूकतीं। खेल-खेल में या अन्य किसी कार्य में झुकी लड़की के गले में आगे तक देखने का अवसर मेरी आंखें न चूकतीं, जिसमें लड़की के छोटे-छोटे उरोज मुझे झनझनाहट से भर देते थे।

कैसा आनन्द आता था उनके शरीर के छुपे हुए भागों को देखकर जो नग्न भी होते थे और अर्धनग्न भी। और मैं एक ऐसे भूखे मुसाफिर की भांति जो रोटी पानी को सामने देखकर उसे खा-पी नहीं सकता, बस तरसता रहता है, मैं भी बस देखकर तरसता।

मैं अपनी दुनिया का यह रूप भी आपको दिखाना चाहता हूं जिसमें केवल मैं होता था और होती थी, स्कूलों से लौटती हुई, सागर तट पर

नहाती हुई किशोरियां, जो खिड़कियां खोलकर बड़ी लापरवाही से कपड़े बदलती थीं और अपने शरीरों को स्वयं ही देखती थीं, नटखट सी मुस्कान होंठों पर समेट लाती—आपस में शरारतें करती थीं।

बचपन को पार कर जवानी की दहलीज पर पांव रखने वाली इन लड़कियों की शरारतें देखकर ही मुझे आनन्द आता। जब वे दूसरी लड़की के यौनांगों पर चुटकी काटती तो मेरे मुंह में जैसे पानी भर आता। मेरे सारे शरीर में जैसे बिजली की कोई तेज लहर दौड़ जाती।

जब कोई लड़की बस में मेरे साथ सफर करती और उसका फ्राक तेज हवा से ऊंचा उठता तो मेरी आंखों में जैसे चमक कौंध जाती। मैं एक लम्बी और ठण्डी आह भरकर अपने आप से कहता—"ये लड़कियां इसी तरह घूमती रहें—बसों में, सागर तट पर, स्कूल के पार्कों में और मैं इन्हें देख-देखकर आनन्द लेता रहूं।"

कितने मूर्ख हैं वो लोग जो मुझे वासना का पुजारी समझते हैं, औरतों का रसिया कहते हैं। मुझ पर 'औरतों का भूखा' होने का दोष लगाते हैं।

मैं पूछता हूं क्या मुझे औरतों की कमी है ? क्या शहर में वेश्यावृत्ति के अड्डे नहीं हैं ?

मैं समझता हूं कि इस शहर में सब कुछ मिलता है, प्यार भी बिकता है, जवानी भी बिकती है। किसी चीज की कमी नहीं है। हां, यदि कोई कमी है तो जो मैं चाहता हूं, जो मेरा मन चाहता है।

इसी तरह एक अवैध, किन्तु मनमोहक उत्तेजनाओं की प्यासी मेरी देह, दुनिया के कई शहरों से छुट्टियां बिताने के बाद बार-बार लौटकर उसी तरह धुन्ध से भरे हुए पेरिस में लौट आती। शोध के सिलसिले में लायब्रेरियों में काम करने से जो वक्त बचता, इधर-उधर सभा-गोष्ठियों या वेश्याओं के पुराने बिस्तर पर बीत जाता।

सन् तो याद नहीं, लेकिन पेरिस में गुज़ारे गये दिनों का उल्लेख करते समय अपनी शादी से पहले एक दिन, दिनभर का काम खत्म कर लेने के बाद जब मैं सड़क के शोर-गुल और ट्रेफिक से बचने के लिए एक गली में से होकर लौट रहा था तो मेरी नज़र नुक्कड़ पर लैम्प पोस्ट के साथ ही पटरी पर टहलती हुई एक लड़की पर पड़ी और मेरा मन, हल्का होने के लिए तड़प उठा।

दूर से मैं समझा कि कोई साधारण लड़की होगी—मुझे क्या लेना देना, लेकिन पास पहुंचकर जब मैंने ध्यान से देखा तो लगा कि उस लड़की से परिचय किये बिना आगे बढ़ जाने में मैं कितनी मूर्खता करता।

छोटे कद की इस दुबली-पतली लड़की ने ऊंची एड़ी के सैण्डल पहन रखे थे ताकि कद में ज्यादह दिखे। जब वह चलते-चलते अपने पास से होकर गुज़रने वाले लोगों को देखकर हौले से मुस्कराने की कोशिश करती तो उसके अधकटे, छितराये हुए बालों से ढके गालों में छोटे-छोटे गड्ढे पड़ जाते। आम फ्रेंच लड़कियों से अलग उसकी पलकों और नितम्बों में कामुकता कम भी, बचपना ज्यादह।

उसका यह बचपना ही मुझे ले डूबा। उसकी अल्हड़ता ने मेरी जांघों में आहिस्ता-आहिस्ता सुलगती उस सारी आग को हौले से छूकर भड़का दिया, जो लायब्रेरियों के मटमैले शैल्फों से झड़ी गर्द से दबी, मुझे अन्दर ही अन्दर झुलसाती रहती थी। मैं कुछ शर्मसार सा, कुछ विवश, उसकी ओर बढ़ा। मुझे अपनी ओर आता देखकर वह मुस्कराई।

शायद उसने भी मेरी चाल का उतावलापन और आंखों में उबलती हुई चाह पढ़ ली थी। उसके पास पहुंचकर सौदेबाजी शुरू करने के लिए जब मैंने जेब से सिगरेट निकालकर पेश किया तो उसने बिना जली सिगरेट होंठों में घुमाते हुए, बच्चों की तरह पलकें फड़फड़ा कर मुझसे बीस फ्रांक मांग लिये। मैं समझ रहा था कि यह बाजार से दुगना रेट मांग रही है, लेकिन उसके अल्हड़पन से मजबूर था। मैंने 'हां' कर दी और मैं उसे लेकर उसके कमरे की ओर चल पड़ा।

उसका कमरा आम वेश्याओं की तरह एक सस्ते मकान में था। वेश्याओं की तरह ही उसने अन्दर जाने से पहले घण्टी बजाकर पूर्व सूचना दे दी ताकि यदि उसकी कोई सहेली किसी ग्राहक के साथ धन्धे में लगी हुई हो तो सावधान हो जाए। अन्दर कमरे में पहुंचने पर भी दृश्य में कोई विशेष परिवर्तन न हुआ। वही लांड्री की हल्की-हल्की गंध वाला पुराना, लेकिन नई चादर से ढका हुआ बिस्तर था और कमरे में जुड़ा हुआ बाथरूम।

कमरे में पहुंचते ही मैंने उसका नाम और उम्र पूछी। उसने अपना नाम मोनी बताया और उम्र अट्ठारह साल। मैं जानता था कि वह उम्र के बारे में झूठ बोल रही है। जब फुर्ती से कपड़े उतारकर, वह मेरी ओर पीठ करके खिड़की के साथ सटकर खड़ी बाहर गली में देखने का बहाना करने लगी तो उसके अविकसित नितम्बों और दूधिया रोओं वाली कमर के पिछले हिस्से को देखकर मेरा शक और भी पक्का हो गया। वह अपनी उम्र में सोलह वर्ष से अधिक की नहीं थी। वह यूं ही पुरुषों को अपनी उम्र ज्यादह दिखाकर लुभाने का प्रयास करती

थी। पर उसे इस बात की कब खबर थी कि मुझे उसकी कम उम्र में ही वास्तविक आकर्षण नज़र आ रहा था।

उत्तेजना के मारे मैं कांपता हुआ, कपड़े उतारकर उसके पास जा खड़ा हुआ। उसकी पीठ सहलाने के बजाय मैंने एक हाथ से उसका कंधा पकड़ा और उसको अपनी ओर घुमा लिया। जब मैं और कुछ करने के बजाय उसकी अंगुलियां सहलाने लगा तो मोनी ने मुझे आश्चर्य से देखा। शायद उसे आश्चर्य इस बात को लेकर था कि आम ग्राहकों की तरह मैं उसके नग्न शरीर को देखकर उत्तेजित होकर भी जल्दबाजी न दिखा रहा था। आहिस्ता-आहिस्ता उसके भिन्न-भिन्न अंगों को सहलाता हुआ मैं भी खिड़की के बाहर देखने लगा।

उसकी अंगुलियों को चूमने के लिए होंठों के पास लाते समय मैंने देखा कि लगभग पिछले एक सप्ताह से उसने अपने नाखूनों की सफाई न की थी। उनमें मैल भरा हुआ था। मैंने यह बात उससे कही तो वह माफी मांगकर हाथ धोने के लिए वॉश बेसिन की ओर लपकी। मैंने उसे रोक लिया। मुझे उसका यही बचकानापन तो अच्छा लग रहा था—अर्ध विकसित नितम्ब, अधपके उरोज, पीठ पर भूरे रोएं और मैली अंगुलियां। उसके भूरे बालों में अंगुलियां फेरते हुए मैंने उसे भींचना शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे वह भी मेरे हौले-हौले खुलते मुंह, तेज होते खेल में रुचि लेने लगी। जब मैं उसे खिड़की के पास से उठाकर बिस्तर पर लाया तो वह मेरी बांहों में ऐसे गुम हो गयी जैसे कोई खूबसूरत गुड़िया किसी बड़े तकिये पर आराम से सिर रखकर गुम हो जाती है।

आज याद करता हूं तो ऐसा लगता है कि पेरिस में जितनी भी वेश्याओं से मिला था मोनी ही पहली थी, जिसने पैसे लेकर शरीर देने के बावजूद मुझे कहीं कोई भी मशीनी प्रक्रिया की ऊब न होने दी थी। उसके चुम्बनों में न तो दोहराये जाने की ऊब थी और न ही किराये की रकम जल्दी से जल्दी भुगता देने की अनमनी हड़बड़ाहट। बरसों बाद मैं उसकी बांहों में अच्छी तरह तैरकर किसी बेदिंग टब में घुलती हुई खुशबुओं की तरह आहिस्ता-आहिस्ता पिघलता गया।

उठने के बाद जब वह तेजी से कपड़े पहनकर बाहर चलने के लिए तैयार होने लगी तो मैंने दुबारा मिलने का प्रस्ताव रखा। इस बार मैं उससे सारी रात का समय लेना चाहता था। सारी रात मेरे साथ रहने की बात सुनकर वह सहम सी गयी। उसका सहम जाना मुझे भला प्रतीत हुआ। मुझे लगा, जैसे वेश्या होते हुए भी वह अभी बच्ची है और पैसे

लेकर शरीर बेचने के बावजूद अभी तक अजनबी मर्दों से उसी तरह डरती है, जैसे घर वालों की चोरी-छुपे से सिनेमा जाने वाली लड़कियां अपने पास बैठे पुरुषों के अंधेरे में छू जाने के भय से डरी रहती हैं। वे रोशनी में उनके साथ कॉफी पीने से साफ इन्कार कर देती हैं।

मैं उसे काफी देर तक समझाता रहा कि मेरे साथ पूरी रात बिताने में उसका कोई नुकसान न होगा। मेरे कई बार के प्रस्ताव के बाद उसने कहा था—"मैं आज तक कभी किसी मर्द के साथ पूरी रात अकेली नहीं रही। पूरी रात क्या करोगे ?" उसने बचपना भरा प्रश्न छोड़ा था। फिर वह रात को दस बजे नुक्कड़ वाले कैफे पर मिलने को राजी हो गई थी।

उस रात हम दोनों एक मिनट के लिए भी नहीं सोये। मैं मोनी को जितनी बार भी देखता, उतनी ही बार मेरी नसों में अन्ना की शक्ल का पारा थरथराने लगता। मोनी के 'न न' करने के बावजूद मैं उसे बार-बार लपेट लेता। वह जितना ही अल्हड़ और बदतमीज बनती, उतना ही मुझे अच्छा लगता। उसका दांत किटकिटाना, बात-बात पर झुंझलाने लगना, और फिर मुझे नाराज होता देखकर बच्चों की तरह गुदगुदा कर मनाने की कोशिश करना—यही सब कुछ तो था, जिसे ढूंढ़ने के लिए मैं इतनी औरतों को फलांगता हुआ मोनी की ओर बढ़ आया था।

मेरी यांत्रिक और पाशुविक यौन-प्रक्रियाओं से भरी दिनचर्या में मोनी से मुलाकात एक अपूर्व घटना थी। उस समय मोनी के मकान की सीढ़ियां उतरते हुए, अप्रैल की तेज बारिश हो जाने से, कमरे से बाहर निकलकर बरामदे में रुके-रुके मैंने फैसला किया था कि आगे भी मोनी से सम्पर्क बनाए रखूंगा। विदा होते समय मैंने उसे तय रेट के अलावा अच्छी खासी टिप भी दी थी, जिसके आधार पर मैं यकीन कर सकता था कि आगे भी वह मुझसे मिलने को आतुर रहेगी—वह मुझे भूल न सकती थी। अगली बार मिलने पर और भी तन्मयता से मुझे खुश रखने की कोशिश कर सकती थी।

अगले दिन जब हम लोग दोपहर को मिले तो मैं उसे अपने फ्लैट में ले गया। पर एक रात ही रात में मेरे हाथों से गुजर कर मोनी बदल गयी थी। उसका बचपन धुल गया था। उसकी वे तमाम बेवकूफियां जिन्हें बचपन समझकर मैं जरूरत से ज्यादह आशान्वित हो उठा था, वास्तव में औरत की खिलवाड़ भर थी। तीसरी मुलाकात में मोनी मेरी तनी हुई नसों की तारों को खेल-खेल में छूकर झनझना देने वाली अल्हड़ लड़की न रहकर एक अनुभवी कम उम्र वेश्या रह गई थी।

मिलना तो अगले दिन भी तय हुआ था, पर मैं उससे मिला नहीं। लगता था वह जो कुछ मुझे दे सकती थी, दे चुकी थी। इसके बाद उसकी वेश्या देह से किसी और अनुभूति की अपेक्षा करना, चूसी हुई हड्डियों को चिचोड़ने से अधिक आनन्ददायक न था। इसीलिए मैंने अपनी लायब्रेरी से घर लौटने का रास्ता बदल लिया था।

दो-तीन महीने बाद चलते-चलते एक कैफे में मोनी को मैंने देखा अवश्य मगर मैं कतरा कर निकल गया। वह मोनी जिसने एक रात मेरे अन्दर सोई हुई अन्ना के अधूरे स्पर्शों को जगा दिया था—वही मोनी, जो पेशेवर वेश्या की तरह सारे सम्बन्धों को अनभिज्ञ और पैसे के ताने-बाने में बुन रही थी—दोनों में जमीन आसमान का अन्तर था। मोनी एक वेश्या थी जो धन के लोभ में हर नाटक करने के लिए तैयार रहती थी। वह शरीर बेचती थी, अदाएं बेचती थी। अल्हड़पन बेचती थी। लेकिन अन्ना कुछ बेचती नहीं थी। वह तो प्रकृति का उपहार बांटती थी। वह नाटक नहीं करती थी। प्रकृति के साज़ पर गाया जाने वाला अनमोल गीत थी वह।

दोनों ही औरतें थीं। शारीरिक भूख की आपूर्ति करने वाले वासना के पुजारियों को औरतों में अंतर ही कहां नजर आता है। इसे तो बस मेरे जैसे लोग ही जान सकते हैं।

साल भर बाद मैंने शादी कर ली थी।

जेल की कोठरी के अंधेरे में बैठा-बैठा जब-तब मैंने यह सोचने की कोशिश की है कि मैंने शादी क्यों की ? इस बात का उत्तर मुझे एक बार भी न मिल सका। अलबत्ता इस सवाल के साथ ही कई बातें एक साथ सामने आने लगती हैं।

कभी-कभी इस का उत्तर इस रूप में मिलता है कि मोनी से मिलने के बाद का यह एहसास कि अब सिर्फ वेश्याओं की दया पर जिन्दा रहना मेरे लिए मुश्किल है, मुझे चर्च तक ले गया हो। फिर इस बात का भी ख्याल आता है कि मन के किसी कोने में यह ख्वाहिश भी रही हो कि उम्र ढलने से पहले, वक्त रहते, गृहस्थी बसा कर देख ली जाए। क्या पता सजे-सजाए घर में रहने, ठीक समय पर खाना खाने और अजनबी औरतों के बिस्तर पर बैठकर पैसे का हिसाब करते हुए छटपटाने के बजाय, किसी समर्पिता की बांहों में समाते ही जिन्दगी का रुख बदल जाए। शायद कहीं

यह आशा भी रही हो कि शादी हो जाने से अवैध यौन उत्तेजना का छोटी-छोटी लड़कियों के इर्द-गिर्द घूमता हुआ चक्र बन्द हो जाएगा।

आर्थिक रूप से मैं सम्पन्न इस अर्थ में था क्योंकि पूर्वजों की विरासत से मुझे काफी धन-सम्पदा मिली थी। पिता की मृत्यु के बाद उनका होटल बिक चुका था। जाहिर था, मुझे पिता के व्यापार में कोई रुचि न थी, अतः होटल बिकता ही। होटल बिकने से मिलने वाली रकम मेरे हाथ आई थी। अब मैं और लोगों के मुकाबले बहुत अमीर नहीं तो गरीब भी न था। कई लड़किया ढूंढ़ने और परखने के बाद डाक्टर पोलिश की लड़की मेरी नज़रों में चुभी। उस डाक्टर के पास मैं अपनी मनोवैज्ञानिक उलझनें सुलझाने जाया करता था। डाक्टर पोलिश एक योग्य मनोवैज्ञानिक चिकित्सक था। धीरे-धीरे हम दोनों डाक्टर और मरीज न रहकर दोस्त बन गये। जब भी शाम को मैं खाली समय पाता, डाक्टर के यहां चला जाता। मुझे शतरंज खेलना आता था और डाक्टर पोलिश शतरंज का शौकीन था। बस इसी खेल के साथ हम दोनों की जोड़ी और दोस्ती बन गयी थी।

शतरंज की बाजियों के दौरान डाक्टर की लड़की कभी सामने बैठी कुछ पढ़ती रहती। कभी चाय देने कमरे से रसोई तक और रसोई से ड्राइंग रूम तक आती-जाती रहती और जब कभी कोई काम न होता तो पिता के पीछे खड़ी शतरंज की चालें सुलझाने में लगी रहती।

इतनी औरतों के सम्पर्क में आने के बाद मैं आत्मविश्वास से कह सकता हूं कि मेरे अन्दर आम मर्दों से अलग कहीं न कहीं कोई खास बात जरूर है। चालीस बसन्त देख लेने के बाद कोई भी आदमी जवान नहीं रह जाता। लेकिन मैं जानता हूं कि आज भी मेरे रेशमी बालों, चौड़ी छाती और खुरदुरे चेहरे में वह आकर्षण है कि कोर्ट रूम में मुकदमा सुनने के लिए आयी हुई महिलाओं की आंखों में मेरे लिए झलकती हुई सहानुभूति साफ़-साफ पढ़ी जा सकती है।

ये वही औरते हैं जो शायद अपनी बेटियों को चरित्रहीन बनाने के जुर्म में मुझे समाज से बहिष्कृत कर देना चाहेंगी। लेकिन अगर कहीं अकेले में मुझे पा जायें तो सारे कपड़े उतारकर मेरी गोद में बैठते हुए हिचकिचायेंगी नहीं। मैं इन औरतों को खूब अच्छी तरह जानता हूं, और यह भी जानता हूं कि उन दिनों अगर मैं चाहता तो कोई गुदगुदे बदन वाली कामुक लड़की सहर्ष मेरी पत्नी बनने के लिए राजी हो सकती थी। लेकिन मुझे डाक्टर की बेटी बैलेरिया ने ही आकर्षित किया और मैं समझौते के लिए राजी हो गया।

बैलेरिया की उम्र बीस के आसपास रही होगी। वह सुन्दर तो नहीं

थी, लेकिन उसके अच्छे व्यवहार के नीचे कहीं कोई बच्ची जैसी अल्हड़ता थरथराती रहती थी। शायद उसकी इसी अल्हड़ता और नकली बचकानेपन ने मुझे अपनी ओर खींच लिया था।

शादी की रस्मो रिवाज पूरे करने के बाद हम नए अपार्टमेन्ट में चले आये, जिसे मैंने नई जिन्दगी शुरू करने के लिए किराये पर लिया था। मेरा ख्याल था कि बैलेरिया जहां एक ओर पत्नी के रूप में मेरे व्यक्तित्व को संतुलित करने में सहायक होगी, वहीं दूसरी ओर उसका बचपन मेरे अन्दर बार-बार जोर मारता, मुझे अवैध यौन प्रवृत्तियों के दाम्पत्य सुख में डुबो देगा। वैसे मेरी हालत यह थी कि मैंने सुहागरात शुरू करने से पहले बैलेरिया को दुल्हन की पोशाक उतार कर एक छोटी सी नाइट शर्ट पहनने को राजी कर लिया था।

शादी के पश्चात् हर औरत-मर्द के बीच एक नया अध्याय आरम्भ होता है। इस नये जीवन में आशाओं का संसार बसा होता है। बैलेरिया लड़की से पत्नी बनकर इस नये मकान में आयी थी। उसका बचपना मेरे जीवन के लिए प्रेरणा का पात्र था। मैं तो उसकी अदाओं का ही दीवाना था।

सुहागरात का नाम लेते ही हर औरत-मर्द के शरीर में खुशी की एक विचित्र सी लहर दौड़ जाती है। हम दोनों भी शादी के पश्चात् सुहागरात के हजारों सपने संजोए हुए थे। वैसे भी मेरी हालत यह थी कि मैं उसमें अन्ना की सूरत पाने को बेताब था।

मैंने जो नाइट शर्ट बैलेरिया को पहनाई थी उसे मैंने चार साल पहले लड़कियों के अनाथालय से चुराई थी, और शायद इसी दिन के लिए सहेज कर रख छोड़ी थी।

लेकिन सुहागरात खत्म होते न होते स्पष्ट हो गया कि मैं एक चक्र से छूटने की कोशिश में दूसरे चक्र में फंस गया हूं। अपने शरीर के पोर-पोर में दहकती हुई अन्ना की प्रतिकृति ढूंढ़ता हुआ मैं एक फूहड़ और अच्छी-खासी, मोटी-ताजी बेवकूफ पत्नी के चक्कर में फंस गया था। किन्तु अब क्या हो सकता था। मेरे जीवन में शायद यही सब कुछ लिखा था। भाग्य विधाता का कैसा यह मजाक था।

1935 से 1939 तक चार वर्षों तक गृहस्थी और पत्नी का यह बोझ मेरे कंधों पर रखा रहा और मैं उसे ढोता रहा। बैलेरिया के साथ यह आसानी थी कि वह ज्यादह बक-झक नहीं करती थी। हर समय अपने आपमें खोई रहकर घर-गृहस्थी के कामों में लगी रहती थी। वह घर को ज्यादह से ज्यादह आराम देह बनाने में जुटी रहती थी।

लायब्रेरी से लौटने के बाद हम दोनों अक्सर सिनेमा, मैच या थियेटर देखने चले जाते। जिस दिन बाहर जाने का प्रोग्राम बनता मैं घर में रहकर पढ़ने-लिखने के कार्यक्रम में खुद को व्यस्त रखता और वह फैशन मैगजीनों के पन्ने पलट कर उसमें इस बात को खोजती रहती थी कि घर को किस तरह बगैर ज्यादह खर्च किये सुन्दर और आकर्षक बनाया जा सकता है। शारीरिक सम्बन्धों के नाम पर बस औपचारिकताओं का निर्वाह होता। सप्ताह में एक दो बार मैं उसके साथ सहवास का सुख भोगता, वह 'ऊंह-आह' करती हुई सन्तुष्ट हो लेती। इस मामले में बैलेरिया कुछ अच्छी ही थी कि उसे सेक्स की भूख ज्यादह न सताती थी–अन्यथा मुझसे उम्र में आधी के करीब वह औरत थी। इस उम्र में औरत में वासना की उत्ताल तरंगें कुछ ज्यादह ही जोश मारती हैं। इसी उम्र को तो कहा जाता है खेलने-खाने की उम्र–लेकिन बैलेरिया जो कुछ मुझसे पा जाती थी उसमें संतुष्ट रहती थी। उसके इस स्वभाव को लेकर यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह ठण्डी औरत थी–अलबत्ता यह जरूर कह सकता हूं कि ज्यादह कामुक न थी–अगर वह होती तो मेरे लिए उसकी पूर्ति करना सम्भव न हो पाता, ऐसा भी न था कि मैं सेक्स के मामले में चुक सा गया रहा हूं–लेकिन मुझे औरत के जो रूप लुभावने, आकर्षित करने वाले और उत्तेजक होते हैं, वह मुझे बैलेरिया में न मिल रहे थे। या यूं कहा जाए–मैं खुद ही अलग प्रकृति का था अन्यथा बैलेरिया तो पूर्ण रूप से औरत थी।

मेरे स्वभाव में तब्दीली आ गयी हो, ऐसा कदापि न था। यदि ऐसा होता तो मैं अपने मनोरंजन के लिए सामने वाले मकान में रहने वाले दुकानदार की बारह तेरह वर्षीय लड़की में क्यों दिलचस्पी लेता। वह कभी-कभी शाम को खिड़की पर या सुबह स्कूल जाती हुई दिखाई दे जाती। सच पूछो तो मेरी सारी उत्तेजना का स्रोत वह लड़की ही थी। मैं उसके प्रति लगातार झुकाव में आता जा रहा था। जिस दिन घर आते समय वह मुझे शाम को बालकनी में खड़ी या गली पार करती हुई मिल जाती, मैं सारा कार्यक्रम कैंसिल करके चुपचाप मेज पर काम करता हुआ उसे बालकनी पर खड़ा वापस लौटते हुए देखने के लिए ताक-झांक करता रहता। जिस रात वह मेरे पसन्द के रंग का फ्राक पहनती तो मुझ पर सेक्स की दीवानगी सी छा जाती–ऐसे नशे की तरंग मुझ पर छा जाती कि मैं बैलेरिया को बिस्तर पर झिंझोड़-झिंझोड़ देता। उसे भरपूर आनन्द आता। उम्र के लिहाज से यह उसकी जरूरत थी। मगर वह मुझे विस्मय में भरकर देखे बगैर न रहती,

जैसे आंखों ही आंखों में पूछती कि आज मुझे हो क्या गया है।

1939 की गर्मियों की लड़ाई शुरू होने से पहले मुझे अमेरिका से अपने वकील का लम्बा-चौड़ा पत्र मिला। पत्र के मुताबिक मेरे एक चचा अपनी सारी जायदाद इस शर्त पर मेरे नाम कर गए थे कि उनके बाद मैं बिजनेस की देखभाल करूं।

इसे कहते हैं छप्पर फाड़ कर मिलना। मैं बैठे बिठाए इतना बड़ा धनवान बन जाऊंगा, यह बात मैंने सपने में भी नहीं सोची थी। किसी को उसकी आशाओं और कल्पनाओं के विपरीत धन मिल जाए तो इससे बढ़कर खुशी उसके लिए और क्या हो सकती है।

बैठे-बिठाए धन मिला तो मेरी कल्पनाओं के पंख लग गये। मैं जिस घर-गृहस्थी और पत्नी के बन्धन में इतने दिनों से बंधा हुआ था, उससे आजाद होने के लिए मेरी भावनाएं अंगड़ाइयां लेने लगी थीं। अक्सर मैं ऐसा सोचा करता था कि मैंने क्यों शादी की ? अपने पैरों में गृहस्थी की बेड़ियां क्यों डाली ? उससे आजाद होने का सुअवसर हाथ लगा था। एक ही वातावरण में रचे-बसे होने के कारण मैं चार सालों में काफी ऊब चुका था। मैंने बैलेरिया से शादी जिस मकसद के लिए की थी, वह तो पूरा ही न हो रहा था। इसमें कमी बैलेरिया की नहीं, खुद मेरी तबियत की थी। इतने वर्ष उसके साथ व्यतीत कर लेने के बाद मेरे और उसके सम्बन्ध समाप्त हो गये थे। शायद इसका कारण यह भी था कि बैलेरिया चुप रहने वाली औरत थी। वह बहुत कम बोलती थी। मैं जब कभी उसे अपने पास बिठाकर प्यार की बातें करने लगता तो उसका उत्तर नीरसता भरा होता था–"अब हम लोग गृहस्थी जीवन में प्रवेश कर चुके हैं, ये बातें तो लड़कों और कुआंरों के मुंह से अच्छी लगती हैं। हमारी उम्र अब इन बातों के लिए नहीं रही है।"

मुझे उसकी बातों पर क्रोध आ जाता। वह ख्वामखाह ही बुढ़ापे का आवरण ओढ़ रही थी, हालांकि वह खासी जवान थी। मैं उसे डाट कर कहता–"तुम मानव हृदय की भावनाओं को कभी नहीं समझ सकोगी। तुमने दिल की आवाज कभी नहीं सुनी, साहित्य को पढ़ा नहीं, मानव प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास ही नहीं किया। इस बात की समझ तुममें नहीं बन पायी है कि मानव जीवन बहुत छोटा है, इसे आनन्द से व्यतीत करना ही जीवन का सच्चा सुख है।"

मेरी ये दार्शनिकता या भावुकता भरी बातें सुनकर वह क्रोध में भड़क उठती। पांव पटकती हुई रसोईघर में जाकर अपना क्रोध बरतनों

पर उतारने लगती। मैं अन्दर ही अन्दर उसकी अज्ञानता और पागलपन पर कुढ़ता जलता रहता। वैसे मैं और कर ही क्या सकता था। उसके स्वभाव में दिनों दिन तेजी से तब्दीली आती जा रही थी। यदि मैं उसे कोई बात कह देता तो वह फूस की आग की तरह भड़क उठती थी और घटिया स्तर की बातें कहकर मेरे दिल को जलाने लगती थी। मैंने गृहस्थी की गाड़ी को चलते देने के लिए मौन संधि कर ली थी।

जब मैंने बैलेरिया को बताया कि हम लोग जल्दी ही न्यूयार्क के लिए रवाना होने वाले हैं तो वह प्रसन्नता के बजाय मुंह बना बैठी। मेरे बार-बार पूछने पर पहले तो मुंह खोलने के लिए ही तैयार न थी। मेरा अभिप्राय वह समझ चुकी थी कि मैं उसे अपने साथ अमेरिका ले जाना चाहता हूं। काफी कोशिश करने के बाद उसने बताया—

"मेरा पासपोर्ट ठीक नहीं है।"

"तो इसमें परेशान होने की क्या बात है ?" मैंने कहा—"हम लोग पासपोर्ट आफिस से पता कर लेंगे, और अगर कोई असुविधा हुई तो वकील से मिलकर उसको सही करवाएंगे।"

बैलेरिया सुनकर चुप हो गई—लेकिन मेरे प्रस्ताव पर खुश न हो सकी। जबकि अमेरिका चलने की बात बताते समय मेरे मन में यह बात थी कि बैलेरिया खुशी से झूम उठेगी। वह खुशी में पागल से होकर मेरे गले में बांहें डालकर झूल जाएगी, बार-बार मेरा मुंह चूम लेगी। भला कौन औरत अकस्मात् ही धनवान हो जाने की खबर पर खुश न होगी—मैं धनवान हो रहा था मेरी पत्नी होने के नाते उस दौलत की बराबर की साझीदार वह भी तो बनने जा रही थी। वह एक बड़ी दौलत पाने के बाद अपने अधूरे शौक पूरे कर सकती थी। उसे घर सजाने का शौक था—उस शौक को साकार रूप दे सकती थी।

लेकिन ऐसा लगा था, उसे ना तो मेरे धनवान होने की कोई खुशी थी, ना ही अमेरिका जाने का उत्साह।

जबकि मैं अमेरिका जाने की कल्पना से ही जैसे हवा में तैरने लगा था। उस शाम बैलेरिया के मूड की परवाह न करते हुए मैं देर तक अमेरिका की खुशहाली, अमेरिका के सुख-वैभव को लेकर तरह-तरह की बातें करते हुए हवाई किले बनाता रहा।

अगले चार दिन मैंने बैलेरिया के पासपोर्ट ठीक करवाने में लगा दिये। जब सारे कागजात सही करवाने के बाद हम लोग पासपोर्ट आफिस से निकल रहे थे तो मुझे ऐसा लगा बैलेरिया कुछ कहना चाह

रही है, मगर कह नहीं पा रही है। सीढ़ियां उतरते समय उसकी आंखों में यथासम्भव सहानुभूति उडेलते हुए मैंने उससे पूछा–

"क्या बात है ?"

उत्तर में बैलेरिया कुछ नहीं बोली। वह मेरे पीछे चुपचाप बरामदा पार करके सड़क पर आ गई।

"तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहतीं ?" मैंने जोर देकर पूछा।

हम सड़क के किनारे खड़े थे और इंतजार कर रहा था कि कोई खाली टैक्सी आए तो रोकूं। तभी बैलेरिया बोली–

"अब मेरा और तुम्हारा इकट्ठे रहना सम्भव नहीं।"

मैं स्तम्भित रह गया। आश्चर्य से मेरा मुंह खुला का खुला रह गया। बैलेरिया और इतनी सीधी सपाट बात। यह तो उसके स्वभाव के एकदम विपरीत बात थी। वह बहुत कम अपना मुंह खोलती थी। बोलती भी थी तो बात को घुमाफिरा कर कहती थी।

"क्यों.. ?" किसी तरह मन पर भारी पत्थर रखकर मैंने प्रश्न किया।

"मैं एक और आदमी से प्यार करती हूं।" उसने कहा था।

इस बार स्तब्ध होने के बजाय धमाका सा हुआ था मेरे दिलोदिमाग पर। अविश्वास भरी नज़रों से मैंने देखा था बैलेरिया की ओर–जैसे यकीन करना चाहता रहा हूं कि बैलेरिया ने जो कुछ कहा वह मेरे कानों का भ्रम है। वह ऐसा कर ही नहीं सकती थी। और अगर करती भी थी तो अब उस बात का कोई महत्व न रह गया था। चार साल तक हमने घर गृहस्थी की गाड़ी एक साथ खींची थी। वह चार साल तक मेरे पल्ले से बंधी रही थी–वह किसी से प्यार करती होती तो चार सालों में क्या मुझे पता न चलता ?

कुछ देर के लिए उसका कथन स्वप्नवत् लगा था, मगर स्वप्न टूटा– क्योंकि बैलेरिया अपने कथन के प्रति पूरी तरह गम्भीर थी।

और जब मैंने उसके कथन की विश्वसनीयता पर यकीन किया तो मेरी हालत कैसी हुई होगी, इसकी कल्पना कोई भी सहज में ही कर सकता है। नामर्द से नामर्द पति भी अपनी पत्नी के मुंह से और तरह की बात बेशक सुन ले, मगर इस बात को सुनना कोई गवारा नहीं करता कि उसकी पत्नी किसी और से प्यार करती है।

मेरे अन्दर गुस्से की एक तेज लहर उमड़ी। मुझे लगा अगर मैं अपने गुस्से पर काबू न पा सका तो यहीं सड़क पर उजड्ड, देहातियों की तरह, असभ्य जंगलियों के समान बैलेरिया को, यहीं सड़क के किनारे मारने-पीटने के लिए पिल पड़ूंगा। लेकिन, तभी धीमी रफ्तार से दौड़ती

हुई एक टैक्सी हमारी तरफ आती दिखी। मैंने इशारा करके टैक्सी को रोका। झटके से दरवाजा खोलकर और बैलेरिया को अन्दर बैठने के लिए धकेल कर खुद भी बैठ गया।

टैक्सी दौड़ने लगी।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद जब मैं गुस्से को और अधिक दबा न सका तो मैंने अपने स्वर को संयत रखने का प्रयास रखते हुए बैलेरिया से उसके प्रेमी का नाम पूछा।

उसने कोई जवाब न दिया। मैंने पूनः पूछा इस बार वह मेरे सवाल का सही जवाब देने के बजाय हमारे दाम्पत्य जीवन, सम्बन्धों और मेरे व्यवहार का दुःखड़ा रोना शुरू कर दिया। मैं उसकी बकवास को कुछ देर तक इस उम्मीद पर सहता रहा कि शायद ही अब वह अपने प्रेमी का नाम उजागर कर दे। पर वह जब उसी तरह बकवास करती रही तो मैंने उसे लगभग झिंझोड़कर होश में लाते हुए कहा–

"तुम उसका नाम क्यों नहीं बताती ?"

उसने मेरी ओर देखा। जैसे उसे यकीन ही न आ रहा हो कि मुझे भी गुस्सा आ सकता है। फिर उसने अपने हैण्ड बैग से रुमाल निकालकर उससे नाक साफ करते हुए अपनी अंगुलियों से टैक्सी चला रहे, चालक की ओर इशारा किया।

पहले तो उसके इस इशारे को मैं समझ ही न सका–यानी इस बात की समझ से मैं दूर रहा कि 'प्रेमी' के मामले में वह ड्राइवर की ओर इशारा कर रही है। लेकिन जब उसने अपनी बात को स्पष्ट रूप से मेरे सामने व्यक्त की और चालक की मुस्कराती भाव भंगिमा मैंने देखी तो मेरे विस्मय का कोई ठिकाना न रहा।

मेरे सामने विस्मयकारी धमाके पर धमाके हो रहे थे। बैलेरिया के रहस्यमय व्यक्तित्व की ऐसी अबूझ परतें मेरे सामने खुल रही थीं जिनके बारे में मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। औरत के चरित्र का यह भी रूप होता है, मुझे पहले जानकारी न थी।

बैलेरिया और उसके 'प्रेमी' टैक्सी चालक के बीच उस समय के मसले की पहले से सांठ-गांठ थी–अर्थात् तयशुदा प्रोग्राम था कि अमुक क्षण पर मेरे सामने बैलेरिया अपने प्रेम का रहस्योद्घाटन करेगी। उसके बाद की होने वाली प्रतिक्रिया को सम्भालने के लिए 'प्रेमी' महोदय खुद को सामने पेश कर देंगे। यदि मैं अपने विवेक पर काबू खोकर बैलेरिया के साथ असभ्य जंगलियों सा व्यवहार करने मारने-पीटने लगता तो

प्रेमी महोदय झट से बीच में आ कूदते। जब मैं पासपोर्ट आफिस में था उसी सड़क पर आसपास वे टैक्सी से चक्कर लगा रहे थे।

चालक ने बेहद शालीनता के साथ गाड़ी को एक छोटे से रेस्ट्रां के सामने ले जाकर रोक दी। हम दोनों को नीचे उतरने के लिए यूं आमंत्रित किया जैसे अजनबी टैक्सी चालक न होकर हमारा खानदानी दोस्त हो। उसके व्यक्तित्व का रहस्योद्घाटन हो जाने के बाद—अब उसके व्यवहार के प्रति मुझे कोई आश्चर्य न था।

अलबत्ता आश्चर्य इस बात का था कि बैलेरिया की अपने उस प्रेमी के साथ खिचड़ी पकती रही और मुझे हवा तक न लग सकी। मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ था कि किसी और से प्रेम की बात बैलेरिया ने कितने सहज भाव से स्वीकार कर ली थी—अब वह भी आश्चर्य की बात न रह गयी थी। उसके प्रेमी के बीच मामला तय था कि इस बात को कब और कहां प्रकट करना है, जो बैलेरिया ने प्रकट कर दिया था।

टैक्सी से उतरने के दो मिनट बाद ही हम लोग कैफे में थे। परिचय होने पर पता चला कि टैक्सी ड्राइवर महोदय कुछ समय पूर्व रूसी फौज में कर्नल थे।

हम लोग अन्दर जाकर बैठ चुके थे। बैलेरिया ने अपने पीने के लिए आर्डर दिया। कर्नल ने शराब मंगवाई और मैंने व्हिस्की के डबल पैग का आर्डर दिया।

ड्रिंक आ जाने के बाद बैलेरिया ने बातचीत शुरू की। उसकी बातचीत में मुझे अब भला क्या रुचि हो सकती थी। मेरा मस्तिष्क तो पल-पल सांय-सांय कर रहा था। जैसे उसकी बात मेरे कानों में उतर ही न रही हो—मैं 'हूं हां' में उत्तर दे रहा था। अलबत्ता कर्नल उसके एक-एक शब्द पर ध्यान दे रहा था।

उन दोनों का वह नाटक मेरे लिए असह्य हो गया तो मैंने सुझाव रखा कि बैलेरिया को मेरे साथ घर चलकर अपना सारा सामान पैक कर लेना चाहिए। अब बैलेरिया को कर्नल पल भर के लिए भी अपनी नजरों से दूर न रखना चाहता था, अतः हमारी और बैलेरिया के बीच टपक कर बोला—

"मेरा ख्याल है कि हम उसी टैक्सी से चलें जिससे यहां तक आये हैं तो कैसा रहे ?"

मैं क्या कहता। अब वह कुछ भी करे मेरी बला से। मैंने एतराज करने की आवश्यकता भी न समझी, क्योंकि बैलेरिया से मेरा अब कुछ

भी सम्बन्ध न रहा था। सम्बन्ध का ताना बाना सिर्फ घर तक चलकर उसको सामान पैक करने देने के अवसर तक ही रह गया था।

कमरे में पहुंच कर बैलेरिया ने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया। मैं बाजी हार चुके जुआरी की तरह खिन्न था और बैलेरिया खुश। उसकी खुशी मुझसे देखी न जा रही थी—और मैं सोच रहा था अगर इस समय कहीं से पिस्तौल मिल जाए तो मैं बैलेरिया को शूट कर दूं। कॉलेज में पिस्तौल चलाने का मैंने अभ्यास किया था। मेरे सामने कभी भी ऐसी नौबत न आयी थी कि गोली चलाने की आवश्यकता महसूस करता। पर उस समय महसूस कर रहा था।

सामान बांधते-बांधते जब बैलेरिया सूटकेस बन्द करने के लिए नीचे को झुकी तो मेरे मन में बड़ी तेजी से उसके भद्दे ढंग के थल-थल नितम्बों पर जोर से एक लात जमाने की इच्छा उठी। मैं खड़ा होने के लिए कुर्सी से हिला ही था—पता नहीं विचारों को कार्य में परिणित कर भी सकता या नहीं कि तभी अकस्मात् उसका प्रेमी कर्नल मेरे सामने प्रकट हो गया—अपनी इच्छा का गला घोंट कर मुझे जहां का तहां बैठे रह जाना पड़ा।

वैसे भी मैं सामान्य दिखना चाहता था। मन में ज्वालामुखी धधक रहा था, मगर उसे फट कर बाहर आने से रोकने की मैं हर सम्भव चेष्टा कर रहा था। जाती हुई बैलेरिया के सामने मैं इस बात को कतई जाहिर न करना चाहता था कि उसके जाने के मामले को लेकर मैं उद्विग्न हूं। मैं खुद को सामान्य रखने की चेष्टा कर रहा था। मैं जाहिर कर रहा था कि जिन्दगी से साथ छोड़कर जाने वाली बैलेरिया को लेकर मुझ पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है।

मैं काफी देर तक उसी तरह कुर्सी पर बैठा रहा। खटाक् से दरवाजा बन्द होने और फिर गाड़ी के इंजन के जाग पड़ने की आवाज हुई तो मैंने एहसास किया कि बैलेरिया और उसका प्रेमी जा चुके हैं। मेरे अन्दर गुस्से की लहर रह-रहकर उभर रही थी। कर्नल मेरी जिन्दगी में विलेन की तरह उभरकर आया था और मेरी जिन्दगी की अभिनेत्री को मुझ से छीनकर ले गया था। मैं बैठा देखता रह गया था। मैंने फिल्मों के ऐसे अवसरों पर देखा था कि अभिनेता विलेन से भिड़ जाता है, पहले अपनी खूब मरम्मत करवाता है, फिर विलेन की मरम्मत करता है।

निहत्थे उस विलेन से भिड़ना मेरे लिए लाभप्रद न था—अतः किसी हथियार की तलाश में मैं झटके से अपनी जगह से उठ गया। तेज कदमों से किचन में गया—मेरा इरादा था कि कोई भारी वजनी चीज

मिल जाए जिससे मैं कर्नल का सर तोड़ दूं–मगर ऐसी कोई चीज न मिल सकी। मैंने गली में झांककर देखा–मेरे देखते ही देखते टैक्सी आंखों से ओझल हो चुकी थी–अब गली में मेरे जीवन में सन्नाटे की तरह उदासी फैली हुई थी।

इसके बाद,

द्वितीय विश्व महायुद्ध आरम्भ हो गया।

कुछ समय पुर्तगाल और पूर्वी योरोप में भटकने के बाद मैं अमेरिका पहुंचा। वहां पहुंच कर अपने चाचा के वकील से मिला। चाचा के छोड़े कारोबार और वसीयत की जानकारी प्राप्त थी। फिर उनका धंधा बाकायदा तौर पर देखने लगा। उस धंधे में कोई ज्यादह काम न था। इन्हीं दिनों न्यूयार्क के एक विश्वविद्यालय ने मुझे, फ्रेंच और अंग्रेजी साहित्य के तुलनात्मक इतिहास पर जो कार्य हुआ था, उसे अभी तक क्रमबद्ध रूप से प्रकाशित नहीं किया जा सकता था, को पूरा करने का प्रस्ताव दिया। मैंने यूनिवर्सिटी के सुझाव को स्वीकार कर लेने में कोई नुकसान की बात न देखी।

इस तुलनात्मक इतिहास का पहला खण्ड तैयार होते-होते एक दो वर्ष और बीत गये। इन दिनों मैं रोजाना लगभग चौदह–पन्द्रह घण्टे तक काम करता। मेरी दिनचर्या दो भागों में बंट गयी थी। एक हिस्सा धूप में जगमगाती लाइब्रेरियों, ग्रंथों, विद्वतापूर्ण वाद विवाद से घिरा हुआ था, दूसरा रह–रहकर घुटनों के ऊपर रेंगती हुई दुबली–पतली लड़कियों के फड़फड़ाते फ्राक उलटकर जांघों के जंगलों पर कांपती प्यास से ढका हुआ था। जिसमें मेरी आत्मा की प्यास ललचाया करती थी। इसे आप मेरी कमजोरी ही समझें कि दुबली–पतली कम उम्र लड़कियों के अर्धनग्न शरीर के अंगों को देखने से मेरी आंखों की प्यास बुझती थी।

मेरे चाचा का कारोबार धीरे–धीरे काफी हद तक सम्भल चुका था। अब तो मैं वहां पर कुछ आवश्यक पेपर्स पर हस्ताक्षर करने भर को ही जाता था। मेरे ग्रंथ का पहला भाग प्रकाशन के लिए जा चुका था, यह मेरे लिए बेहद खुशी की बात थी।

इन्हीं दिनों मेरे चाचा की फर्म का एक भूतपूर्व अधिकारी मुझसे मिलने आया। वह ढली उम्र का व्यक्ति था। उसकी बातों से लगता था कि चाचा के खास दोस्तों में एक रह चुका है। मुझे इस तरह व्यस्ततम्

और एकाकी जीवन बिताते देखकर उसने सुझाव दिया कि मैं रेम्सडेल में छुट्टियां बिताने चला जाऊं। वहां चाचा के उस दोस्त का कोई भाई-भतीजा रहता था जो आसानी से मेरी देखभाल कर सकता था।

मेरी जाने की इच्छा न हो रही थी, मगर उसने मुझे काफी हद तक प्रेरित कर दिया था, साथ ही यह विश्वास दिलाया था कि मुझे वहां पहुंच कर कोई असुविधा न होगी, तो मुझे 'हां' करना पड़ा। रेम्सडेल में सुविधाओं की जानकारी देने के सिलसिले में चाचा के दोस्त ने बताया कि वहां रहने वाले उसके भतीजे का नाम मैक्कू है। उसके पास अच्छा खासा मकान है। मैक्कू की बुढ़िया चाची का कुछ समय पूर्व ही निधन हो जाने के बाद मकान का ऊपरी हिस्सा पूरी तरह खाली है। बच्चों के नाम पर मैक्कू की दो लड़कियां हैं, एक चार-पांच साल की, दूसरी कोई बारह-तेरह साल की।

अब आप लोग अन्दाजा लगा सकते हैं कि बारह-तेरह साल की लड़की की ही बात मेरे लिए सबसे बड़ा आकर्षण थी, जिसके लिए मैं तैयार हो गया। मैंने उससे पता लेकर मैक्कू से पत्र-व्यवहार किया। तारीख तय हो जाने के बाद मैं रेम्सडेल के लिए रवाना हो गया।

सफर कोई आरामदेह न था। मगर रास्ते भर बारह-तेरह साल की चंचल लड़की के बारे में सोचते-सोचते मैं अपने दिवास्वप्नों में इस कदर खोया रहा कि रास्ते की असुविधा का तो ध्यान ही न रहा, अलबत्ता सफर कितनी जल्दी कट गया-पता ही न चला। रेम्सडेल स्टेशन आया और मैं उतर पड़ा।

गाड़ी से उतर कर मैं एक ओर खड़ा होकर प्रतीक्षा करने लगा। चूंकि मेरे आने की तिथि की मैक्कू को पहले से सूचना थी अतः मैं इस बात का विश्वास कर सकता था कि मैक्कू या तो स्वयं मुझे लेने आ सकते हैं या किसी को भेज सकते हैं। इन दोनों स्थितियों के सामने न आने पर ही मैं अपने पास मौजूद पते के आधार पर जाना चाहता था। पर, प्रतीक्षा कर लेना भी आवश्यक था।

काफी देर इन्तजार करने के पश्चात् जब सारी सवारियां एक-एक करके बाहर चली गईं और मैं अकेला प्लेटफार्म पर रह गया तो मुझे यह सोचने पर बाध्य होना पड़ा कि मुझे कोई लेने आने वाला नहीं। मैं स्टेशन मास्टर के केबिन में जाकर मैक्कू को फोन करके अपने आने की सूचना देने की सोच ही रहा था तभी मैंने साधारण कपड़े पहने एक औसतन कद के आदमी को हड़बड़ाहट में इधर-उधर नजर दौड़ाते, अपनी ओर लपक कर आते हुए देखा। वह मेरे सामने आकर अपना

चश्मा ठीक करते हुए दयनीय आवाज में बोला–

"क्या न्यूयार्क से आने वाली ट्रेन आ चुकी... ?"

मैंने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। वह इतना हड़बड़ाया हुआ था कि ठीक से बोल भी नहीं सकता था।

"जी हां।" मेरा उत्तर था।

"ओह ! मैं लेट हो गया।" कहता हुआ वह स्टेशन मास्टर के केबिन की ओर लपका।

न जाने क्यों मेरा दिल कह रहा था कि वह मुझे ही तलाश कर रहा है। मैं धीरे-धीरे कदम बढ़ाता स्टेशन मास्टर के केबिन की ओर चल पड़ा।

वहां से हड़बड़ाया हुआ जैसे ही वह बाहर निकला, मैंने उसे रोक दिया–

"आप शायद किसी को तलाश कर रहे हैं ?"

उसने आशापूर्ण नज़रों से मुझे देखते हुए बताया कि न्यूयार्क से आने वाले मेहमान मिस्टर हम्बर्ट को लेने वह आया था, पर स्टेशन पर देर से पहुंचने के कारण वह उन्हें रिसीव न कर सका।

मैंने हंसकर कहा–

"तुम सही समय पर भी आ जाते तो क्या होता, उन्हें कैसे पहचान पाते, जबकि तुम्हें उनके नाम के अलावा उनके बारे में और कोई जानकारी या पहचान नहीं है ...।" फिर मैंने बताया कि मैं ही हम्बर्ट हूं।

वह उत्साहित होकर मेरा हाथ अपने हाथ में ले बैठा। इत्मीनान की सांस लेते हुए जल्दी-जल्दी बताने लगा कि दुर्घटना के कारण वह लेट हो गया था। बिजली का शार्ट सर्किट हो जाने के कारण पिछली रात उसका मकान जल गया था। बीवी बच्चों को रिश्तेदारों के पास भेज कर वह मुझे लेने आया था, इसी चक्कर में उसे देर हो गयी। उसने चौंकाने वाली बात बतायी कि वह मैक्कू है।

मैंने उससे सहानुभूति दिखाई। वह मेरी सुनने के बजाय अपनी कहने के लिए ज्यादह उतावला हो रहा था। वह तेज-तेज आवाज में कहे जा रहा था–

"खैर, आप मेरा मकान जल जाने की चिंता न करें–" मैक्कू ने कहा–"मैंने पड़ोस में रहने वाली एक भद्र महिला को इस बात के लिए राज़ी कर लिया है कि वह आपको कुछेक दिनों के लिए अपने यहां ठहरा ले। वहां शायद थोड़ा सा खर्च ज्यादह हो, पर आप उसकी फिक्र न करें।"

मुझे गुस्सा भी आ रहा था और मैक्कू के साथ हमदर्दी भी हो रही

थी। गुस्सा इस बात पर आ रहा था कि खर्च की फिक्र मैं न करूं तो और किसे करने की आवश्यकता पड़ेगी। और हमदर्दी इस बात पर कि उसका मकान जल गया था, बावजूद इसके वह मुझे लेने आना न भूला था। साथ ही साथ दिल में यह बात भी उठ रही थी कि वहां आने का अब मकसद ही क्या रहा ? बारह-तेरह साल की जिस लड़की के आकर्षण में मैं वहां आया था, उससे तो मुलाकात होने से रही।

कौन इस बात को जानता था कि मैं जो कुछ सोच रहा था उसके विपरीत हालात बनने जा रहे थे। मेरी जिन्दगी में एक तूफान, नया तूफान आने जा रहा था, जो मेरी जिन्दगी की पूरी धारा को बदल देने वाला था।

इतना सफर तय करके आने के बाद उलटे पैरों लौटने का कोई तुक न था। फिर मैक्कू का दिल भी रखना था। वह मेरे लिए कहीं और ठहरने का इन्तजाम जब करके आया था तो उस जगह को चलकर देख लेने में भी मैंने कोई हर्ज न समझी थी।

चूंकि मेरे लिए जगह नितांत नयी थी, अतः इस बात का कुछ भी अन्दाजा न था कि मैक्कू के घर में रहना मेरे लिए सुविधा जनक होता अथवा उस भद्र महिला के यहां पेईंग गेस्ट बनकर रहना, जिससे वह बात करके आया था।

रही बात बारह-तेरह साल की लड़की की, तो इसमें भी कोई जरूरी तो न था कि मैक्कू के यहां रहते हुए वह मेरे निकट आ ही जाती। यह तो महज एक आकर्षण था, जिसमें बंधा मैं चला आया था। यह भी संभव था कि लड़की पर इतनी पाबंदियां होतीं कि वह मेरे आस पास फटक भी न सकती, उस हालत में मुझे सब्र करने के अलावा और कोई चारा न रह जाता।

वह अपने जले मकान की व्यवस्था देखे, इसके लिए उसने मुझे अपने पड़ोसन का पता दे दिया, जिससे वह बात करके आया था। बोला—

"पता है 342, लान्स स्ट्रीट। आप बिल्कुल भी चिंता न करें। मैं लान्स स्ट्रीट में ही रहने वाले अपने एक दोस्त से गाड़ी मांगकर लाया हूं। शोफर आपको लान्स स्ट्रीट पहुंचा देगा।

अन्ततः मैंने मन ही मन फैसला किया कि औपचारिकता के नाते मुझे लान्स स्ट्रीट तक जाना चाहिए, जहां उस भद्र महिला का धन्यवाद अदा कर मुझे न्यूयार्क वापसी के लिए गाड़ी पकड़ लेनी चाहिए।

यही सोचकर मैं मैक्कू के साथ प्लेटफार्म से बाहर आया। एक शानदार गाड़ी हमारे सामने खड़ी हो गयी। शोफर ने सलाम करके

मेरा बैग थामा और चालक सीट सम्भाल ली। गाड़ी में बैठते हुए मैंने विदा देते हुए मैक्कू को हाथ हिलाया।

गाड़ी चल पड़ी।

लान्स स्ट्रीट के मकान नं. 342 के बारे में ड्राइवर ने मुझे कुछ फासले से ही जानकारी दे दी थी। मगर मुझमें उस मकान को लेकर कोई उत्सुकता न थी, क्योंकि मैं इरादा तो बना ही चुका था कि वापस जाना है।

लान्स स्ट्रीट की आबादी बहुत घनी थी। चालक ने गाड़ी मकान के ठीक सामने ले जाकर रोकी। मैंने अनमने मन से मकान पर सरसरी नज़र डाली– मकान पुराना था और मैं मन ही मन सोच रहा था, मकान में नहाने के टब भी होंगे या नहीं। खैर, मुझे क्या। इन बातों को वह ही सोचे जिसे रहना हो।

नीचे उतर कर मैंने ड्राइवर को पांच डालर की टिप दी। धन्यवाद करके उसे जाने के लिए कह दिया। पांच डालर की टिप पाकर ड्राइवर बहुत खुश हो गया था। वह इतनी आसानी से मेरा पीछा कहां छोड़ने वाला था। उसने नीचे उतर कर मेरा बैग अपने हाथ में ले लिया।

मैंने सोचा था कि मकान मालकिन से मिले बगैर ही वापस लौट जाऊंगा, मगर ड्राइवर बता रहा था–गाड़ी पड़ोस की ही है, अतः उसे कहीं जाना नहीं है, वह मकान मालकिन तक मुझे पहुंचा कर चला जाएगा।

अब उसके साथ चलने के अलावा मेरे सामने कोई चारा न रह गया था। मजबूरन मुझे मकान नम्बर 342 के द्वार पर लगी घण्टी दबानी पड़ी।

दरवाज़ा खोलने आने वाली एक नीग्रो नौकरानी थी। मुझे नौकरानी के हवाले करके ड्राइवर चला गया।

नौकरानी ने हड़बड़ाते हुए भाव में मेरा सत्कार करके मुझे हाल में बैठने को कहा, और खुद तेज–तेज कदमों से अन्दर की ओर जाने लगी।

मैंने गहरी सांस लेकर हवा में सूंघने की कोशिश की। रसोईघर में किसी चीज के जलने की गंध वातावरण में तैर गयी थी, नौकरानी के हड़बड़ाहट में अन्दर जाने की शायद यही वजह थी।

नौकरानी के जाते ही मैंने हाल में नज़र दौड़ाई। हाल के दीवारों पर दो–चार चित्र लटके हुए थे। सामने बड़े–बड़े फूलदानों के पास एक पुराना, लेकिन मजबूत सोफा सेट और हाल के सिरे के ऊपर को जाती हुई सीढ़ियों

के नजदीक एक पियानो था।

जेब से रुमाल निकालकर माथे का पसीना पोंछते हुए मैं यह सोच रहा था कि क्या करूं तभी सीढ़ियों की ओर से उभरता एक जनाना, आकर्षक स्वर मेरे कानों से टकराया–

"तो आप आ गये ?"

मैंने ऊपर देखे बिना ही जान लिया था कि यह आवाज मकान मालकिन मिसेज हेज की ही हो सकती थी। वह जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतरती हुई नीचे आयी और पास आकर हाथ बढ़ाते हुए बोली–

"आइए मिस्टर हम्बर्ट, अन्दर आइए..।"

मैंने अपनी मेजबान को एक ही नज़र में समझ लेने की कोशिश की। मिसेज हेज ने गहरे लाल रंग के स्लैक्स और पीले रंग का ब्लाउज पहन रखा था। जब वह मुस्कराती हुई सीढ़ियों से नीचे उतर कर आ रही थी तो उसकी अंगुलियों से लटकी सिगरेट की राख झड़-झड़ कर नीचे गिर रही थी। मिसेज हेज की उम्र तीस के आसपास की थी। वह बातें कम करती थी और मुस्कराती ज्यादह थी।

अन्दरूनी ड्राइंग रूम में ले जाकर मिसेज हेज ने मुझे बैठ जाने को कहा। बातचीत शुरू करने के लिए कोई उपयुक्त विषय न मिलने के कारण मैंने मैक्कू परिवार के साथ हुई दुर्घटना के बारे में बातचीत शुरू की। पर मिसेज हेज की बातों से लगा कि उसे इस दुर्घटना की कोई ज्यादह जानकारी न थी।

अब मैंने तीन-चार बार मिसेज हेज की ओर देखा तो हर बार मैंने यह पाया कि मेरी नज़रें उठी देखकर मुस्कराने की चेष्टा करते हुए बड़ी अस्त-व्यस्त सी लग रही थीं। मैं समझ गया कि वह उन औरतों में से है जो सामाजिक तौर पर ऊपर से तो शिष्टाचार की लीपापोती करना खूब जानती हैं, लेकिन अन्दर से खोखली और सारहीन होती हैं।

जहां मैं बैठा था, वहां से सामने एक और कमरा दिखाई देता था। मैंने चोरी-छिपे कमरे का जायजा लेने के लिए झुकी-झुकी आंखों से दो-तीन बार देखने में पाया कि सामने वाला कमरा भी सजा हुआ था–पर वहां फर्नीचर के नाम पर एक पलंग, दो कुर्सियां और एक बदरंग सी मेज के सिवा कुछ न था। कमरे के फर्श पर पुरानी मैगजीनें बेतरतीब सी बिखरी हुई थीं।

मिसेज हेज से मिलने और हाल के साथ खुलते हुए उस बेतरतीब कमरे के बाद मेरा फैसला पहले से ज्यादह पक्का हो गया कि मुझे किसी

भी शर्त पर ऐसी फूहड़ औरत के यहां रहकर अपनी छुट्टियां बेकार नहीं करनी हैं। मैं दुविधा की स्थिति में था तभी मिसेज हेज ने मेरे सामने प्रस्ताव रखा कि मैं उसके साथ चलकर मकान देख लूं।

शिष्टाचार से बंधा मैं उठ खड़ा हुआ हम दोनों सीढ़ियां चढ़कर पहली मंजिल पर चले आए। सीढ़ियां खत्म होते ही सबसे पहले दो कमरे की ओर इशारा करते हुए मिसेज हेज ने कहा—"यहां मैं और 'लो' रहते हैं।"

यह सोचकर कि 'लो' नौकरानी का नाम होगा, मैंने उन दोनों कमरों की ओर ज्यादह ध्यान न दिया। 'लो' के कमरे के सामने से गुज़रते समय मेरी नज़र सरसरी तौर से अन्दर कमरे में बिखरी पड़ी चीजों की ओर उठ गयी थीं। कमरे की सारी चीजें उलट-पुलट थीं, जिससे पूरे फूहड़पन का पता चलता था। इसके बाद तो मेरा मन वहां से और भी जल्दी भाग खड़े होने के लिए छटपटा उठा।

यह छटपटाहट उस समय मेरे चेहरे पर झलक आने से न रुक सकी, जब मिसेज हेज ने कहा—"माफ करना, घर ज्यादह साफ नहीं है—आइए, नीचे बाग में चलते हैं।"

मैं अनजानेपन से उसके पीछे-पीछे हाल पार करता हुआ बाग की ओर बढ़ने लगा। हम लोग नीचे रसोई के करीब पहुंचे ही थे कि उसकी नौकरानी ने धीमें शब्दों में उससे कुछ कहा। शायद वह जाने की इजाजत चाह रही थी। प्रत्युत्तर में मिसेज हेज ने कहा—

"अच्छी बात है, कल ठीक समय पर आ जाना।"

कहकर मिसेज हेज मेरा मार्गदर्शन करती हुई डाइनिंग रूम में ले आई।

डाइनिंग रूम में मिसेज हेज को एक सफेद जुराब फर्श पर पड़ी नज़र आयी। उन्होंने माथे पर बल डालकर जुराब उठाई और एक कोने में फेंक दी। घर के अस्त-व्यस्त हालात पर उन्हें सचमुच गुस्सा आने लगा था।

मैं डाइनिंग रूम से निकल कर इस बात को पूरी गम्भीरता से सोच रहा था कि कब मौका मिले और मैं रेलवे टाइम टेबल निकालकर न्यूयार्क के लिए वापसी की ट्रेन का समय देखूं, और अपना सामान उठाकर रेलवे स्टेशन पर पहुंच जाऊं, उसी समय मिसेज हेज ने अपनी अंगुलियों में लटकती सिगरेट वाली अंगुलियां उठाकर कहा—"यह हमारा बाग है।"

मैंने सामने देखा और जो कुछ देखा-दिल धक् से रह गया—सामने तेरह-चौदह साल की एक लड़की जांघिया पहने, छातियों पर बड़े-बड़े फूलों वाला रूमाल सा बांधे, घुटनों पर उठी हुई, काले चश्मे के पीछे से हमारी ओर झांक रही थी।

मुझे विश्वास न हुआ। लगा, मैं अचानक उछल कर चौबीस साल पहले फेंक दिया गया हूं। उसका वही दुबला-पतला शरीर था; वही छोटे-छोटे भूरे बालों वाले सिर के पीछे टिकी हुई एक नाजुक दूधिया बांह और वही अधपकी नारंगियों जैसे, रूमाल के पीछे साफ उठे हुए, छोटे-छोटे लेकिन कठोर...कुछ...मुझे लगा किसी जादू में बंधा हुआ उसी वक्त सामने चला जाऊं और अपने होंठों से उन पिण्डलियों को सहलाता हुआ फिर उन्हीं चिकनी ढलानों में खो जाने के लिए उतावला होकर रपटने लगूं, जिससे एक लम्बे समय से अनायास ही वंचित कर दिया गया था।

तभी मिसेज हेज बोलीं-

"ओह ! आप शायद इस नटखट लड़की के बारे में सोच रहे हैं-यह 'लो' है, यह मेरा बाग है। इस गुलाब की क्यारियों के बारे में क्या ख्याल है ? यह पौधा फ्रांस से मंगवाकर लगाया गया है।"

"सुन्दर...बहुत सुन्दर...।" मेरे मुंह से अनायास ही निकल गया। मैं कहना चाहता था, इससे बढ़कर सुन्दरता मेरे लिए दुनिया में और क्या होगी, मगर कह न सका-अलबत्ता दिल में अवश्य सोचा। आप अवश्य जान चुके होंगे कि दुनिया उस असीम सुन्दरता के बारे में मेरी प्रशंसा किसके लिए थी ? मेरे मुंह से आह निकलना चाहती थी, मगर मिसेज हेज की मौजूदगी में निकल न सकी।

कुछ पल बाद मैं एक ठण्डी सांस निकाले बगैर न रह सका। मेरी डायरी लिखने की आदत थी। उस दिन मैंने डायरी में उसी सुन्दरता को लेकर अपनी समस्त भावुकता किन-किन शब्दों में उड़ेल दी थी, आज उन शब्दों को ढूंढता हूं तो मिल नहीं पाते। वह डायरी मुझसे खो गयी है।

आंखें बन्द करता हूं तो डायरी के अक्षर धुंधले-धुंधले मस्तिष्क में अंकित होते चले जाते हैं और वही प्यारी तस्वीर आंखों में बस जाती है जो मैंने 'लो' को प्रथम बार देखने के बाद अपने मन-मस्तिष्क में उतारी थी।

30 मई, 1947 का दिन था, जब रेम्सडेल के स्कूल यकायक बन्द कर दिये गये थे। शहर के पास कहीं महामारी फैलने की खबर मिली थी। आपको अब यह बताने की आवश्यकता नहीं कि 'लो' को एक नज़र देखने के बाद मैंने वहां से जाने का इरादा त्याग दिया। वहां से ही क्यों, अगर वह नर्क में भी होती तो भी मैं 'लो' यानी लोलिता की मौजूगी में उस जगह से बाहर निकलने से मना कर देता।

हां, तो मैं कह रहा था स्कूल बन्द कर दिये गये थे। स्कूल बन्द होने

का मतलब था, लोलिता का सारा दिन खाली रहकर घर पर रहना, इधर-उधर की शरारतें करना और चौकड़ियां भरना। और इस सुअवसर का लाभ मुझे पूरा-पूरा मिला। लोलिता से मेरा औपचारिक परिचय हो गया।

मैं उसी वर्ष के जून महीने के जिन दिनों का विवरण दे रहा हूं, उनकी यादें मेरे दिलो-दिमाग पर चमकीले तारों पर गुंथे रंग-बिरंगे रूमाल की तरह जगमग फैली हुई है। हो सकता है कि कोई दिन आगे-पीछे हो जाए, मगर जहां तक घटनाक्रम की बात है, वह मुझे स्पष्ट रूप से याद है, कहीं कोई गलती होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

वृहस्पतिवार-आज सारा दिन गर्मी रही। सुबह से मैं अपनी खिड़की के पास बैठा-बैठा सामने बाग की तरफ देख ही रहा था कि लोलिता ड्राइंग रूम से निकली। उसने नीली जीन और धारीदार कमीज पहनी हुई थी। उसे यकायक अपने सामने पाकर मेरा सारा शरीर एक सनसनीपूर्ण उत्तेजना से भर गया। वह धीरे-धीरे चलती हुई बाग के चक्कर काटने लगी। मैंने झट किताब बन्द की और नीचे चला आया। हाल में कोई न था। मैं जल्दी-जल्दी पांव बढ़ाकर डाइनिंग रूम से होता हुआ बाग की ओर चला आया और बरामदे की सीढ़ियों पर बैठ गया।

लोलिता मुझसे पहले ही आकर सबसे नीचे की सीढ़ी पर बैठ चुकी थी। कुछ देर तक हम यूं ही बैठे रहे। उसने अनमने भाव से मुझे देखा मेरे सारे शरीर में करंट दौड़ गया। उसे कुछ फासले पर मौजूद पाकर मेरे सारे शरीर में उत्तेजना भरती जा रही थी।

लोलिता छोटे-छोटे कंकड़ों को अपने पांव के पास से उठाकर सामने फेंकने लगी। सामने एक खाली कनस्तर पड़ा हुआ था। उसके फेंके कंकड़ कनस्तर से जाकर टकराते। वह कनस्तर पर निशाना न लगा रही थी, बल्कि यूं ही फेंके हुए कंकड़ों में से कोई जाकर टकरा जाता था-कनस्तर से 'टन' की आवाज़ होती थी-और मुझे ऐसा लगता था, फेंका हुआ वह कंकड़ मेरे सीने से आ लगा है-टन की आवाज़ उभरी हो। इसके साथ ही मेरे हृदय के सारे तार झनझना उठते। मैं उसकी ओर अधिक ध्यान से देखने लगता।

उसका गोल शरीर धूप में और भी निखर आया था। उसके इस रूप को देखकर मैं अपने असंभव होते जा रहे मनोभावों को काबू करने का प्रयत्न कर रहा था।

थोड़ी देर तक इसी तरह कंकड़ों का खेल खेलने के बाद लोलिता उठ खड़ी हुई। शायद धूप में पसीना आने से उसका मन नहाने को कर

आया था। मैं उसे जाता हुआ देखता रहा—उस समय मेरी भावनाएं जिस तरह मचल रही थीं उसे बस मेरा दिल ही जानता है। मैं चाहता था, लोलिता मेरे करीब आये, बैठे, बातें करे, मैं हाथ बढ़ाकर उसे छुऊं और अपने रोम-रोम में वही ताज़गी भर लूं, जैसे अन्ना के करीब रहकर भरा करता था, मगर अभी यह अवसर न आया था। अभी तो बस उसे कुछ फासले से ही देखते रहने का आनन्द मैं उठा रहा था।

शुक्रवार—आज लोलिता की कोई सहेली आ गई थी—सांवली सी वह लड़की थी, लोलिता की ही हम उम्र। उसका नाम रोज़ था। उसके साथ लोलिता कहीं खेलने चली गयी थी—और उस दिन की हसरतें मेरी अधूरी-प्यासी रह गयी थीं।

मैं जब भी लोलिता को देखता हूं, एक अजीब किस्म की सनसनाहट से भर जाता हूं। वह अभी बच्ची है, मगर उसका वही बचपना ही तो मुझे सबसे अधिक उत्तेजित करता है। आप मुझे पागल समझ रहे होंगे, सचमुच मैं इस मामले में पागल ही हूं। मुझे तो उसकी हर अदा भा गयी थी। वह सामने हो और उसे देखता रहूं—हर समय इसी बात की इच्छा होती थी। जब वह मेरी निगाहों से ओझल होती, दुनिया वीरान और अंधेरे में डूबी नज़र आती। जब वह सामने पड़ जाती, पूरी दुनिया में बहार आ जाती, दिन का उजाला सा खिल जाता। उसकी हर आहट, हर चाप पर मेरे कान लगे रहा करते थे। उसकी अटपटी-चटपटी बातें मेरे पागलपन को और भी दहका देती थीं।

शनिवार—आज लोलिता बरामदे में लेटी हुई सूर्य स्नान कर रही थी। बार-बार उसकी ऊपर को उठती गोरी-गोरी चिकनी पिण्डलियां और गोल घुटने धूप में साफ चमक रहे थे। पास ही उसकी मां आकर बैठ गयी। उसके आकर बैठने से 'लो' के शरीर का ऊपरी हिस्सा बिल्कुल ढक गया था। मैं देर तक इन्तजार कर रहा था कि उसकी मां उठकर वहां से जाए ताकि मैं उस जलपरी के रूप-सौन्दर्य का भरपूर निरीक्षण कर सकूं। मगर वह तो वहीं जम कर बैठ गयी थी। मेरे दिल में ख्याल आया कि मैं कोई पुस्तक उठाकर पढ़ता हुआ उन दोनों के बीच जा बैठूं—और जी भर का लोलिता के रूप-सौन्दर्य को नज़रों से चुरा सकूं। मगर फिर सोचा कि ऐसा करने से ख्वामखाह उसकी मां को शक हो सकता है। अब तो जो कुछ मेरे सामने था, उसे ही देखते हुए तसल्ली करनी पड़ रही थी। खिड़की से ही लोलिता की बार-बार ऊपर-नीचे हिलती हुई टांगों को देखकर यह अंदाज लगा रहा था कि इन टांगों के

ऊपर बनी हुई जांघें, कमर, नितम्ब और उससे आगे का शरीर कैसा आकर्षक-उत्तेजक होगा।

इतवार–आज गर्मी कुछ तेज हो गई है। आज मैं लोलिता और उसकी मां के आने से पहले ही बरामदे में आकर बैठ गया था। उस समय मेरे हाथ में ताजा अखबार और होंठों में पाइप दबा हुआ था। मैं कुर्सी में अभी अच्छी तरह से बैठने भी न पाया था कि लोलिता आ गई। उसके पैरों की हल्की चाप से ही मैंने जान लिया कि वह लोलिता ही है। मैं सांस रोककर इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि वह तेज-तेज कदमों से मेरे पास से गुजरेगी और मैं उसके शरीर की गन्ध महसूस कर सकूंगा। मैं दृष्टि उठाकर उसके सम्पूर्ण शरीर को नहीं तो कम से कम पिछले हिस्से को देखने का सुख तो भली प्रकार उठा सकूंगा। यही सोचकर मैं अखबार में खोये रहने का नाटक करता रहा।

इससे पहले कि लोलिता के अपने करीब से गुज़रने की आहट मैं पाता, मैंने लोलिता के पीछे दो भारी कदमों की आहट आकर रुकती सुनी। बगैर दृष्टि उठाए ही मैं जान गया कि उसके साथ उसकी मां आकर रुकी है। अब मैंने नज़रें उठाकर देखने में कोई आपत्तिजनक बात न समझी। अखबार एक ओर करते हुए मैंने उन दोनों की ओर नज़रें डालीं और उनकी उपस्थिति का स्वागत, हल्की मुस्कान के साथ किया।

मिसेज हेज की ओर से मेरी मुस्कान की कोई प्रतिक्रिया होती, इससे पहले ही तेज-तेज कदमों से लोलिता झपटकर मेरे करीब आयी। मैं सन्नाटे में जैसे आ गया। अपनी मां की उपस्थिति में वह मेरे करीब आ जाएगी, शायद इस बात की मुझे कल्पना न थी। उसने मेरे सामने आकर पूछा–

"क्या आपके पास कामिक्स भी हैं ?"

पूछते-पूछते वह मेरी क़ुर्सी के हत्थे पर झुक आयी और उसके भूरे बालों की गर्म खुशबू मेरे नथुनों में भर गयी। मेरे रोंगटे खड़े हो गये। मैंने अपनी एक जांघ को दूसरी जांघ पर रखकर अखबार को अच्छी तरह गोद में फैलाते हुए पीछे देखा।

मिसेज हेज बैठ चुकी थीं। वह किसी फैशन मैगजीन के पृष्ठ पलट रही थी। उस समय दोनों ने बेदिंग सूट पहन रखा था। दोनों ही बला की हसीन नज़र आ रही थीं। मैंने अपने विचारों को व्यवस्थित करके सोचा–मां की उपस्थिति में ही उसका मेरे समीप आने की शुरूआत करना अक्लमंदी थी। यदि वह अकेले में पहली बार मेरे करीब आती, और उसकी मां को पता चल जाता तो शायद आपत्ति होती। अब आपत्ति जैसे कोई बात न थी।

मैं यह सोच रहा था कि अपने प्रश्न का उत्तर न पाकर लोलिता अपना सवाल पुनः दोहरायेगी। लेकिन मेरे जवाब न देने का अर्थ शायद उसने यही लगाया था कि मैं अखबार पढ़ने में व्यस्त हूं, अतः जिस तेजी से वह आयी थी, उसी तेजी से वापस लौट गई।

मैं उसे जाता देखता रहा। वह अपनी मां के पास पहुंच कर औंधी लेट गई तो मुझे ख्याल आया कि मैंने उसके प्रश्न का उत्तर न देकर कितनी बड़ी गलती की थी। दरअसल अगर कहा जाता कि उसके अकस्मात् अपने करीब आ जाने, और उसके पूछने की बात पर मैं कुछ हद तक नर्वस हो गया था, नर्वस हो जाने की वजह से ही जवाब तलाशने में मुझे देर हुई थी तो कुछ गलत न होगा।

मगर अब अफसोस हो रहा था–उसने पहली बार हिम्मत करके मुझसे बात करने की पहल की थी, और मैं वह अवसर चूक गया था।

अपनी मां के पास औंधे पड़कर टांगें हवा में उठाकर हिलाने का वह कार्य करती रही। उसकी इस अदा को मैं रह-रहकर प्यार भरी नज़रों से देख रहा था। उसकी गोरी पिण्डलियों, उसके नितम्ब और जांघों की मांसलता का मुझे पूर्ण अनुमान हो रहा था। वह देर तक ऊल-जुलूल हरकतें करती रही, उसकी इस समय की उन हरकतों का कोई अर्थ न लिया जा सकता था। कुछ देर तक इसी हालत में पड़े रहकर वह बोर हो गई तो झपाके के साथ उठी। अन्दर गई और कुछ पत्रिकाएं उठा लायी।

मैं उस दिन सारा दिल लोलिता को देखता हुआ गुज़ार देना चाहता था, मगर अब इसे क्या कहा जाए कि मिसेज हेज उसका पीछा तो छोड़ ही न रही थीं, साथ ही मेरा पीछा थामने के लिए मेरे पास आ गयीं। कहा कि उन्हें सिगरेट जलानी है और माचिस वह अपने कमरे में भूल आई थीं। मजबूरन माचिस देनी पड़ी, सिगरेट सुलगाकर वह वहीं बैठ गयीं। अब जो लोलिता को देखने का उन्मुक्त आनन्द था, वह कहां रहा। अब तो नज़रें बचाकर उसे देखना पड़ा रहा था। मिसेज हेज ऐसी बैठीं कि जाने का नाम ही न ले रही थीं। उन्हें इस बात की जानकारी हो गई थी कि मैं साहित्यिक अभिरूचि का आदमी हूं; अतः उपन्यास जगत की बातें छेड़ दीं। वह उपन्यास के पात्रों की बातें करने लगीं। न चाहते हुए भी मुझे उनकी बातों का जवाब देना पड़ रहा था। मैनें पिछले दस वर्षों में प्रकाशित प्रमुख उपन्यासों के पात्रों के बारे में यूं बताना आरम्भ किया जैसे मुंह जुबानी याद हों, तो वह और भी प्रभावित होकर मुझमें दिलचस्पी लेने लगीं। एक प्रकार से वह मेरे उपन्यास जानकारी की

प्रशंसक बन गईं। उन्हें मेरे पास से न टलना था न टलीं।

सोमवार– पिछले दिन मिसेज हेज मुझसे इस तरह प्रभावित हो गयी थीं कि बातों ही बातों में अगले दिन दोपहर को ग्लास लेक पर मेरे साथ जाने का प्रोग्राम बना डाला था। वहीं पर डिनर लेने की भी बात तय हुई थी। मैंने इस बारे में सहमति इसलिए दे दी थी क्योंकि मिसेज हेज के मेरे साथ जाने का अर्थ था लोलिता भी साथ जाती–और इस बहाने खास मनोरंजन हो जाता। उसके निकट होने का मुझे अच्छा अवसर मिल रहा था। मगर बुरा हो मौसम का, आज सुबह से ही आसमान बादलों से ढंक गया। दोपहर होते–होते बारिश होने लगी। प्रोग्राम कैंसिल कर देना पड़ा। मेरी भावनाओं से बेखबर लोलिता अपने कमरे में पड़ी रही। एक दो बार उसकी झलक दिखाई दी तो मैं उसे करीब से देखने के लिए ज्यादह आतुर हो गया। इस बीच मैंने सोचा कि उसके बारे में इतना अधिक सोचकर कहीं मैं भयंकर अपराध तो नहीं कर रहा हूं। अन्य सारी बातों को भुला कर कहा जाए तो दीन–दुनिया को विस्मृत कर सिर्फ उसके बारे में ही सोचते रहना, कहां की अक्लमदी थी ? पर अब मन ही तो था–लगा रहा था, यही लोलिता थी, जिसके लिए मैं इतने वर्षों प्रतीक्षा करता रहा।

वेश्याओं और लायब्रेरियों के बीच हिचकोले खाती हुई मेरी देह ईश्वर ने इसलिए नष्ट नहीं होने दी थी ताकि मैं छुट्टियां काटने के लिए रेम्सडेल में आकर इस लड़की से मिलूं।

शीशा देखता हूं तो ख्याल आता है कि मुझमें वह सभी गुण हैं जिन पर लोलिता की उम्र की लड़कियां मर मिटती हैं। कल लोलिता की मां ने मजाक ही मजाक में एक ऐक्टर का जिक्र किया था, जिसकी लोलिता प्रशंसक थी। मैं मिसेज हेज से मांगी हुई पत्रिकाओं में से उस ऐक्टर की फोटो तलाशता रहा था, और अंत में उसका एक क्लोजअप मिल ही गया था। उसे लेकर और खुद को आईने के सामने बिठाकर मैं देर तक अपने और उसके बीच तुलना करता रहा था। यकीन मानिये, मैं उससे अधिक गठीला हूं, मेरी आवाज में अधिक गूंज है। सच तो यह है कि मैं उस ऐक्टर से कई गुना ज्यादह सुन्दर हूं।

मंगलवार– आज सारे दिन बारिश होती रही। मिसेज हेज को कुछ आवश्यक खरीदारी करनी थी, इसलिए वह अकेले बाजार चली गईं। मुझे हेज के जाने की जानकारी तब मिली जब घरेलू नौकरानी चाय के जूठे बर्तन उठाने अन्दर आयी। बातों ही बातों में उससे मिसेज हेज के बाजार जाने की जानकारी मिली। नौकरानी से यह जानते ही कि मिसेज हेज बाजार

गई हैं और लोलिता घर में अकेली है, मेरे दिल की धड़कन इतनी तेज हो गयीं जैसे लगा मैं हवा में उड़ने को उतावला हो गया हूं। मैं उतावले पन में अपना स्थान छोड़ बैठा था, मानो भागकर सेकण्डों में लोलिता के पास पहुंच जाऊंगा। मगर मुझे यह भी ध्यान आया कि मैं क्या मूर्खता कर रहा हूं। नौकरानी ने मेरे हाव-भाव से अन्दाज़ लगा लिया तब क्या होगा ? मैं अपने उतावलेपन पर काबू पाने के लिए खिड़की से बाहर झांकने लगा।

उसके कमरे से बाहर जाने के बाद ही मैं कमरे से निकल सका, एक दो-बार बाथरूम जाने के बहाने मैं लोलिता के कमरे के आगे से गुजरा। हालांकि मैं उतावला था, मगर इस बात का भी ध्यान था कि लोलिता मुझसे ज़रा भी बेतकल्लुफ नहीं, मुझे कोई हक नहीं है कि उसके सामने एकदम से पहुंच जाऊं। हालांकि उसकी मां की अनुपस्थिति मेरे लिए स्वर्णिम अवसर था, जिसकी काफी दिनों प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, मगर लोलिता का किस तरह सामना करूंगा, यह बात समझ में न आ रही थी। मैंने उसके कमरे के आगे चक्कर काटे, मगर निराशा हुई यह जानकर कि वह अपने कमरे में न थी।

आहट पाने के लिए मैं मिसेज हेज के कमरे के सामने से गुज़रा तो वहां आहट मिल गयी। कमरे में कुछ उथल-पुथल की आहट थी, इसका अर्थ था लोलिता वहां थी और कुछ तलाश रही थी। "अच्छा तो आप यहां विराजमान हैं।" मैंने इत्मीनान की सांस लेते हुए मन ही मन कहा। इधर- उधर चहलकदमी करके मैं उसके बाहर आने की प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब वह न आयी तो मैंने सोचा-अन्दर झांक लेने में हर्ज क्या है ? अब तो नौकरानी भी जा चुकी है और मिसेज हेज बाजार से इतनी जल्दी लौटकर आने वाली नहीं हैं। यही सोचकर मैं कमरे के द्वार के सामने जाकर खड़ा हो गया।

लोलिता पलंग पर कुछ अनमनी सी बैठी थी। उसका बड़े-बड़े फूलों वाले फ्राक का एक हिस्सा उठा हुआ था, उसके हाथ में सेब पकड़ा हुआ था, वह उसे अपने चेहरे के पास किये हुए थी, यही वजह थी कि वह मुझे न देख पायी थी, मगर मैं उसे देख रहा था। वह कुछ बेचैन और परेशान थी...। और फिर कसमसाते हुए उसकी दृष्टि उठी तो उसने मुझे देख लिया। उसकी एक आंख बन्द थी; एक आंख से ही उसने मुझे देखा था। मैं सांस रोक कर अपने प्रति उसकी प्रतिक्रिया जानना चाहता था। मैंने सोचा था, सामने द्वार पर खड़ा पाकर वह हिचकिचा जाएगी, तब मुझे कुछ न कुछ कहने का बहाना करना पड़ेगा।

अपनी वहीं मौजूदगी का कुछ न कुछ बहाना तो करना ही चाहिए

था मुझे। अगर वह हिचकिचाने के बजाय, एक आंख बन्द किये दूसरी आंख से मुझे देखती हुई बोली–

"आंख में कुछ पड़ गया है, निकल नहीं रहा है....।"

उसके स्वर से ही आभास मिल गया था कि उसे मेरी सहायता की चाह है। इससे उचित अवसर और क्या मिलता। मैंने झट अन्दर कमरे में कदम बढ़ा देते हुए कहा– "कहां.....कैसे.... ?"

मैं उसके करीब पहुंच गया।

"पता नहीं कैसे.....पर कुछ किरकिरा रहा है....।" वह उसी प्रकार अपनी एक आंख बन्द किये-किये बोली।

मैंने उसका चेहरा अपने हाथों में ले लिया। मादक खुशबुओं का एक आनन्दमय झोंका मेरे रोम-रोम में समा गया। इस अवसर को पाने के लिए मैंने न जाने कितने घण्टे सोच-विचार और कल्पनाओं में खराब किये थे। उसका सर मेरे सीने से आ लगा। मैंने उसे और करीब करते हुए आंख में पड़ी चीज देखने के लिए उसके चेहरे पर झुक आया। उस किशोरी की देह की सुगन्ध मैं महसूस करने लगा। उसकी बन्द आंख की पलकें खोलकर मैंने फूंक मारी तो उसने अचकचा कर खुद को छुड़ा लेते हुए कहा–"इससे क्या होगा..... ?"

"मैं समझा नहीं।"

"फूंक मारने से आंख में पड़ी चीज क्या निकल जाएगी ?"

उसने इस ढंग से प्रश्न किया था जैसे मैं उस मामले में पूरी तरह गंवार हूं।

उसकी निकटता के अवसर को मैं खोना न चाहता था, अतः मैंने बगैर सोचे समझे कह दिया–

"तुम रुको तो, फूंक मारना तो एक युक्ति थी; जिसके बाद मैं जिह्वा की नोक से आंख में पड़ी चीज निकालता।"

आंख की किरकिरी की वजह से वह काफी बेचैन थी, अतः वह पुनः झट से मेरे सीने से अपने सर को टिका बैठी। उसकी ठुड्डी पर हाथ रखकर, अंगुलियों का स्पर्श कपोलों पर करते हुए, मैंने अंगुलियां आगे बढ़ायीं और पलकें खोलकर जिह्वा की नोक को उसकी पलकों के अन्दर फिराने लगा।

मुझे यकीन था कि वह मेरी इस हरकत के लिए 'न' कर देगी। लेकिन उसने तो मेरे इस कार्य में मुझे खुद सहयोग दिया था।

पुतली को जीभ की नोक से दो चार बार मैंने साफ किया ही था वह पीछे हट गई और पलकें मिचमिचाती हुई बोली–

"गुड....वेरी गुड...., सब ठीक हो गया।"

"और दूसरी आंख..." मैंने उत्साहित स्वर में कहा।

वह हंस पड़ी।

उसकी हंसी पर मेरी हिम्मत बढ़ गयी। मैंने उसके कन्धों पर दोनों हाथ रख पीछे को दबाव डालते हुए, पीछे मुड़कर दरवाजे के बाहर भी झांक लिया था।

सारा घर सूना पड़ा था।

दबाव डालने के मेरे अन्दाज़ को वह भी समझ गयी थी। बोली—"हटो, शरारत मत करो.....।"

उसका सर अपने सीने से टिकाते हुए मैंने कहा—

"इसमें शरारत की बात क्या..दूसरी आंख की सफाई भी जरूरी है।"

"मेरी दूसरी आंख में कुछ भी नहीं है।"

"है, तुम्हें मालूम नहीं...।" कहते हुए मैं उसके हाथों पर हाथ कस नीचे झुक आया।

मेरी इस तरह की छेड़ लोलिता को द्रवित कर गई थी—उसने अपनी आंख मेरे होंठों के बीच रख दी।

उसकी इतनी अधिक निकटता से मेरे होंठ सूख चले थे, दिल की धड़कनें बढ़ी हुई थीं। मैंने होंठों से पलकों को चूम-चूम लिया। अब तो मेरी शरारत वह पूरी तरह समझ ही गयी थी, तभी तो झटके से खुद को छुड़ा, खिल-खिलाकर एक ओर हट गयी।

उसने हाथ-पांव पीछे चलाते हुए हटने का कार्य किया था, अतः झटके की आवाज हुई।

मैंने चौंककर देखा, लोलिता के पांव से टकराकर शीशे का गिलास फर्श पर गिरकर टूट चुका था।

वह किसी चंचल हिरनी सी उठकर भागी। मेरी पकड़ से दूर हो गयी। भागते समय उसने जिस अन्दाज़ से मुझे मुड़-मुड़कर देखा था, उसमें लगा था वह मुझे अंगूठा दिखा रही है—कह रही है—मुझे पकड़ो तो जानूं।

हालांकि तबियत तो चाही उसके पीछे भागते हुए बरसों पीछे लौट जाऊं—मगर देखते ही देखते वह दूर हो चुकी थी। उसके पीछे दौड़ने का अवसर मैं चूक गया था—तुरन्त पीछे न लगने के बाद पीछा करना मूर्खता ही होती।

मैं अपने कमरे में वापस आ गया। मेरा सारा शरीर मानो किसी सुगन्ध से ओत-प्रोत हो गया था। मेरा तनाव मुझे कुरेदने लगा कि पुनः एक बार लोलिता के पास पहुंचकर उसे बांहों में ले लूं। मैं आंखें बन्द

कर लोलिता का चित्र कल्पना में बनाने लगा। कल्पना में उसे बांहों में लेकर उन सभी स्थितियों से गुज़रने लगा, जिसकी चाह करता था।

पहली बार जाना कि मैं लोलिता के लिए इस कदर पागल हो गया हूं आंखें बन्द करके सोचने पर एक चित्र दूसरे को काटने लगते हैं—मैं कल्पना में देखता हूं—जूते का फीता बांधने के लिए किसी ऊंची जगह पर पांव रखकर फ्राक से जांघों को ढंकने और फीता बांधने की कोशिश करती हुई लोलिता—जमीन पर गिरी हुई किसी चीज को उठाने के लिए एक टांग को थोड़ा सा मोड़कर, नीचे जांघिया पहने झुकी हुई लोलिता ...जमीन पर औंधी लेटी, एड़ियों को खुजाने की कोशिश में बनियान के अन्दर से छोटे-छोटे यौवन उभारों की गोलाइयों का निचला हिस्सा झलकाती हुई लोलिता.....लोलिता.....लोलिता.....।

सोचता हूं, मैं लेखक न होकर कोई लेखिका होता। ऊल-जुलूल कहानियां लिखता होता तब मिसेज हेज को इस बात के लिए राज़ी कर लेने में मुझे कोई देर न लगती कि मुझे एक कम उम्र युवती के पात्र को निकट से समझने के लिए लोलिता के निर्वस्त्र शरीर को देखने की इच्छा है, मिसेज हेज इसके लिए तैयार हो जातीं—और मैं जी भर कर लोलिता के निर्वस्त्र शरीर को देख सकता.....मेरी प्यास बुझ जाती।

लेकिन मैं औरत कहां हूं.....इस तरह की मधुर कल्पना भी बेकार है। अब तो मुझे जो कुछ भी करना है, अपने प्रयास से करना है।

मैंने फैशन मैगजीन उठा ली। उसके पृष्ठ पलटते हुए मैं युवतियों के उन चित्रों को देखने लगा जिनमें अलग-अलग फैशन पोशाकों के लिए युवतियों के अलग-अलग अंगों के उभारों के उत्तेजक ढंग से दिखाने की चेष्टा की गयी थी। मैं उन अंगों की उत्तेजना में लोलिता की अनुकृतियां तलाशने लगा .....मगर लोलिता मुझे उन सबसे कहीं सुन्दर नज़र आयी।

बुधवार—लोलिता मेरे कमरे में बेझिझक आ गयी। अब वह मेरे आस-पास मंडराने को खुद ही व्याकुल नज़र आ रही थी। उसने आते ही मेरे सामने सुझाव रखा—

"देखो, कल किसी तरह मां को ग्लास लेक पर चलने को राजी कर लो.....।"

मैं कुछ सोच पाता, इससे पहले ही वह जिस तेजी से मेरे सामने आई थी, उतनी ही तेजी से वापस चली गयी—रह गयी उसके शब्दों की कानों में गूंज-देखो, कल किसी तरह मां को ग्लास लेक पर चलने को राजी कर लो .....।

पूरे अधिकार सहित कथन। इस कथन में मेरी उम्र का बड़ापन उसने पूरी तरह विस्मृत कर रखा था। बातचीत और व्यवहार में वह मुझे अपनी हमउम्र या सखा के रूप में सम्बोधित करती थी।

कुछ देर बाद फिर आमना-सामना हुआ। वह अपने कमरे से उतर कर बाग की ओर बढ़ रही थी, तभी पोर्च में हम दोनों का आमना-सामना हो गया था—"क्या सोचा .....?" उसने प्रश्न किया था। ये शब्द उसने बहुत धीमें से कहे थे।

"मैं पूरा प्रयास करूंगा.....।" मैंने कहा था।

बोलते समय वह मेरी ओर झुक आयी थी। मैं चारों ओर बिछे गुमनाम सन्नाटे के पीछे बढ़ती ट्रेफिक की आवाज़ों से शहर में हुई घटनाओं का अन्दाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था। तभी गली में से किसी बच्चे की आवाज गूंजी थी—

"नैन्सी.....नैन्सी।"

और लोलिता तेजी से अन्दर चली गई थी।

मां को ग्लास लेक ले चलने की बात कहना लोलिता के लिए जितना आसान था, मिसेज हेज के सामने उस प्रस्ताव को रख पाना मेरे लिए उतना ही कठिन था। मुझे ऐसा कोई मौका ही न मिल सका था कि मैं मिसेज हेज से वह बात कह पाता। मिसेज हेज का मैं पेइंग गेस्ट था, कोई उसका पति तो नहीं कि जब मर्जी होती, पत्नी से कोई बात कह देता। बुधवार और वृहस्पतिवार शाम तक का समय गुज़र गया, मिसेज हेज से बात करने का अवसर मुझे न मिल सका।

वृहस्पतिवार—हम तीनों को रात के समय छज्जे पर बैठने का अवसर मिला। हम देर तक बैठे रहे। शाम का हल्का धुंधलका अंधेरा धीरे-धीरे ढलने लगा था। मिसेज हेज ने एक फिल्म की प्लाट के बारे में बातचीत शुरू की। इस फिल्म को मां-बेटी दोनों ने देख रखी थी— अतः दोनों ही उसके बारे में बातें करते हुए दिलचस्पी ले रही थीं। हम निकट ही बैठे हुए थे—अंधेरे को तेजी से स्याही में बदलने की मैं कामना कर रहा था ताकि अंधेरे का लाभ उठाकर मैं लोलिता को छूने का मौका पा सकूं।

हम बातों में लगे रहे—मिसेज हेज अपनी कहानी समाप्त कर चुकी थीं। मैंने दिमाग पर जोर डाला और कैनेडा प्रवास के दौरान एक भालू के शिकार की कहानी सुनाने लगा। मां-बेटी दोनों को मेरी शिकार कथा में दिलचस्पी थी, वे कहानी में खो गयी थीं.....और, मैं कहानी सुनाते हुए, कभी पैर फैलाने के बहाने तो कभी हाथ को आगे बढ़ाने के बहाने

लोलिता को हाथ-पैरों से छू लेता। मिसेज हेज की निगाहें, मेरे चेहरे पर टिकी हुई थीं—वे पूरी तल्लीनता से मेरी कथा सुन रही थीं। मेरे छूने की युक्ति लोलिता को भी पसन्द आ रही थी।

वह जिज्ञासा में भरी होने के बहाने के साथ अपने स्थान से काफी आगे मेरी ओर बढ़ आयी थी। कुछ इतना अवसर उसने मुझे दे दिया था कि मैं अपना हाथ पिण्डलियों पर रख सकता।

कोई देखता तो समझती, आसन बदलते समय अनजाने में ही हाथ वहां जा पड़ा होगा, जबकि मैं उसकी पिण्डलियों की चिकनाई का भरपूर आनन्द उठा रहा था। लोलिता जिस तरह लेटी हुई थी उससे कहा जा सकता, उसे मेरी इस तरह की हरकत अच्छी लग रही है।

कहानी खत्म होने के बाद भी मेरे हाथ की अंगुलियां धीरे-धीरे हरकत कर रही थीं—लोलिता के पिण्डलियों के मुलायम-मुलायम रोएं बड़े दिलकश लग रहे थे। मेरी अंगुलियों की हरकत पर वह पिण्डलियों को इस तरह थरथरा देती जैसे हल्के-हल्के कम्पन से भर रही हो। कहानी पूरी होने पर मिसेज हेज ने एक चुटकुला सुनाया—मैं हंस पड़ा, और हंसी का फायदा उठाते हुए मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। लोलिता ने इस पर भी हाथ को हटाने की कोशिश न की। अब वह जिस तरह की हरकत अपनी ओर से कर रही थी, उससे मुझे आभास मिलने लगा था कि वह जान रही है कि मैं अंधेरे का फायदा उठाकर ऐसा काम कर रहा हूं, वह पहले से ज्यादह आनन्दित होने लगी थी, पिण्डली पर पिण्डली कसकर वह मेरा हाथ थोड़ी-थोड़ी देर में भींच देती थी।

मेरी हंसी के साथ वह भी जोरो से हंस दी थी। उसकी हंसी देर तक जारी रही—ऐसा लग रहा था जैसे मेरे हाथ की हरकत से वह गुदगुदी में भर रही हो। मिसेज हेज थोड़ी देर तो बरदाश्त करती रहीं, पर जब उसकी 'खी-खी' तेज हो गयी तो उसे डांट दिया।

लोलिता सकपका कर उठ बैठी। उसे अवश्य ही मेरे सामने डांटा जाना अधिक बुरा लगा था। पर उसने प्रतिक्रिया व्यक्त न की। मिसेज हेज का पता नहीं मूड ऑफ हो गया था अथवा उन्हें कोई बात याद आ गयी थी, वह तेजी से उठकर कमरे में गयीं; तब तक मेरा हाथ उसके घुटनों का पिछला भाग पार करता हुआ जांघों तक जा पहुंचा था....मेरी अंगुलियां जांघों को न केवल थपथपाने बल्कि जलतरंग सी बजाने लगीं। लोलिता उसी तरह लेटी रही—उसने अपनी जांघों से थोड़ा आगे बढ़ने का मार्ग मेरे लिए प्रशस्त भी किया। मेरा तनाव चरम बिन्दु पर पहुंचने लगा। मैं यकायक सिहरने लगा।

बहुत सम्भव था कि मैं अंधेरे से आश्वस्त होकर कोई बेहूदा हरकत कर बैठता कि तभी मिसेज हेज ने लोलिता को आवाज़ देते हुए कहा–

"उठो, तुम्हारे सोने का समय हो गया है।"

"नहीं.....।" लोलिता उसी तरह लेटी रहकर बोली।

"क्या नहीं.....।" मिसेज हेज का तेज स्वर उभरा। उस स्वर पर मेरी अंगुलियों की पकड़ कुछ ढीली पड़ी–मैंने उसी पल मिसेज हेज को तेजी से आते हुए पाया। मैंने हाथ खींच लिया–मिसेज हेज को बेटी का 'न' करना इतना बुरा लगा था कि उन्होंने आकर लपकते हुए बेटी को बांह से पकड़कर उठाते हुए कहा–

"बदतमीजी मत करो, अन्दर चलो...।"

लोलिता एक झटके से उठी और पांव पटकते हुए अन्दर चली गई।

"यह लड़की बचपन से ही नटखट रही है....।" मिसेज हेज बेटी की शिकायत करने के भाव में नीचे फर्श पर बैठ गईं। लगता था वह देर तक बातचीत के मूड में हैं। कहना जारी रखा कि वह बचपन से ही उन्हें परेशान करती चली आ रही है–"जब एक साल की थी तभी से इतनी नटखट थी कि अपने खिलौने उठा-उठाकर पालने से बाहर फेंक देती थी।" मिसेज हेज ने घुटने मोड़कर बैठे-बैठे मेरी ओर ध्यान से देखा था, जैसे परखना चाहती हों कि मैं उनकी बात पर ध्यान दे रहा हूं या नहीं। ध्यान देता पाकर कहना जारी रखा..."अब ज्यों-ज्यों बड़ी होती जा रही है शरारती होती जा रही है। वह किसी की परवाह ही नहीं करती। उसे इस बात की जरा भी समझ नहीं कि कब कौन सा काम करना चाहिए। पहले अपनी नानी के यहां पिस्की में पढ़ाई करती थी, तो इतनी लाड़-प्यार में थी कि पढ़ाई-लिखाई में जीरो होकर रह गयी थी। उसे वहां से बुलाना पड़ा। यहां आकर कुछ पढ़ने-लिखने लगी है मगर मिजाज अब भी खराब हैं। समझ में नहीं आता कि कैसा मिजाज़ है। आखिर हम भी तो कभी बच्चे रहे हैं....।"

मैं हूं हां कहता हुआ मिसेज हेज की बातें सुनता रहा। उन्हें इस बात की तसल्ली कराता रहा कि मैं उनकी बात ध्यान से सुन रहा हूं, जबकि हकीकत यह थी कि मिसेज हेज के लोलिता को डांटने से मेरा मूड भी ऑफ हो गया था।

"मेरा आग्रह है.....और अगर आपको नागवार न गुजरे तो कभी-कभी उसे थोड़ी देर पढ़ा दिया करें....।" मिसेज हेज ने कहा और यकायक मेरा दिल जैसे उछल पड़ा। मैं आगे को झुक गया ताकि मेरे दिल की धड़कनों की आवाज सुनकर मिसेज हेज अपनी बात वापस न ले लें।

"आप तो इतने बड़े प्रोफेसर हैं। कभी-कभी इस बच्ची को पढ़ा दिया करें तो बड़ी मेहरबानी होगी..।" उन्होंने आग्रह और विनम्र भरे स्वर में कहा।

मैं जान रहा था कि मिसेज हेज मेरी ओर देख रही हैं, अंधेरे के बावजूद मैं अपने चेहरे पर उनकी डोलती नज़रें महसूस कर रहा था। मैंने आहिस्ता से अपनी टांगें फैलाते हुए अपने कंधे पीछे ले जाकर सिर को धीरे से झटका दिया। इस सर को झटकने का अर्थ 'हां' में भी लिया जा सकता था और 'ना' में भी।

मिसेज हेज चुप हो गयीं।

थोड़ी देर बाद हम उठकर अन्दर चले गये।

कुछ देर बाद जब मैं बिस्तर पर लेटा हुआ लोलिता की जिस्म की खुशबुएं दोहराने की कोशिश कर रहा था तो मेरे कमरे के द्वार पर हल्की सी आहट हुई। मैंने बत्ती जला दी, जबकि बरामदे की रोशनी में इस बात की साफ झलक मुझे लग गई थी कि वहां पर मिसेज हेज खड़ी हैं।

उन्होंने मुझसे मैगजीन के बारे में पूछा, जो मैंने सुबह उनसे पढ़ने के लिए ली थी। मैंने उन्हें बताया कि उसे तो मैंने लोलिता को लौटा दी थी। वह चुपचाप वापस लौट गयीं। कुछ देर बाद मैंने लोलिता की आवाज़ उसके कमरे में सुनी—"क्यों ?" मैं यह मैगजीन क्यों नहीं पढ़ सकती। मिसेज हेज ने क्या कहा, स्पष्ट मैं कुछ न सुन सका।

शुक्रवार—सुबह से ही मैं बहुत परेशान हो गया हूं.....लोलिता की समीपता को पाने के लिए, बेचैन था। लग रहा था इसी तनाव की स्थिति में रहा तो पागल हो जाऊंगा। मैं सोच रहा था—जो स्थिति बन चुकी है उसकी अगली मंजिल लोलिता को पूरी तरह पा लेना है। अगर यह सम्भव नहीं है तो मुझे यह स्थान छोड़कर चला जाना चाहिए, ताकि उसके लिए आगे और परेशान न हो सकूं।

कई बार सोचा कि न्यूयार्क वापसी के लिए जाकर ट्रेन पकड़ लूं—मगर, ऐसे हर अवसर पर मकान के किसी न किसी हिस्से से लोलिता की खिल-खिलाहट भरी हंसी, उसकी बचपने भरे शरारत की आवाज़ कानों में पड़ जाती और हर बार वापसी का इरादा झाग की तरह बैठ जाता। लगता, मैं कोई अभिशप्त राजकुमार हूं, जो किसी अन्जान कबीले में थिरकती हुई मृत प्रेमिका की शक्ल से मिलती-जुलती नर्तकी को देखकर बंधकर रह गया हूं और सारे कबीले के सो जाने के बाद भी अकेला नृत्य स्थल पर बैठा हुआ, ठण्डी पड़ती आग को

कुरेद-कुरेद कर, सन्नाटे की छांव में लिपटा बैठा, उस नर्तकी के चोरी-चोरी आने की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

कई बार कुछ ऐसी उलझन बनी कि आत्म हत्या तक की सोच बैठा। मैंने बार-बार गहराई से सोचा कि लोलिता के बगैर जी न सकूंगा। उसे पा न सका तो पागल हो जाऊंगा—फिर यह भी सोचा कि ऐसा सोचना भी तो पागलपन ही है। मगर यह पागलपन मैं कर बैठा था—मैं लोलिता को किसी और की होते हुए नहीं देख सकता था, जबकि इस आशंका से मन कांप-कांप जाता था कि उसे एक न एक दिन तो किसी की होना ही है; यह सामाजिक दस्तूर है, जिसे लोलिता को भी निभाना होगा और मुझे भी ...मेरी तमन्ना सामाजिक दस्तूर को काटने वाली थी—इस विषय में सहज में न कोई सोच सकता था, ना ही लोलिता की मां तैयार हो सकती थी। लगता था जब ऐसा दिन आएगा कि लोलिता किसी और की होने वाली होगी तो मैं उसे गोली मार कर खुद के गोली मार लूंगा....मगर क्या यह मेरे लिए सहज था ? जब वैलेरिया के इस तरह जीवन से जाने के बाद ही मैं आत्महत्या न कर सका था, तो अब क्या साहस पड़ता। किसी की हत्या करने के बाद आत्महत्या करना तभी सम्भव होता जबकि मैं जानवर की तरह विवेक हीन हो जाता, अन्यथा विवेक में रहते मैं अपने ऊपर तो गोली नहीं चला सकता था। मैंने सपनों में देखा है, जब कभी मैं किसी पर गोली चलाने की चेष्टा में पिस्तौल का ट्रिगर दबाता हूं तो मेरे सामने खड़े हुए दुश्मन का कुछ भी नहीं बिगड़ता है। पिस्तौल की गोलियां निकलती हैं और ड्रापर से झरती बूंदों की तरह इधर-उधर नीचे गिर जाती हैं।

खाने की मेज पर बातों ही बातों में झील पर जाने का प्रोग्राम अगले दिन के लिए मिसेज हेज से मैंने तय कर लिया। लोलिता इससे बहुत खुश हो गयी। वह आंखों-आंखों में मेरी ओर कई बार प्रशंसात्मक भावों से देखती हुई जैसे कह रही हो—यह एक काम तुमने शानदार किया है। मैं भी खुश था और आने वाले कल के लिए मैं हसीन रंगीन सपने सजाने लगा, जब लोलिता मेरे बगल में बैठी सफर कर रही होगी। झील पर इधर-उधर चढ़ाई उतराई पार करने के लिए बेझिझक मैं उसका हाथ थाम कर उसकी मां के सामने, उसे सहारा देता हुआ हूंगा। हो सकता है मिसेज हेज थककर कहीं बैठ जाएं, और मुझे और लोलिता को इस बात की इजाजत दे दें कि हम आगे तक घूम आएं—इस तरह हमारी आंख मिचौली को खुलकर खेलने का मौका मिलने जा रहा था।

मैं अभी अपने सपनों में ही खोया हुआ था कि न जाने किस तरह

मां–बेटी के बीच अगले दिन के प्रोग्राम के बीच में तकरार हो गया..। तकरार की वजह कौन सी बात थी, मैं जान न सका, क्योंकि अपने आप में मैं खोया हुआ था–अगर मेरे जेहन जागते होते तो शायद निष्पक्षता के साथ मैं दोनों के बीच कुछ निर्णय दे सकता। मिसेज हेज ने बेटी को डपट पिलायी और जिद्दी बेटी ने भरे दूध के गिलास पर हाथ मार गिराते हुए अपना विरोध प्रकट किया। बस फिर क्या था, मिसेज हेज का पारा सातवें आसमान पर। वह ऊंचे स्वर में उसे बुरा–भला कहने लगीं।

मैंने मध्यस्थता स्थापित करते हुए कहा कि–"बच्ची है जाने दीजिए।"

"वह जब तक अपने व्यवहार पर माफी नहीं मांगती मैं उससे बात नहीं करूंगी ..इसकी हरकतें अब दिन–दूनी रात चौगुनी बिगड़ती जा रही हैं, असहनीय होती जा रही हैं।" मिसेज हेज ने भरपूर नाराज़गी दिखायी।

मैंने लोलिता की ओर देखा–ताकि उससे कह सकूं कि अपने व्यवहार के लिए वह माफी मांग ले। मेरी निगाहों का भाव समझकर उसने जवाब में यूं आंखें तरेरीं जैसे मुझे कच्चा चबा जाएगी। मुंह पर आते–आते बात को मैं गटक गया।

मैं उस पर माफी के लिए दबाव न डाल पाऊं, इसलिए लोलिता झटके से उठकर अपने कमरे की ओर भागती चली गयी। ना तो मैं उसे रोक पाया ना ही मिसेज हेज ने उसे रोकने की चेष्टा की।

लोलिता के इस तरह रूठकर जाने की बात को लेकर भी मिसेज हेज देर तक शिकायत करती रहीं। मजबूरन मुझे 'हूं' 'हां' से औपचारिकता निभानी पड़ी। मन ही मन मैं सोच रहा था कि अब कुछ भी हो, झील पर जाने का कार्यक्रम स्थगित। इतने दिनों में मां–बेटी दोनों के स्वभाव को जहां तक मैं समझ पाया था उसके अनुसार–जिद्दी लोलिता दो–चार दिन तक खाना–पीना बन्द कर सकती थी, मगर माफी मांगने की पहल न कर सकती थी–और मिसेज हेज, उनकी नाराज़गी कम से कम चौबीस घण्टे से पहले खत्म होने वाली न थी।

इतवार–लोलिता मिसेज हेज की किसी दोस्त के यहां बर्थ डे पार्टी में चली गयी। मां–बेटी के बीच बातचीत अभी भी बन्द थी, मां का सामना न हो इसलिए लोलिता पार्टी में जाने के बहाने टल गयी थी।

सोमवार को मिसेज हेज ने बेटी से खुद ही बोलना शुरू कर दिया था; मगर कम्बख्त उस दिन से जो बारिश शुरू हुई तो आगे भी दो दिनों तक होती रही, रुकने का नाम न ले रही थी। तीन दिन की इस बारिश ने मुझे बहुत तड़पाया कुढ़ाया–कारण, लोलिता के समीप पहुंचने के मौके के लिए

बारिश अवरोध बनी हुई थी। मैंने मौसम को कोसते हुए बार-बार सोचा कि काश कोई प्राकृतिक आपदा पूरे शहर पर ऐसी आ पड़े जिसमें पूरा शहर गर्क हो जाए; मसलन भूकम्प आ जाए.....। शहर में कोई भी न बचे, यहां तक कि मिसेज हेज भी नहीं। अगर बचे रहें तो हम और लोलिता। सारे व्यवधान और खतरों से दूर होकर मैं अपनी प्यारी गुड़िया-लोलिता को गोद में लेकर उसे जी भर सहलाऊं, उसे प्यार करूं .....उसके अंगों को चूमूं.....और धीरे-धीरे बढ़ता हुआ वहां तक पहुंच जाऊं, जहां तक अभी तक न पहुंच सका था; बेकरार था। मौसम की बदहाली और अपनी बेताबी में कई बार इच्छा हुई कि बाजार चला जाऊं और कुछ रकम फेंककर अपने को हल्का कर आऊं। मगर इसमें परेशानी यह थी कि उस शहर के बाज़ारों को मैं अच्छी तरह अभी देख समझ न सका था .....ऐसे में किसी से वेश्या बाजार का पता पूछना मेरे लिए कुछ अच्छा न लग रहा था।

अब आगे इस आशा पर समय गुज़ार रहा था कि झील पर जाने का मौका आने वाले दिनों में मिलने जा रहा है। एक बार बना-बनाया प्रोग्राम लोलिता और उसकी मां के झगड़े में चौपट हो गया था। नया प्रोग्राम बना था-और उस प्रोग्राम को लेकर मैं नाना प्रकार की कल्पनाएं कर रहा था। मैंने यह भी सोच लिया था कि पिकनिक वाले दिन ऐसी कोई बात न करूंगा जिससे मिसेज हेज को शक होने का खतरा हो। उस दिन सारा दिन मिसेज हेज की खातिर में लगा दूंगा, सिर्फ मिसेज हेज से बातें करूंगा-उसे चुटकुले सुनाकर-हंसाऊंगा-और जब खा पीकर अलसाए हुए भाव में वह ऊंघने लगेंगी तो यकायक बहाना करके कहूंगा कि मेरी घड़ी खो गयी है....। वह तब तक इतना थक चुकी होंगी कि मेरी बात सुनकर भी अनसुनी कर देंगी; तब मैं लोलिता को लेकर घड़ी ढूंढने झाड़ियों में घुस जाऊंगा।

शनिवार-मेरा दिल धड़क रहा है। आज दिन में दो बड़ी महत्वपूर्ण घटनाएं घटीं। सुबह अपने कमरे की खिड़की से लगी, स्टूल पर पांव रखे, दालान में किसी से बातें कर रही थीं। मैं जब उसके कमरे के सामने से गुज़रा तो उस इस तरह टांगे हिला-हिलाकर बातें करते देख मुझे ईर्ष्या हुई। मैंने सोचा देखूं, कौन ऐसा भाग्यशाली है, जिससे वह इस कदर घुल-मिलकर बातें कर रही है ?

मैं दबे पांव उसके कमरे के अन्दर चला गया-उसके नजदीक पहुंच गया। वह बातें करने में इस कदर खोई हुई थी कि उसे मेरे आने का बिल्कुल ही पता न चला। फिर जब उसके भूरे बालों की गर्म खुशबू में बिल्कुल करीब आ गई तो मुझे यकायक एहसास हुआ कि मैं क्या कर रहा हूं-लेकिन तब

तक मैं इतना आगे आ गया था कि यकायक पीछे हटने से मेरा ज्यादह–मज़ाक उड़ने का खतरा था। मैंने दोनों हाथ आहिस्ता से लोलिता के कंधों पर रख दिये। मेरा इरादा था कि लोलिता के कान में 'हिश्श' करके या उसके गाल खींचकर ठहाका मार कर हंस पडूंगा और वह भी मजाक समझ कर मेरे इस तरह चोरी–छुपे आने का बुरा न मानेगी।

लेकिन मैंने ज्योंही कंधों पर हाथ रखा उसने चौंककर झटके से पलट कर पीछे देखा। मैं उसके इस तरह पलटने से इतना घबरा गया कि जो इरादा किया था उसे पूरा न कर सका। हंस भी न सका। उसके माथे पर बल पड़ गये। त्यौरियां चढ़ गयीं। उसने कंधे झकझोर कर अपने आपको अलग करते हुए कहा–"हट जाओ–मुझे छोड़ दो...।"

और मैं चुपचाप बाहर आ गया।

लंच पर मेरी तबियत अनमनी ही रही। उसकी बेरुखी का मुझ पर गम्भीर प्रभाव पड़ा था। मैं यह सोचने पर मजबूर था कि अगर लोलिता मुझसे नाराज हो गई है तो फिर सारी उम्मीदों पर पानी फिर जाएगा। इन्हीं विचारों के भंवर में डूबता–उतराता मैं अपने कमरे में आ गया। सोने के लिए बिस्तर पर पड़ गया। मगर आंखों में नींद न थी। अतः एक पुस्तक उठाकर पढ़ने के लिए नीचे बरामदे में आ बैठा।

मैंने अभी पुस्तक के दो–चार पृष्ठ ही पलटे थे कि लोलिता दबे पांव कब मेरे पीछे आ गयी, मुझे पता ही न चला। नर्म–नाजुक पतली अंगुलियों ने मेरी कनपटियों को छूते हुए जब आंखें बन्द कीं तो कल्पना में, खुली पुस्तक के पृष्ठ पर लोलिता की गुलाबी अंगुलियों से छन कर आती हुई खुशबू बिखर गई। उसकी खिलखिलाहट उभरी। वह मेरी नाराज़गी दूर करने आयी थी। मैं सब कुछ समझ गया, पुलकन में भर गया। मेरे हाथ आप ही आप ऊपर चले गये–कुर्सी से हट कर खड़ी लोलिता की पिण्डलियों पर चले गये, और दबाव डाल गये। मेरी गोद से किताब नीचे गिर गयी थी, तभी बरामदे के दूसरे सिरे से मिसेज हेज की आवाज़ सुनाई दी–

"बदतमीज कहीं की.....। अब मिस्टर हम्बर्ट को भी तंग करने लगी .....।" रुककर कहा गया–"मिस्टर हम्बर्ट ! इसे ज़रा कसकर दो–चार तमाचे जड़ दीजिए, अपने आप ठीक हो जाएगी।"

लोलिता भाग ली। उसके जाने के बाद अब पुस्तक पढ़ने में क्या खाक मन लगता। मैं टहलते–टहलते गुलाब की क्यारियों की ओर चला गया। क्यारियों में झुककर में एक फूल की पंखुड़ियों को देख रहा था तभी पीछे से मिसेज हेज की आवाज़ सुनाई दी–"गुलाब आप को पसन्द

आये ? खास फ्रांसीसी नस्ल के हैं।" कहते-कहते वह मेरे करीब आ गयी। मैं कोई जवाब देने ही वाला था कि एक गेंद उछल कर हमारे बीच आ गिरी। मिसेज हेज ने पलट कर देखा, गेंद फेंकने वाली लोलिता थी। उसे डपट पड़ी। डपट के उत्तर में उसने सफाई दी कि वह गेंद उसने उस पर नहीं फेंकी थी। मैं समझ गया कि गेंद किस के लिए फेंकी गयी थी।

दिन अच्छे कट रह थे। हम पिकनिक पर अभी तक न जा सके थे, मगर लुका-छुपी का मेरे और लोलिता के बीच खेल धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मुझे छेड़ने का जब भी कोई उचित अवसर मिलता, वह उसे गंवाए बगैर न रहती। मुझे भी जब भी उसे छू लेने, पकड़ लेने का मौका मिलता, न गंवाता। मगर उस सब से बेकली और भी बढ़ती जा रही थी। मैं जिस स्थिति को चाहता था वह अभी मुझसे दूर-दूर भाग रही थी। बहुत निकट होकर मैं उसे लिपटाना और अपने करीब करना चाहता था, मगर ऐसी कोई भी स्थिति आती तो कोई न कोई ऐसी घटना घट जाती कि निकट आते-आते वह दूर हो जाती।

इन स्थितियों में सतर्कता भी आवश्यक थी। मुझे आंख और कान खुले रखकर लोलिता से निकटता बढ़ानी पड़ रही थी। हर समय मिसेज हेज का डर सताता रहता कि कहीं वह इस बात पर शक न कर ले कि मेरे और लोलिता के सम्बन्ध बढ़ते ही जा रहे हैं। मगर अभी तक ऐसी स्थिति न आ पायी थी।

डिनर पर मिसेज हेज अच्छे मूड का परिचय दे रही थीं। रेडियो पर मौसम विभाग की ओर से इस बात की जानकारी दी गयी कि अगले दिन, यानी इतवार के दिन मौसम खुला रहेगा। मौसम की भविष्यवाणी सुनकर मिसेज हेज ने अप्रत्याशित ढंग से घोषणा की कि वह अगले दिन पिकनिक पर चलेंगी। लोलिता के चेहरे पर प्रसन्नता की लहरें आ कर गुज़र गयीं। मेरा दिल प्रसन्नता से बल्लियों उछलने लगा। मगर मैंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त न होने दी। सूप पीता हुआ मनोभावों को दबाता रहा।

इतवार की प्रातः मैं नित्य से कुछ पहले ही जग गया। मन में उतावलापन था पिकनिक पर जाने की तैयारी करने का। मैंने आहट पायी, लोलिता और मिसेज हेज भी उस दिन कुछ जल्दी उठ गयी थीं। नाश्ता भी उस दिन कुछ जल्दी ही नौकरानी रख गयी। नाश्ता करके मैंने बाहर की आहट

ली तो पाया कि मिसेज हेज किसी बात पर नौकरानी को डांट रही हैं। कहीं मिसेज हेज का मूड इसी बात पर ऑफ न हो जाए, इसलिए मैं चहल-कदमी सी करता हुआ उन दोनों के करीब पहुंच गया ताकि छोटी-मोटी बात हो तो मामला सम्भाल लूं-। बात साधारण थी-काम की लापरवाही की वजह से मिसेज हेज ने नौकरानी को तम्बीह की थी। नौकरानी अपने काम में लगी डपट सुनती रही थी।

तभी फोन की घण्टी घनघना उठी। नौकरानी ने कॉल अटेण्ड की। उसने खुद ही जवाब दे दिया-"अच्छा कह दूंगी।"

फोन रखने के बाद नौकरानी ने मिसेज हेज से बताया कि लोलिता की सहेली रोज का फोन था। उसकी मां को बुखार हो गया है, और कहा है कि आज पिकनिक पर न जा सकेगी।

"ठीक है, फिर तो हम भी नहीं जाते- आगे कभी देखा जाएगा..।"

मिसेज हेज ने मुझे सुनाने के लिए कहा।

"ठीक है.....।" मैंने भी कह दिया।

वैसे नौकरानी के मुंह से बात सुनते ही और मिसेज हेज को जवाब देने के साथ ही मेरे जी में आया था सर पीट लूं-जब-जब पिकनिक का प्रोग्राम बना कुछ न कुछ गड़बड़ हो गयी। मगर उसी के साथ इस बात पर भी ध्यान दिया कि यह रोज का किस्सा बीच में कहां फंसा हुआ था। समझ में आ गया कि पिकनिक पर जाने के लिए मिसेज हेज ने लोलिता की सहेली रोज को भी आमंत्रित कर रखा था। इस बात की जानकारी पर मेरा मुंह अन्दर ही अन्दर यूं बन गया जैसे अच्छे खासे स्वादिष्ट खाने के बीच कंकड़ आ गया हो।

अपने कमरे में लौटते हुए मैंने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दिया कि अच्छा हुआ रोज की मां की तबियत खराब हो गयी थी; अन्यथा अगर पूर्व प्रोग्राम के अनुसार पिकनिक पर जाना होता तो रोज साथ होती। अपनी सहेली के साथ होने की वजह से लोलिता उसके साथ खेल-कूद में लगी रहती, और मुझे मिसेज हेज के साथ झक मारनी पड़ती।

मैं देर तक इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि बाहर बरामदे से आवाज़ आयी- मिसेज हेज बेटी से कह रही थीं कि वे चर्च जा रही हैं, वह भी तैयार हो जाए।

"मुझे नहीं जाना चर्च वर्च।" लोलिता ने दो टूक उत्तर दिया।

"क्या बकवास करती है लड़की.....दिमाग ठिकाने नहीं है ....।"

"कुछ भी कहें, मुझे नहीं जाना.....।" लोलिता ने जिद्द ठान ली।

आगे भी कुछ शब्दों का मां बेटी के बीच वाक्-युद्ध चलता रहा, जिसे मैं सुन न पाया।

मैं आहट लेता रहा कि मिसेज हेज अकेली चर्च जाती हैं या बेटी को साथ ले जाने को तैयार कर लेती हैं। कुछ देर में मैंने मिसेज हेज के बाहर जाते कदमों की आहट पायी। कमरे से झांककर देखना उचित न समझा। कमरे की खिड़की से नीचे झांककर देखने का लोभ न छोड़ पाया।

मिसेज हेज ने भड़ाक से कार का दरवाज़ा बन्द करके ख़ुद चालक सीट सम्भाल ली थी। उनका मूड बिगड़ा हुआ था—पीछे की सीट ख़ाली थी और स्टेयरिंग सीट पर मिसेज हेज अकेली थीं।

कार आगे बढ़ गयी।

ज्यूरी के सदस्यों और उपस्थित सज्जनों—अब मेरी जिन्दगी के नाटक का सबसे महत्वपूर्ण पर्दा उठता है। नाटक का मुख्य पात्र मैं स्वयं यानी हम्बर्ट हूं। नायिका बारह वर्षीय दुबली-पतली लड़की। दिन-इतवार। समय -सुबह के ग्यारह। स्थान सूरज की रोशनी में जगमगाता हुआ ड्राइंग रूम।

पर्दा उठते ही मैं एक सोफे पर बैठा हुआ दिखता हूं। आस-पास कुछ पत्रिकाएं बिखरी हैं। हम्बर्ट बैठा पत्रिकाएं देख ही रहा है कि कमर से तंग और नीचे से चौड़े घेर की रंगीन छाप की फ्राक पहने नायिका ड्राइंग रूप में प्रवेश करती है। नायिका ने होंठों पर लिपिस्टिक लगा रखी है और हाथों में ताजा सुर्ख सेब पकड़ रखा है, जो अभी खाया नहीं गया है।

लोलिता को देखते ही मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। मैंने उसे पहली बार लिपिस्टिक लगाए देखा था। उसे इस तरह हाथ में सेब पकड़ा हुआ देखकर लगता था कि वह जानबूझकर फ्राक के कोने से उभरती हुई जांघों और कमर पर तंग होती हुई सुर्ख लेस से मैच करने वाले रंग का फल चुनकर आयी है। लिपिस्टिक बैक ग्राण्उड शेड के लिए थी। उसने कमरे में आते हुए मुझे जरूर देखा होगा। मुझे नहीं मालूम कि इस तरह मुझे ड्राइंग रूम में पाकर उसे ख़ुशी हुई थी या नहीं। मैं उस समय एक मैगजीन का पृष्ठ पढ़ने का ढोंग रच रहा था कि सेब उछालती-उछालती वह सोफे के दूसरे सिरे पर आकर धप्प से बैठ गयी।

बैठते ही उसने हवा में सेब उछाला तो मैंने अपना हाथ बढ़ाकर झट सेब को हवा में ही लपक लिया।

"मेरा सेब वापस दे दो—।" वह चिल्लाई।

मैंने मुस्कराकर सेब वापस कर दिया। उसने सेब लेते ही मुंह से लगाकर दांतों से एक छोटा टुकड़ा काटा और उसे चबाने लगी। फिर उसे

ख्याल आया कि उसके कमरे में होते हुए मैं मैगजीन क्यों पढ़ रहा हूं। उसने हाथ बढ़ाकर मैगजीन जो खुली थी अपनी ओर खींच ली। मैगजीन को अपनी गोद में रखकर वह पन्ने पलटने लगी। ड्रामा यहां आकर कुछ देर के लिए ठहर गया था।

मैंने ऐक्शन लाने के लिए मैगजीन उसके हाथों से छीन ली। जाहिर है उसे बुरा लगा होगा। अगले ही पल उसके नाखून मेरी कलाइयों में गड़ रहे थे। मैं इसी मौके के इन्तज़ार में था। मैंने मैगजीन छोड़ एक हाथ से उसकी बांह और दूसरे हाथ से उसका कंधा पकड़ लिया। मैगजीन फर्श पर गिरकर फड़फड़ायी। लोलिता ने अपने आपको छुड़ाने के लिए कसमसाना शुरू कर दिया। मैं तो चाह ही रहा था कि छीन-झपट हो, जिसमें उसके जिस्म के लगभग हर-हिस्से को स्पर्श करने का अवसर मिल जाए। उसे छूटना न था, न छूटी, उसने गुस्से में पलट कर सोफे पर बैठे-बैठे अपनी दोनों टांगें मेरी गोद में रख दीं और हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगी।

उसका ख्याल था कि मैं गाउन खराब हो जाने के डर से उसे छोड़ दूंगा—लेकिन मैं तो यही चाहता था।

अगले तीन-चार मिनटों में ऊपर से मुस्कराते और अन्दर से पूरी सावधानी से काम लेते हुए मैंने धीरे-धीरे लोलिता को खींच कर अपनी गोद में बिठा लेने को राज़ी कर लिया। इन सारी हरकतों के दौरान मैं उसे चुटकुले भी सुनाता जा रहा था, जब वह चुटकुले पर हंसने लगती तो उसके रेशमी भार से मेरी गोद में कांपती हुई तरंगों की थरथराहट तेज हो जाती।

धीरे-धीरे बातें करते हुए लोलिता कुछ इतना खो गई या कहा जाए खुल गयी कि वह इस बात को भूल सी गई कि वह मेरी गोद में बैठी है। मुझे इस बात की अभी सतर्कता बरतनी पड़ रही थी कि कोई आ गया तो उसे मेरी गोद में बैठा हुआ देखकर क्या सोचेगा ? मगर मैंने यह भी सोचा कि मेरी और उसकी उम्र में इतना लम्बा चौड़ा फर्क है कि कोई इसे खिलवाड़ के अलावा कुछ ज्यादह न समझेगा। मुझे कुछ तसल्ली सी हुई।

उसकी मां चर्च गई हुई थी—वापसी पर कुछ खरीदारी करके ही लौटा करती थी। अभी लौटने का कोई औचित्य न था। नौकरानी भी छुट्टी करके जा चुकी थी, उसके शाम से पहले आने की कोई सम्भावना न थी। यद्यपि घर का बाहरी द्वार बन्द न था, बावजूद इसके बगैर घण्टी बजाए कोई आने का कष्ट क्यों कर सकता था। इन्हीं स्थितियों को लेकर मैं निश्चिंत था।

अब लोलिता मेरी गोद में बैठे-बैठे पांव से नीचे फिसले सैण्डिल को फिर से अंगुलियों में उलझाने के लिए अपने एक पंजों को नीचे

फर्श की तरफ दबाना शुरू कर दिया था। इस दबाव से मेरे शरीर में दौड़ती हुई तरंगों की रफ्तार और तेज हो गई थी।

धीरे-धीरे उसके भूरे चमकदार बालों से उठती हुई गर्म-गर्म खुशबू और नीचे फर्श के साथ खेलते पैरों से होने वाली जांघों की सिहरन में, मैं इतना खो गया था कि मेरा सारा शरीर उत्तेजना के किसी गुलाबी समुद्र की हल्की गर्म लहरों के थपेड़ों में डूबने लगा था। लोलिता नहीं जानती थी कि वह मेरे लिए क्या कर रही है—और अगर जानती थी तो उसे उस सब में कुछ आनन्द आ रहा था। अब यह तो हो नहीं सकता था कि मैं उसको थामने, रोकने, छेड़ने, गुदगुदाने और हंसाने के बहाने उसके अंग-प्रत्यंग पर हाथ रख दे रहा था, वह इसका आभास न कर पा रही थी कि क्या हो रहा है। वह पूरी तरह हर बात का आभास कर रही थी और खुद भी तरंगित हो रही थी; कम से कम बाद को गुज़रने वाली स्थितियों से मैं इस अनुमान पर पहुंचा हूं कि उसे सब कुछ का पूरा एहसास था—आप भी आगे के घटनाक्रम से इस बात को समझ जायेंगे ? हां, यह बात जरूर थी कि वह अपनी ओर से कोई प्रतिक्रिया व्यक्त न कर रही थी; सिर्फ यही जता रही थी कि उसे मेरी गोद में बैठने से कोई एतराज न था।

अब तक मेरे हाथ भी लापरवाही से उसकी जांघों पर वहां आ गये थे जहां से अण्डरवियर का सिल्कन सिरा कोई एकाध इंच ही दूर रह गया था। इस बीच मैं चुप नहीं था—हम दोनों दुनिया भर के विषयों पर बातें करते जा रहे थे—फिल्मों, खेलों, किताबों, दुकानों, हवाई जहाजों, पता नहीं लोलिता क्या-क्या पूछती जा रही थी और मैं क्या-क्या जवाब देता जा रहा था।

मेरे एक जवाब को सुनकर वह हंसी और खिलखिलाहट में जरा ऊपर को उछली—उसके ऊपर उछलते ही मेरी नसों में पिछले आधे घण्टे से सप्तरंगे इन्द्रधनुष बनाता हुआ बुलबुला एक बार जोर से कसमसा कर फट गया। अब तक उसकी जांघों पर मेरे हाथ इस तरह रखे हुए थे कि वह इधर-उधर हिल तो सकती थी—लेकिन मेरे चाहे बगैर वह उठ नहीं सकती थी—लेकिन उसकी रेशमी रगड़ से तप कर मेरे अन्दर इतनी देर से आहिस्ता-आहिस्ता इकट्ठा होता हुआ लावा ज्यों ही पिघला, मेरी पकड़ स्वाभाविक रूप से ढीली पड़ गयी।

मैं तृप्त हो गया था।

लोलिता को शायद लगा कि मैं उसके इतनी देर तक गोद में बैठे रहने से थक गया हूं—अतः मेरी पकड़ ढीली पड़ते ही वह आहिस्ता से उठ खड़ी हो गयी। यह भी हो सकता है कि वह मेरी पकड़ ढीला

होने का इन्तजार कर रही थी। मैंने उसे रोका नहीं। सिर्फ उसके उठते ही अपने गाउन को इस तरह ठीक किया कि अगर वह मेरी जांघों की तरफ देखे तो उसे कुछ भी पता न चले।

लोलिता ने मेरी गोद से उठने के बाद मुझे रूमाल से पसीना पोछते हुए देख कुछ सोच ही रही थी कि फोन की घण्टी बजने की आवाज़ के साथ वह फोन की ओर लपकी।

अपनी मां की तरह उसे भी फोन पर गप्पें लड़ाने का शौक था। मैं उठकर कमरे में चला गया।

माननीय सदस्यों, अगर आप लोग ध्यान से विचार करें तो पायेंगे कि मैंने कोई गुनाह न किया था—यह सच है कि उस बारह साल की लड़की से मैंने आनन्द प्राप्त कर लिया था—ऐसा आनन्द जिसे प्राप्त करने के लिए लोग सारी-सारी उम्र एक औरत से दूसरी औरत की बांहों में भागते फिरते हैं। मेरी इस हरकत से लड़की को, जिसे वकीलों की भाषा में नाबालिग करार देकर मुझे अपराधी करार देना चाहा है, राई-रत्ती भर भी नुकसान न पहुंचा था। मैंने एक कुशल मधुमक्खी की तरह फूल की पंखुड़ियों से ज़रा सी छेड़ किये बिना ही शहद निकाल लिया था। लोलिता को इस बारे में कुछ भी पता न चला था। उसके मन, उसकी सुकुमार भावनाओं, उसकी आदतों, किसी पर भी मेरे आनन्द की, जिसे सरकारी वकील ने मौन विकृति कहा है, पवित्र या अपवित्र छाया नहीं पड़ी थी। लोलिता बिल्कुल सुरक्षित थी—मैं निर्दोष था क्योंकि मैंने उसे कोई नुकसान न पहुंचाया था। फिर आप मेरी और इस तरह क्यों देख रहे हैं, जैसे मैंने कोई भयंकर अपराध किया हो।

उस दिन मैं इतना तृप्त हो गया था कि जीवन की अन्य सारी खुशी फीकी मालूम हो रही थी। मेरे आगे-पीछे चारों ओर दुनिया रंगीन ही रंगीन थी। ऐसा लगता था—बरसों की साधना, तपस्या सफल हो गयी हो। उस दिन मैंने घर से बाहर जाकर खाना खाया। काफी समय के बाद खुलकर भूख लगी थी। दोपहर भर मैं सड़कों पर इधर-उधर घूमता रहा।

शाम को घर लौटा तो मिसेज हेज से सामना हुआ। अपने कमरे में जाते हुए मैंने लोलिता के कमरे में उसे झांका तो कमरा खाली पाया, कपड़े बदल आकर मैंने बातों ही बातों में मिसेज हेज से उसके बारे में

पूछा तो उन्होंने बताया कि वह अपनी एक सहेली के यहां चली गयी है। उसका फोन आया था, ईवनिंग शो देखकर वह लौटेगी।

डायनिंग टेबल पर मैं और मिसेज हेज ही थे—आज मिसेज हेज ने डायनिंग टेबल को कुछ खास ही अन्दाज और अदा से सजाया था। जब मैं अन्दर पहुंचा तो वह एक बड़े से शमादान में मोमबत्तियां सजाने के बाद फूंक मार कर बुझाई तो माचिस की जली तीली ऐश ट्रे में रखने के लिए उसे तलाश करने लगीं। मैंने इस कार्य में उनकी सहायता की तो वे मुस्कराकर बड़ी अदा से धन्यवाद करना न भूलीं।

वह उस समय अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ ज्यादह दिलकश नज़र आ रही थीं। उनकी बातों में शुष्कता न होकर लगावट थी। मैंने समझा कि लोलिता के घर में न होने की वजह से वे उस दिन मानसिक तनाव में नहीं हैं, अतः व्यवहार में तब्दीली है। पर इस बात को कब जानता था कि यह परिवर्तन मेरे खातिर है।

खाना शुरू हुआ तो मैंने जाना कि मिसेज हेज ने मेरे लिए सलाद की स्पेशल डिश तैयार करवाई थी।

बातचीत के दौरान मिसेज हेज ने इस बात का जिक्र किया कि दो दिन बाद लोलिता एक-दो महीने के लिए कैम्प चली जाएगी। मैं चौंक गया। पहले तो मेरी समझ में न आया कि जो मैंने सुना है वह सत्य है—मगर जब मिसेज हेज ने अपनी बात पुनः दोहराई तो मेरा दिल बुझ सा गया। मैंने मन ही मन में सोचा कि मेरी जलपरी सचमुच एक-दो महीने के लिए मुझसे छिन जाएगी। इस चक्कर बाजी में मुझसे आगे खाना न खाया गया। भूख जैसे मिट गयी थी। मिसेज हेज ने पूछा तो मुझे दांत दर्द का बहाना बना देना पड़ा। मैंने उस समय कॉफी तक को स्वीकार न किया। क्षमा मांगकर अपने कमरे में आ गया, और मुंह ढांप कर पड़ गया।

अगले दिन लोलिता खरीदारी में बिजी रही। ऊल-जुलूल चीजों की खरीदारी का जैसे उसे शौक था। उसके बाजार से लौटकर आने पर हमने साथ खाना खाया। खाने के समय कोई खास बात न हो सकी। खाने के बाद वह अपने कमरे में गयी और उन मैगजीनों के पृष्ठ पलटने लगी जिन्हें वह कैम्प में ले जाने का इरादा कर रही थी।

अगले दिन, सोमवार को मां-बेटी बाजार से और खरीदारी करने के लिए गयीं। उनके पीछे लोलिता के कैम्प वालों का फोन आया जो मिसेज हेज से लोलिता की खुराक वगैरह के बारे में बातचीत करना चाहते थे। मैंने उनके बाजार जाने की बात बताकर कहा कि अमुक समय पर पुनः फोन कर लें।

मंगलवार को लोलिता ने खाना कमरे में ही खाया। इसी बीच मां-बेटी में किसी बात पर पुनः कहा-सुनी हो गयी। मैं लोलिता को एक नज़र देख लेने के उद्देश्य से एकाध बार उसके कमरे के सामने से गुज़रा—वह पेट के बल औंधी इस तरह पड़ी हुई थी कि उसके बालों और पैरों के सिवा कुछ भी न दिखाई पड़ता था। जब से मुझे आभास हुआ था कि वह मां से झगड़ी है, मैं उसे देखने और झगड़े का कारण जानने को आतुर था। लोलिता उन लड़कियों में से थी जो गुस्से और रोते समय और भी हसीन लगने लगती हैं।

डिनर के बाद मिसेज हेज ने मुझे नीचे बिठा लिया। हम दोनों बराबर में बैठ गये। इस बैठक के दौरान अधिकांश बातचीत मिसेज हेज ने की थी। वे शिकायती स्वर में बोलीं—"पहले तो कैम्प जाने की जिद्द कर रही थी और अब जबकि कैम्प जाने की सारी तैयारियां पूरी हो गयी हैं तो मुझ पर इल्जाम लगा रही है।"

"कैसा इल्जाम— ?" मैंने उत्सुक होकर पूछा।

"कहती है कि अपना पीछा छुड़ाने के लिए उसे कैम्प भेज रही हूं—।" मिसेज हेज ने कहा।

मैं मां-बेटी की इस नोंक-झोंक के बीच मध्यस्थ बनना जरूरी न समझ रहा था, अतः चुप ही रहा।

बुधवार को सुबह-सुबह लोलिता मुझे एक मिनट के लिए पोर्च में मिली। एक मिनट क्या कुछ सेकण्ड के लिए कहिए। सफेद स्कर्ट पर हरे रंग की पैण्ट पहने हुए वह नीचे उतर रही थी और मैं आगे से लौटता हुआ बरामदे से होकर अपने कमरे की तरफ जा रहा था। मैंने खुश होकर हंसकर उससे बात करनी चाही। लेकिन उसने मेरी ओर देखकर जवाब देना तो दूर, हाथ में पकड़ी लोहे की किसी चीज से कसकर मेरी बांह पर वार किया।

"दगाबाज़।" उसने नथुने फुलाकर जोर-जोर से सांस लेते हुए कहा और तेजी से आगे निकल गयी।

मैं सन्न रह गया। उसके व्यवहार के इस परिवर्तन के बारे में सोचने लगा। कितने अधिकार के साथ उसने मुझे 'दगाबाज़' कहा था। और फिर समझ गया कि पिछली रात बरामदे में मिसेज हेज के साथ बैठकर बातचीत करना काफी महंगा पड़ा है। लंच पर भी लोलिता अपने कमरे में रही डाइनिंग टेबिल पर हम और मिसेज हेज.....हम केवल दो ही थे।

अपने बिस्तर पर लेटा हुआ मैं विचारों की तन्द्रा में खोया हुआ था कि मैं किस पागलपन में फंस गया हूं—लोलिता सारी उम्र लोलिता

तो न रहेगी—दो-तीन वर्ष बाद उसके जिस्म की फूटती हुई कलियां फूल बन जाएंगी, उसका सारा कच्चापन आप से आप छुट जाएगा, तब मैं क्या करूंगा।

लेकिन यह ख्याल ज्यादह देर तक न टिक सका। मैं जानता था कि लोलिता के जिस्म को मैं प्यार नहीं कर रहा था, उसकी उम्र को प्यार कर रहा था। यह भी तय बात थी कि यह उम्र बीत जाने पर जब लोलिता जवान होकर कालेज जाने की उम्र में पहुंच जाएगी तो उसका जिस्म हर जगह से पूरी तरह से भर जाएगा। उसके नितम्ब भर जायेंगे, उसके यौवनांग फूल बनकर अन्य युवतियों की तरह बड़े-बड़े हो जायेंगे तब मन में इन दिनों की यह स्मृतियां ही जवान बनी रहेंगी।

उसी समय मैं विचारों की तन्द्रा से चौंका—नीचे से लोलिता के जोर-जोर से बोलने की आवाज आयी। वह अपनी मां से इस बात पर झगड़ रही थी कि उसका सामान कम क्यों कर दिया गया है। और मिसेज हेज उसे समझाने का प्रयास कर रही थीं कि कैम्प में जाने का मतलब यह तो नहीं कि घर का सारा सामान वह उठा ले जाए। वह उसे ऊंच-नीच बताते हुए कह रही थीं कि उसकी भी उम्र कभी उस जैसी थी, वह भी कैम्प अटैण्ड कर चुकी है; कैम्प में कितना सामान ले जाना चाहिए इस बात का उन्हें पूरा अनुभव है। ज्यादह सामान लेकर जाना असुविधाजनक तो रहता ही है, साथ ही सामान के चोरी चले जाने का डर भी रहता है। थोड़े सामान की ज्यादह आसानी से देख भाल की जा सकती है।

पता नहीं उसने अपनी मां के लेक्चर का क्या असर लिया—बात उसके पल्ले पड़ी या नहीं, मगर वह चुप जरूर हो गयी।

मेरे मन में उस अवसर पर भी यह बात आयी कि जाकर मां-बेटी के बीच मध्यस्थ बनूं। जाहिर था कि अगर ऐसा मैं कर सकता तो मुझे लोलिता का ही पक्ष लेना पड़ता। उसकी घूरती आंखों को मैं झेल न सकता था। उसका पक्ष लेने से वह खुश हो जाती। मैं मिसेज हेज से कहता कि यही उम्र है घूमने-फिरने और ऐश करने की। इस उम्र में ऐश न करेगी तो कब करेगी। सामान कम होने पर उसे दूसरी लड़कियों से मांगना पड़ेगा, और उस प्रकार हीनता की भावना जागेगी। इस उम्र में बच्चों के मन-मस्तिष्क में हीनता की भावना का जागना कोई अच्छी बात नहीं।

किसी विषय में अपने मतलब में तर्क निकाल लेना और उसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण तलाश कर लेना, मुझ जैसे इन्सान के लिए कोई कठिन काम नहीं। मगर यह सब तो महज सोचने वाली बात थी; मिसेज हेज के

सामने मौजूद रहने पर मैं लोलिता से सीधे बात करने से भी डरता था, उसका पक्ष लेना तो बहुत दूर की बात थी। हालांकि मैं यह भी जानता था कि ऐसा करना कोई अनहोनी बात न होती। बच्चों का हमेशा दूसरे बड़े पक्ष लेते ही हैं; मुंह पर न सही पर, पीछे वे इस बात पर खुश होते हैं—आखिर बच्चे बच्चे होते हैं, उनसे मां-बाप को ईर्ष्या नहीं प्यार होता है, और प्यार करने वाले का पक्ष लेना कभी भी बुरा लगने वाली बात नहीं होती।

मगर मेरे मन में तो कुछ और ही भावना थी। सदा पकड़े जाने का खतरा बना रहता था। हमारा सम्बन्ध सीधा-सादा न होकर, दूसरी मंजिल की ओर बढ़ गया था, जिसमें हर कदम पर संकोच और झिझक रहती थी। अब मेरे लिए बेहतर यही था कि मां-बेटी के झगड़े में मैं तटस्थ दर्शक रहकर अपनी भूमिका निभाऊं।

मैंने अपना ध्यान दूसरी ओर मोड़ लिया और इस बात को सोचने लगा था लोलिता के बगैर घर सूना हो जाएगा। उसके जाते ही बहारें जैसी चली जाएंगी, रूठ जाएंगी। मुझे किसी के कदमों का ना तो इन्तजार रहेगा, ना ही किसी के लिए दिल की धड़कनें बढ़ा करेंगी।

लोलिता क्या जाएगी, सब कुछ अंधेरे में डूब जाएगा। उस के बगैर एक-दो माह का समय कैसे काटूंगा—एक माह का अर्थ—चार सप्ताह; तीस दिन, यानी सात सौ बीस घण्टे.....। मिनट और सेकण्डों का हिसाब भी मैं निकाल रहा था कि अचानक लोलिता के साथ कैम्प जाने की बात दिमाग में आयी....। दिमाग ने कहा—लड़कियों का कैम्प है, मैं वहां कैसे जा सकता हूं— दिल ने कहा लड़कियों का कैम्प है तो क्या हुआ, मैं वेश बदल कर आस-पास अपना टैन्ट लगाकर पड़ा रहूंगा। किसी औरत का मेकअप कर लूंगा। और किसी दिन जब लोलिता उस कैम्प में मुझे औरत समझ कर आएगी तो.....उसके अन्दर आते ही मैं उसे बांहों में....।

मैं इन्हीं ऊल-जुलूल के विचारों में खोया हुआ तभी नीचे से कार के इंजन के स्टार्ट होने की आवाज मेरे कानों में पड़ी। मेरा मन बहुत किया कि जाती हुई लोलिता को उठकर देखूं। मगर ऐसा कर न सका। मुझे बेहद दुःख हो रहा था, मैं उस विदाई के क्षण को अपनी आंखों से देख न सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे सामने से, मेरे देखते-देखते कोई जबरन लोलिता को मुझसे दूर किये जा रहा है, और मैं कुछ कर पाने में असमर्थ हूं।

उसी समय कुछ ऐसी अप्रत्याशित घटना घटी जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकता। कार के स्टार्ट इंजन की आवाज़ मेरे कानों में पड़

रही थी। मिसेज हेज का स्वर उभरा था।

"जल्दी करो—क्या काम रह गया अब— ?"

इंजन बन्द हो गया था। कार के चल पड़ने की आवाज के बजाय, दरवाज़ा खुलने की आवाज आयी थी। फिर कार से लोलिता के कदम बाहर आये थे—इस बात का अन्दाजा मिसेज हेज के स्वर से लगा था। उन्होंने लगभग चौंकती आवाज़ में पूछा था—

"कहां जा रही हो..... ?"

लोलिता का कोई भी उत्तर न था—उसके तेज कदमों से अन्दर भाग कर आने की आहट मिली थी। और वह सीधे मेरे कमरें में थी। उसे अप्रत्याशित रूप से अपने सामने पाकर मैं बिस्तर से उठ भी न पाया था कि झपाके के साथ मुझ पर झुक आयी। गले में बांहें डालकर मुझे अपने से भींचने लगी। कुछ पता नहीं चला कि कब क्या हुआ, अगले पल मेरे दहकते होंठ उसके होंठों पर थे और सीना उसकी फाख्ताओं से पिस रहे थे। फिर जिस फुर्ती से लोलिता आई थी, उतनी ही तेजी-से खुद को छुड़ाकर वापस चली गयी।

मुझे तो खैर यकीन था ही पर अब तो आपको भी विश्वास आ गया होगा कि इतवार को ड्राईंगरूम में मेरे और उसके बीच जो मधुर खेल हुआ था उसे उसने मात्र छोटी बच्ची के रूप में न लिया था। मेरी हर हरकतों से वह आनन्दित और उन्मादित हुई थी। वह जानती थी कि उसके साथ क्या हो रहा है। वह पुरुष के हाथों के स्पर्श और सिहरन के प्रति ज्ञान प्राप्त कर चुकी थी।

अगर उसे इस बात का ज्ञान न होता तो मुझे 'दगाबाज' न कहती। अधिकार के साथ मेरे हाथ पर चोट न करती। उसने अपना जबरदस्त विरोध प्रकट कर दिया था, ऐसा करके। विरोध भी किसको लेकर, अपनी सगी मां को लेकर। उसने मुझे आभास करा दिया था कि वह—उसकी है, और उसका मुझ पर इतना अधिकार हो चुका है कि वह मुझे दुनिया की किसी भी अन्य औरत से हंसता-बोलता भी नहीं देख सकती।

आह ! उस समय, जाते-जाते लोलिता सारे जमाने की लज्जत मुझे प्रदान कर गयी थी। एक ऐसी अनुभूति... मादक भेंट अपने प्यार की दे गयी थी, जिसके सहारे मैं कयामत तक उसके लौटने का इन्तज़ार कर

सकता था। वह कयामत बनकर मेरे पास आयी थी और कयामत बनकर ही चली गयी थी। वह ऐसी कयामत थी, जिसके लौटकर आने का बार-बार किसी को भी इन्तज़ार हो सकता था।

लोलिता के चले जाने पर बिस्तर पर से उठकर मैं देर तक शीशे में अपना चेहरा देखता रहा। मेरी अंगुलियों बार-बार अपने होंठों प चली जाती थीं। मुझे लगता था, मेरी अंगुलियां और सिरों पर त्वचा के बीच कहीं लोलिता का वह दूधिया स्पर्श अभी तक जिन्दा है ...नी हथेली के बीच उसकी फ्राक की सरसराहट बार-बार कुनमुनाने लगी।

मिसेज हेज बेटी को छोड़ने गयी थीं। नौकरानी घर में थी नहीं—मैं दीवानेपन में भरा हुआ दसियों बार लोलिता के कमरे में गया, मकान के खालीपन का फायदा उठाकर मैं लोलिता के बिस्तर पर मचल-मचल कर अपनी रगों में लोलिता के जिस्म की खुशबू समेटने का प्रयास करने लगा। यह वही बिस्तर था जिस पर लोलिता करवटें बदला करती थी ...बिस्तर के रेशे-रेशे में उसकी खुशबू रची-बसी हुई थी।

उसके बिस्तर पर मचलने के साथ ही मुझे प्रतीत हो रहा था कि वहां पर लोलिता मेरे नीचे पिस रही है...किसी छलावे की तरह आकर हकीकत में मुझे जो आनन्द दे गयी थी....होंठों से होंठ जोड़ गयी थी ...अपने सीने से मेरे सीने को भींच गयी थी। उसकी उन्मादकता को अपने चरम बिन्दु पर पहुंचाने के लिए मेरे लिए उसके बिस्तर पर मचलना बहुत आवश्यक था। इसी से मुझे शांति, आनन्द मिल रहा था। आनन्दमय कल्पना ही मेरे रोम-रोम में सुलगती भावनाओं को शान्त कर सकती थी। पता नहीं कैसी उथल-पुथल मची हुई थी कि न तो बैठ पाता था ना ही लेट पाता था।

अपने कमरे में वापस आता, खिड़की से बाहर झांककर देखता तो लोलिता के कमरे में जाने को मन करता। लोलिता के कमरे से जाकर लौटता तो अपने कमरे की खिड़की से उस मोड़ को देखते रहने का मन करता जहां लोलिता को कैम्प ले जाने वाली नीली कार सड़क पर फर्राटें भरती हुई गुम हो गयी थी।

मैं न जाने कब तक इसी तरह डूबता उतराता रहता कि तभी नीचे से नौकरानी ने मेरा नाम लेकर आवाज दी। अपना नाम सुनकर मैं कमरे से बाहर निकल आया और सीढ़ियों पर खड़ा हो गया।

नौकरानी मुझे देखकर मुस्करायी। पता नहीं उस मुस्कराहट का क्या अर्थ था ? शायद वह मुझे याद दिलाना चाहती थी कि घर में हम दोनों बिल्कुल अकेले हैं और अगर मैं चाहूं तो उसे कोई एतराज नहीं होने जा

रहा है। शायद वह अपनी मालकिन की अनुपस्थिति में मुझे खुश रखने का कुछ ज्यादह ही प्रयास कर रही थी। उसका इरादा कुछ भी रहा हो, जब मैंने उसकी मुस्कराहट के जवाब में सिर्फ भौंह उठाई तो उसने एक लिफाफा मुझे थमाते हुए कहा–

"मालकिन यह लिफाफा जाते समय आपको देने के लिए दे गयी हैं।"

मैंने धड़कते दिल से लिफाफा हाथों से ले लिया और अपने कमरे में लौटने लगा।

कमरे में आकर मैंने जल्दी से लिफाफा खोला। आंखों के सामने लोलिता की सूरत तैर रही थी। उसके अलावा मुझे कोई और जैसे नज़र ही न आ रहा था, अतः 'मालकिन' के नाम पर मैंने यह भ्रम खाया था कि वह लिफाफा जाती हुई लोलिता दे गयी है।

अगर इस बात को ध्यान में ले आता कि नौकरानी लोलिता को का सम्बोधन नहीं देती थी तो उस समय इतना उतावलापन

खत को खोलने के बाद लिखाई के मामले में भी मुझे भ्रम था कि लोलिता की है–मगर मजमून से स्पष्ट हो गया कि वह पत्र मिसेज हेज का था। खत कुछ इस प्रकार था–

"मैं नहीं जानती कि यह सब कुछ क्यों लिख रही हूं? मैं सिर्फ इतना जानती हूं कि जब से तुम इस घर में आये हो मैं अपने आपे में नहीं रही हूं। शायद इस बात को जानकर तुम गौरवान्वित महसूस करोगे कि तुमने पहली नज़र में ही मुझे जीत लिया, लेकिन इन पंक्तियों को लिखते हुए कितनी विवश हो गयी हूं, तुम इसका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते।

अब तक मैं अपने आपसे लड़ रही थी, पर इतवार को जब चर्च में प्रार्थना करते-करते भी तुम्हारी सूरत मेरी आंखों में फिरती रही तो मैंने मान लिया कि मेरे सामने सिर्फ एक रास्ता बचा है कि तुम्हें अपने घर से निकाल दूं। मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूं हम्बर्ट। हो सके तो इससे आगे की पंक्तियां मत पढ़ना। इस खत को यहीं तक पढ़ने के बाद फाड़ देना और मेरे लौटने तक न्यूयार्क चले जाना।

नाराज होने की कोई बात नहीं। मैं तुम्हें नाराज नहीं देखना चाहती। लेकिन इसके सिवा अब चारा ही क्या है। सिर्फ दो रास्ते बचे हैं–या तो तुम मुझसे शादी कर लो या मुझे मेरे हाल पर छोड़कर वापस चले जाओ।

मैं जानती हूं कि पिछले दिनों से तुमने 'लो' की जिस तरह की शरारतों और झक्कीपन से समझौता किया है, वह तुम्हारी सहृदयता का प्रतीक है। मैं यह भी जानती हूं कि हमदर्दी का मतलब सदा प्यार नहीं होता, ना ही तुम्हें अपने घर में पेईंग गेस्ट की हैसियत से रखकर मुझे यह अधिकार मिल जाता है कि मैं तुम्हारी जीवन संगिनी बनने के सपने देखने लगूं।

अगर तुम सचमुच ही उम्र भर के लिए मेरी बांह थामना चाहते हो और एक बिना बाप की बारह वर्षीय बच्ची को अपनी बेटी स्वीकार करने के लिए तैयार हो तो घर में रहना, वरना, मैं दोहराती हूं, चले जाना, चाबियां कमरे की डेस्क पर छोड़ जाना। अपना पता भी छोड़ जाना ताकि मैं हिसाब किताब करने के बाद तुम्हारी बकाया रकम भी अदा कर सकूं।

विदा। कभी-कभी याद कर लिया करना।

–शार्लट हेज"

मिसेज हेज का पत्र इससे भी ज्यादह लम्बा था, मगर उसमें से इतनी ही लाइनें मुझे याद हैं।

खत पढ़ने से मुझे विरक्ति हुई कि ये किस गोरखधंधे में आ फंसा हूं। लेकिन खत को दोबारा पढ़ने के बाद सोचा कि बिना सोचे-समझे कोई कदम उठाना ठीक न होगा। खत को जेब में रखने के बाद मैं लोलिता के कमरे में चला गया।

उसके बिस्तर पर लेटकर मैंने तीसरी बार उसे पढ़ा और फर्श पर बेतरतीब मैगजीनों को अनमनी नज़रों से देखता हुआ सोचने लगा कि क्या फैसला करना चाहिए ?

ज्यूरी के माननीय सदस्यों, मुझे इस बात से इन्कार नहीं कि मैंने कभी इस स्थिति की कल्पना ही न की थी। सच कहूं तो 1940 के बाद पांच साल तक मैं किसी ऐसी विधवा की खोज करता रहा था जो सचमुच ही घर गृहस्थी का सुख दे सके। ऐसा सुख जो वैलेरिया की कमी को भी भुला दे। रेम्सडेल आने के बाद एक दो बार मैंने मिसेज हेज के संवरे हुए बालों और सलीके से रहने के ढंग के बारे में सोचते हुए मन ही मन तारीफ भी की थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अपने अकेलेपन का ढिंढोरा पीटता हुआ दुनियाभर की औरतों को फंसाने के लिए इश्तहार बाजी करता था, सिर्फ बहुत जरूरत होने पर ही पेशेवर औरतों के पास जाता था।

वैसे मिसेज हेज का पत्र पहली बार पढ़ते समय मेरे मन में जो विरक्ति

पैदा हुई थी वह धीरे-धीरे अब घुलती जा रही थी। ठण्डे दिमाग से सोचने पर मैं महसूस करने लगा था कि मिसेज हेज अपनी जगह गलत नहीं। उनकी जगह कोई भी होता तो इसी तरह मेरे आकर्षण में फंस जाता। वह सिर्फ एक बारह वर्षीय बेटी की मां थी, खासी जवान थी। अभी उम्र ही कितनी थी, कि वैधव्य का ढोंग रचे रख सकती। विधवा होने का अर्थ यह तो नहीं होता कि मन की भावनाएं मर जाती हैं। अब यह बात और है कि सामाजिक मान्यताओं के बन्धन में बंधकर बहुत सी औरतें अपने मन के बांध पर इस तरह अंकुश लगाए रहती हैं कि वे अपना वैधव्य घुट-घुट कर काट देती हैं-जैसे कि मिसेज हेज काट रही थीं। मगर इसके पीछे यह भी होता है कि उन्हें बहकने का अवसर नहीं मिल पाता। मौका नहीं लग पाता। उनकी जिन्दगी में निकटता स्थापित करने वाला सुपात्र आ जाता है तो वे समस्त लोक लाज के बन्धन तोड़कर उसकी हो जाती हैं-जैसे कि मिसेज हेज मेरे साथ अपने मन का सम्बन्ध स्थापित कर गयी थीं-और अब शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने को आतुर थीं। शादी के बाद वे ऐसे ही सपने देखती होंगी।

मुझसे प्रेम और विवाह करने का उन्हें पूरा हक पहुंचता था। कारण स्पष्ट था, उन्हें इस बात की जानकारी थी कि मुझे मेरी पत्नी छोड़ गयी है, मैं विधुर का जीवन व्यतीत कर रहा हूं। इस मामले में वह मुझे अपनी बराबरी का समझ रही थीं, समझना उचित भी था। इसके अलावा मामला उम्र की बराबरी का भी था। हकीकत यह थी कि हम दोनों की उम्र की जोड़ इतनी फिट थी कि कोई भी देखकर प्रशंसा कर सकता था। कद-काठी, बनाव-श्रंगार, उठने-बैठने, बात व्यवहार में भी शार्लट अर्थात् मिसेज हेज, जिन्हें अब मैं उनके नाम शार्लट से ही सम्बोधित करूंगा, किसी तरह की कमी न रखती थीं। उनका सामाजिक स्तर भी मेरे अनुरूप था। पति ने उनके लिए अच्छा खासा घर और प्रापर्टी छोड़ी थी, जिसके सहारे वह आराम से अपना और बेटी का जीवन निर्वाह कर रही थीं, आगे करती रह सकती थी।

उनके लिए शादी बस शारीरिक आवश्यकता थी-और उस आवश्यकता पूर्ति के लिए मुझसे अच्छा सुपात्र कोई दूसरा न मिलने जा रहा था, यही वजह थी कि उन्होंने पत्र में अपनी समस्त भावनाएं खोलकर, उड़ेल कर रख दी थीं।

मैंने अब जितना ही उसके बारे में सोचा उतनी ही सुपात्र वह मुझे नज़र आने लगी। एक बात और भी थी, और वह यह कि मैं जानता था, अच्छी तरह एहसास था कि लोलिता के साथ मेरे सम्बन्धों का टांका दो-तीन, चार या ज्यादह से ज्यादह छः साल तक फिट रह सकता था।

ज्योंही वह बालिग हुई उसकी जिन्दगी में उस जैसी उम्र का कोई सपनों का राजकुमार आ सकता था–या फिर वह कहीं ब्याही जा सकती थी। अपने साथ उसकी जिन्दगी गुजरने की कल्पना ही बेकार थी।

शार्लट ने पत्र में लिखा था कि अगर मुझे उसका प्रस्ताव स्वीकार न हो तो मैं तुरन्त उसका घर छोड़कर चला जाऊं। कैसी कयामतखेज बात की थी उसने–न सिर्फ घर छोड़ कर जाने की बात कही थी, बल्कि एक प्रकार से वह शहर छोड़कर ही चले जाने का प्रस्ताव रख डाला था। उसने मुझे वापस न्यूयार्क जाने को लिख दिया था। उसे क्या मालूम था कि लोलिता के प्रति मेरे प्यार की ऐसी दीवानगी थी कि मैं उसे पाने, उससे आगे निकटता बनाए रखने के लिए दुनिया की बड़ी से बड़ी कुर्बानी कर सकने को तैयार था।

हां, तो आप समझ चुके हैं कि मैंने लोलिता के लिए ही शार्लट से शादी का मन बना लिया था–अगर आप इस बात को समझते हैं तो समझने में कोई बुराई नहीं है। वैसे यह बात भी सच है कि मैं शार्लट को अपने जीवन की आवश्यकता भी समझता था। लोलिता के जीवन से जाने के बाद कोई तो होता, जो मेरी भटकती जिन्दगी को संवारने में अपनी भूमिका अदा कर सकता। उसे अपनी जीवन संगिनी बनाकर मैं अपनी आगे की जिन्दगी गुज़ारने के ताने-बाने बुनने लगा था।

स्थिति स्पष्ट थी कि अब मैं ऐसे दोराहे पर खड़ा था जिसमें एक न एक रास्ता चुनकर ही मुझे आगे बढ़ना था। लोलिता के निकट रहने का क्या उपाय हो। बस यही, सोचते-सोचते मेरे मन में शार्लट से शादी कर लेने का विचार पुख्ता हुआ था। सोचा कि अगर मैं शार्लट से शादी कर लूं तो न सिर्फ मुझे लोलिता के साथ रहने की पूरी स्वतंत्रता मिल जाएगी बल्कि मैं उससे मनमाने ढंग से प्यार भी कर सकूंगा।

लोलिता के साथ स्वतंत्र होकर प्यार करने की कल्पना से मुझे बहुत हल्का-हल्का सा महसूस होने लगा। तब मुझे लोलिता को छूने, चूमने, सहलाने के लिए ढोंग रचने की जरूरत नहीं पड़ेगी। हर पिता से यह उम्मीद की जाती है कि वह दिन में दो-तीन बार अपनी लड़की को चूमे, थपथपाए, गाहे-बगाहे उसे सिनेमा, पार्क घुमाने ले जाए।

मेरे इस निर्णय से आप यह कतई न सोचिएगा कि मैं लोलिता को पाने के लिए शार्लट को बीवी बनाने और उसे बाद में जहर वगैरह देकर मार डालने के चक्कर में था। मेरा इरादा तो शार्लट से ब्याह करके अगले दो-तीन साल तक लोलिता से हर कीमत पर निकटता बनाए रखने का था।

शार्लट से शादी की बात दिमाग में आते ही मेरे मन में और भी तरह-तरह के चित्र बनने शुरू हो गये थे। मैं इस बात को छिपाऊंगा नहीं। ये बात दिमाग में आते ही मैं शार्लट को तो भूल गया और स्कीमें बनाने लगा कि किस तरह रात को सोने से पहले मां-बेटी दोनों को नींद की गोलियां खिला दूंगा-फिर सोई हुई लोलिता के साथ बिना किसी हील हुज्जत के जो चाहूंगा, कर सकूंगा।

जितना सोचता, मेरे सामने स्पष्ट होता चला गया कि लोलिता की खातिर मुझे शार्लट से शादी करनी ही पड़ेगी। आखिर मैंने फैसला कर ही लिया।

अचानक नागफनी के कांटे से एक नये ही विचार ने मन में अपना वजूद फैलाया। ख्याला आया कि जिसके लिए मैं यह सब करने जा रहा हूं उसे भी यह पसन्द आयेगा या नहीं ? कहीं ऐसा न हो कि इस शादी पर लोलिता को जबरदस्त विरोध हो-उसकी रजामंदी पूछे बगैर शादी कर लेने के बाद कहीं ऐसा न हो कि विषादमय ऐसी स्थिति आ पड़े कि मैं न तो दीन का रहूं न दुनिया का। यदि लोलिता को यह बात पसन्द न हुई तो वह मेरे और अपनी मां के वैवाहिक सम्बन्ध को स्वीकार न करेगी। मजबूरन उसे करना पड़ गया तो मेरे पास न फटकेगी-अपनी परछाई को भी मेरे करीब न आने देगी-ऐसी स्थिति में सारा किया धरा ही बेकार होगा।

मैंने ठण्डे दिमाग से इस पर विचार किया और अंत में निर्णय लिया कि शार्लट के आने से पहले ही मैं इस मामले में लोलिता का मन ले लूं। यह भी अच्छी बात थी कि मुझे लोलिता के कैम्प के बारे में विस्तृत जानकारी थी, वहां का पता ठिकाने के साथ-साथ फोन भी मालूम था। मैंने इस बात का अन्दाजा लगाया कि किस समय लोलिता वहां पहुंच सकती है...कितनी देर बाद वह फोन अटेण्ड करने की स्थिति में आ सकती है। मैंने फोन करने का निर्णय लिया।

नहा-धोकर कपड़े पहन लेने, और इस बात का इत्मीनान कर लेने के बाद कि लोलिता अब कैम्प पहुंच चुकी होगी और शार्लट अपनी कार से वापस आती होगी, मैंने लोलिता को फोन किया।

कैम्प इन्चार्ज ने फोन अटेण्ड किया। मैंने अपना परिचय लोलिता के गार्जियन के रूप में देते हुए कहा कि लोलिता को फोन पर बुला दिया जाए, मैं इस बात की तसल्ली करना चाहता हूं कि उसे वहां का माहौल पसन्द आया या नहीं।

दस-पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी, तब जाकर लोलिता फोन पर आयी। मैंने उसका कुशल क्षेम, वहां के माहौल के बारे में पूछ कर कहा-

"मैं तुम्हें एक सरप्राइज देने जा रहा हूं..।"

"देकर देखो...।" लोलिता ने शरारती स्वर में कहा।

"मैं तुम्हारी मां से शादी करने जा रहा हूं...।"

"नहीं..." उसने अविश्वास भरे स्वर में कहा-"यह आप क्या कह रहे हैं...।"

मैंने अपनी बात दोहरायी-उसे बताया कि शार्लट शीघ्र ही मेरी पत्नी बन जाएगी।

अब जाकर लोलिता को यकीन आया कि मैं गंभीर हूं। वह किलकारी मार कर हंसी-

"मजा आ जाएगा....।" फिर उसके हंसने की आवाज आई-"शादी कब हो रही है... ? ज़रा एक मिनट रुकिएगा, एक कम्बख्त पिल्ला बार-बार मेरी टांगों से उलझ रहा है।"

आगे सिर्फ दो-तीन मिनट ही बातचीत हो पायी। लोलिता को कैम्प के किसी आइटम में हिस्सा लेने के लिए तैयार होना था, इसलिए वह ज्यादह देर बात न कर सकी।

मैं समझ गया कि कैम्प में उसे अपनी मनचाही आजादी मिल गई है। वह पिंजरे से निकले हुए पंछी की तरह अपनी मां को भूलने के साथ-साथ मुझे भी भूल गई है।

मैं नीचे रसोईघर में पहुंचा तो मुझे प्यास लगी हुई थी। फ्रिज से बियर निकाल कर पीने के बाद मैंने रात के खाने के लिए कुछ बढ़िया चीजें खाने की सोची अतः बाजार की तरफ निकल गया।

जब लौटा तो कीमती खाना और रेम्सडेल में मिलने वाली बढ़िया से बढ़िया शराब, गाड़ी की पिछली सीट पर पड़ी हुई थी।

आकर लोलिता के कमरे में बैठ गया।

कमरे की खिड़की से बाहर सड़क पर आते-जाते लोग अच्छी तरह दिख रहे थे। अभी शाम होने में देर थी। सबसे पहले पड़ोस में रहने वाली दो लड़कियां सड़क पर गुजरीं। पिछले दो सप्ताहों से मैं इन दोनों लड़कियों को रोज सुबह-शाम इसी सड़क पर जाता देखता था। दोनों की उम्र तेरह के आस-पास रही होगी। लेकिन दोनों में से एक भी लोलिता के मुकाबले में नहीं ठहर सकती थी।

इन लड़कियों के आंखों से ओझल हो जाने के बाद एक नीले रंग

की गाड़ी आयी। हमारे पड़ोस के व्यापारी का कुत्ता गाड़ी के पीछे भौंकता हुआ दौड़ा। मुझे लगा, शार्लट वापस आ गयी, लेकिन ज्योंही गाड़ी खिड़की के नीचे से गुजरी मैं जान गया कि किसी और की गाड़ी है। फिर शोर मचाती एक बड़ी सी वैन सड़क से गुजरी।

वैन के गुजर जाने के पन्द्रह बीस मिनट तक सड़क पर सन्नाटा रहा। मैंने जिन का एक बड़ा पैग डालकर पाइनएपल जूल मिलाया और खिड़की के पास आकर खड़ा हो गया। मैंने अभी दो-तीन घूंट ही भरे होंगे कि मोड़ पर नीली सीडान आती दिखाई दी। वही मोड़, जिस पर से यह गाड़ी सुबह मेरी लोलिता को लेकर गुम हो गयी थी। मैंने दूर से देखा, शार्लट चुपचाप गाड़ी ड्राइव कर रही थी।

मैं उसके इस चुप्पी का अर्थ समझता था। उसके मन में इस समय भयानक उथल-पुथल मची रही होगी। ज्यों-ज्यों वह मकान के करीब पहुंच रही होगी उसका मन आशाओं और निराशाओं के थपेड़े के बीच डोल रहा होगा—आशा, मैं मिल जाऊंगा, निराशा, मैं चला गया हूंगा।

सात आठ मिनट बाद गाड़ी आकर पोर्च में खड़ी हो गयी। गाड़ी से बाहर निकलते ही शार्लट ने सिर उठाकर ऊपर देखा—मैं लोलिता के कमरे की खिड़की पर खड़ा था, न हंसी न मुस्करायी, सिर्फ दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गयी। उसने दरवाजे के काल बेल पर अंगुली रख दी थी।

शार्लट पति का सुख भोग चुकी थी और मैं पत्नी का, अतः हमारी शादी में ऐसी उत्साह जनक कोई बात न थी, जैसी कुंआरे लोगों की शादी में होती है। हमें महज शादी के रस्म की औपचारिकता निभानी थी—अतः तय यही हुआ था कि चर्च में चलकर सादगी के साथ विवाह कर लिया जाए। जब औरत मर्द दोनों ने ही गृहस्थी का सुख पहले ही भोग लिया हो तो उसमें धूम-धड़ाके जैसी बात शोभा नहीं देती।

शार्लट दो साल से रेम्सडेल में रह रही थी और मुझे आए हुए सिर्फ एक महीना हुआ था—उसके परिचितों को कोई विशेष उत्साह न था और मेरा कोई ऐसा दोस्त या रिश्तेदार जिसे अपना चाव पूरा करना होता, अतः हम दोनों ने रस्म पूरी करने के लिए चर्च में जाकर किस्सा खत्म कर दिया।

इस अवसर पर लोलिता को बुलाने की आवश्यकता ना तो शार्लट ने ही महसूस की ना ही मैंने।

शार्लट अब मेरी बीवी थी। उसके व्यक्तित्व की छिपी हुई पर्तें धीरे-धीरे मुझ पर खुलने लगीं। शादी के बाद उसने सबसे पहले मुझसे यह जानना चाहा कि क्या मैं ईश्वर में विश्वास करता हूं या नहीं। इस बात को तो आप भी जान गये होंगे कि मैं ईश्वर पर कितना विश्वास करने वाला जीव हूं। लेकिन मैं शार्लट के सामने अपने नास्तिक होने का ढिंढोरा पीट कर शादी का मज़ा खराब नहीं करना चाहता था, अतः गोल मोल जवाब देकर उसे सन्तुष्ट कर दिया।

उसका मेरी बात पर यकीन कर लेना ही हितकर था, क्योंकि वह पूरी तरह से धार्मिक और कहा जाए रूढ़िवादी विचारों की महिला थी, इस बात की जानकारी उसे बुरी तरह से आघात पहुंचाती कि मैं नास्तिक हूं। इस बात को जानने के बाद वह या तो खुदकशी कर लेती या मुझे तलाक देती—और इन दोनों स्थितियों में से मैं एक भी न चाहता। ईश्वर पर विश्वास न करने वाला अगर किसी से झूठ-मूठ कह दे कि वह ईश्वर पर विश्वास करता है तो इसमें हर्ज ही क्या है।

शार्लट को बात-बात में 'माफ कीजिएगा' कहने की आदत थी। मुझे लग रहा था कि उससे मेरी अच्छी निभ जाएगी, झगड़े के कोई आसार नज़र न आते थे।

आप को इस बात को जानने में जिज्ञासा हो सकती है कि पेइंग गेस्ट से पति बन जाने से मेरी स्थिति में क्या परिवर्तन आया था। मेरे में परिवर्तन आया हो या न आया हो, मगर शार्लट के व्यक्तित्व में अभूतपूर्व परिवर्तन आया था। उसके जीवन की शुष्कता और नीरसता हरियाली में बदल गयी थी। सुबह नाश्ते की मेज पर दोनों हथेलियों में चेहरा थामे हुए वह मेरी ओर देख-देखकर मुस्कराती रहती। लंच की टेबल पर उसकी आंखों से प्यार छलक-छलक कर उमड़ पड़ता—और बिस्तर में भी... । यद्यपि बिस्तर पर उसने पहले-पहले थोड़ा संकोच से काम लिया था, मुझे ही उसे खोलना पड़ा था। फिर वह ज्यों-ज्यों ज्यादह निःसंकोच होती गयी, मुझे ज्यादह से ज्यादह सुख देने के लिए व्याकुल रहने लगी।

अब यह बात दूसरी है कि उसकी बांहों में मुझे हमेशा यही ख्याल रहता था कि वह लोलिता की प्रतिकृति है। उसके सफेद चिकने पेट पर हाथ फेरते हुए मैं—यह सोच-सोचकर हैरान रहता था कि किसी समय लोलिता एक मछली की तरह इस ज़ार में बंद रही होगी। उसके साथ बिस्तर पर रहने का एक मात्र सुख यही था कि वह कई बातों में लोलिता से काफी मिलती-जुलती थी—इसलिए चरम सुख के क्षणों में, अक्सर आंखें बन्द

करके मैं यह कल्पना करने लगता कि मेरे द्रवित होते स्पर्शों के नीचे शार्लट न होकर लोलिता की ही देह बिछी हुई है। हालांकि यह सब धोखा था... मेरी मृगतृष्णा थी। एक मोटी जांघों और भारी बदन वाली सुन्दर स्त्री के साथ रोज रात को अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिए मेरे पास ऐसी कल्पना का सहारा लेने के अलावा कोई और चारा न था।

आप समझ गये होंगे कि मुझमें कोई बदलाव न आया था। लोलिता के प्रति मैं अब भी पूरी तरह से आशावान था, उसे पाने के लिए दीवाना था। शार्लट के साथ महज पति का कर्त्तव्य निभाता था–जिस्मानी जरूरत पूरी करता था, मगर मेरी हालत किसी ऐसे मिठाई खाने के शौकीन बच्चे की तरह थी, जिसे कितना भी पेट भर भोजन करा दिया जाए, उसकी नीयत मिठाई खाने पर ही लगी रहती है।

शादी को अभी एक सप्ताह भी न गुज़रा था कि शार्लट को घर सजाने का शौक चढ़ा। किसी नई-नवेली दुल्हन की तरह उसने क्राकरी, फर्नीचर, दरियों और भी न जाने किन-किन चीजों के आर्डर दे डाले। ड्राइंग रूम का तो नक्शा ही बदल दिया गया। सोने के कमरे में नया डबल बेड सजवा दिया गया।

घर में हो रहे परिवर्तनों से मुझे न तो कोई खुशी थी न लगाव। सिर्फ एक आशंका कचोटती रहती थी कि कहीं वह मकान की हर चीजों को इस हद तक न बदल डाले कि मुझे अपने और लोलिता के बीच घटी घटनाओं को स्मरण करने में अजनबीपन का एहसास हो। वैसे भी धुली हुई खिड़कियों, साफ पर्दों, चमकती दीवारों और जरूरत से ज्यादह संवरे हुए मकान को मकान से ज्यादह हास्पिटल के वार्ड की मुझे अनुभूति होती थी। मैं इस मामले में चुप ही था। मेरी चुप्पी काफी हद तक मेरे दाम्पत्य जीवन की खुशहाली के लिए कारगर थी।

शार्लट जब कभी मेरे अतीत के बारे में पूछती तो उस अवसर पर भी मैं या तो चुप्पी धारण कर लेता था या फिर इधर-उधर बात घुमा जाता। मगर यह भी मैं समझता कि मेरी चुप्पी से शार्लट की जिज्ञासा शान्त नहीं होती। तब मैंने अपनी अतीत के बारे में इधर-उधर की कहानियां गढ़नी आरम्भ कर दीं। जब कभी वह मुझसे मेरे विगत अनुभवों, मेरी प्रेमिकाओं के बारे में जानना चाहती, मैं कहानी का कोई न कोई प्लाट गढ़कर उसे सुना देता। मैंने इतनी कहानियां गढ़ीं कि अगर कोई फिल्म प्रोड्यूसर उन्हें सुनता तो अवश्य ही अच्छी खासी फिल्म उस पर बनाने की बात सोच बैठता।

लोलिता के बारे में हम बहुत कम बातें करते। शार्लट इतवार-इतवार उसे दोपहर में फोन करके उसका कुशलक्षेम मालूम कर लेती। उस बारे में भी वह मुझे बताने की आवश्यकता शायद यह सोचकर न समझती कि मैं कोई उसका सगा बाप तो था नहीं, फिर मुझे उसमें क्यों दिलचस्पी होने लगी। वह इस को न जानती थी कि इस संसार में अगर जीने लायक मेरे लिए कोई दिलचस्पी है तो वह लोलिता ही है। वह स्वयं लोलिता को लेकर बातें करने में संकोच करती थी, और मैं, मैं तो जानबूझ कर उसका जिक्र न छेड़ता था—इस बात का डर था कि मेरी दिलचस्पी का वह कहीं वास्तविक अर्थ न पकड़ ले। हालांकि यह मेरा भ्रम था, मगर मन में जो चोर था उसे क्या करता।

मैं उसके साथ लेटा हुआ उसके बालों को सहला रहा था। शार्लट ने मेरी ओर करवट बदली और मेरी छाती पर अपने होंठ रख दिये। मेरे हाथ उसकी कनपटियों से सरकते हुए उसकी गरदन पर जा पहुंचे।

"उहूं" शार्लट ने कहा। मैं कुछ बोला नहीं। उसी तरह उसकी गरदन की मखमली त्वचा पर अंगुलियां फिराता हुआ सामने दीवार की ओर देखता रहा।

शार्लट ने कहा—

"एक बात सोचती हूं..।"

"क्या... ?" मैंने पूछा।

शार्लट ने तुरन्त कोई जवाब न दिया। मुझे लगा, इतनी जल्दी प्रश्न करने पर वह शायद रूठ गयी है। मुझे बात घुमा फिराकर पूछना चाहिए था। मेरे दिमाग की बैटरी भी तो कमबख्त सिर्फ कमसिन लड़कियों को देखकर ही काम करती है। उसने कहा था—"एक बात सोचती हूं...।" मुझे उसके होंठों पर होंठ रखकर कहना चाहिए था—न कुछ मत सोचो इस समय। इस बात को कहने के बजाय मैंने "क्या ?" का प्रश्न चिह्न लगा दिया था। सोने का मजा किरकिरा नहीं करना चाहता था, अतः उसे आलिंगन बद्ध करते हुए मैंने मिठास भरे स्वर में कहा—

"बतलाओगी नहीं, क्या सोचती हो तुम...।"

शार्लट मुझसे इसी आग्रह से पूछने की प्रतीक्षा में लगती थी। उसने कहा—

"सोचती हूं, कहीं...कभी-न-कभी मेरे अन्दर वह दुबारा लौटकर आयेगा तो सही—।"

मैं समझा। समझ इसलिए गया क्योंकि शादी के बाद उसने एक दिन बताया था कि वह लोलिता के अलावा एक बेटे की भी मां बनी थी, मगर

बेटा मृत्यु को प्राप्त हो गया था। इस बात का उसे आज भी दुःख था।

उस समय, अब जबकि वह शादी-शुदा थी—अपने अन्दर, उस बेटे के लौटकर आने की मधुर कल्पना कर रही थी।

यानी मुझसे वह एक बेटे की आरजू कर रही थी। मैं उसकी बात का समर्थन करते हुए बोला—

"क्यों नहीं...अवश्य वह आयेगा।"

मेरा उत्साहित उत्तर पाकर वह प्रसन्नता से भर उठी और पूरे आवेश से मुझे आलिंगनबद्ध कर चुम्बनों की झड़ी लगा दी।

अगले दिन,

हमें लोलिता का खत मिला।

लोलिता का खत मेरे हाथ पड़ा था, अतः उसे एकान्त में मैंने तीन-चार बार पढ़ा। उसके खत से पूरा आभास मिला कि उसे कैम्प की जिन्दगी बहुत पसन्द आ गयी थी। मैंने वह खत सहेज कर रख दिया।

मैं सोच रहा था कैम्प की लड़कियों के साथ हंसती खिलखिलाती, लड़कियों के साथ पहाड़ियों पर चढ़ती, भागती-दौड़ती लोलिता को क्या कभी मेरी याद आती होगी ?

हमारा दाम्पत्य जीवन इसी तरह एक-एक दिन करके तेजी से कटता जा रहा था। हमारे घर के नज़दीक एक झील थी, झील के चारों ओर जंगल था। जुलाई के आखिरी दिनों में जब गर्मी अधिक बढ़ गयी तो हम दोनों ने वक्त काटने के लिए वहां जाना शुरू कर दिया। हम वहां झील में साथ-साथ तैरते।

जुलाई के चौथे मंगलवार को हम गाड़ी सड़क के नज़दीक पार्क कर देने के बाद, चीड़ के जंगल से होकर झील की ओर जा रहे थे, तभी शार्लट ने अपनी सहेली जीन का जिक्र छेड़ दिया। उससे ही इस बात की मुझे जानकारी मिली थी कि जीन को पेंटिंग का खासा शौक था। कई बार तो वह अपना खब्त पूरा करने के लिए उल्टा सीधा प्रयोग करने लगती थी। इस बार भी शार्लट ने जीन की चित्रकला से ही बातचीत शुरू की—

"पिछली बार एक चित्र बनाने के लिए उसने लैसली को सुबह पांच बजे इस झील में नहाने के लिए मजबूर कर दिया था...।"

"अरे ! पानी कितना ठण्डा रहा होगा।" मेरे मुंह से विस्मय के भाव

में निकल गया।

"तुम्हें पानी के ठण्डक की पड़ी है, मैं चित्रकला की बात कर रही हूं। अरे, वह आर्टिस्ट है, आर्टिस्ट। उसे इन छोटी-छोटी बातों की परवाह कब है...।"

वह देर तक जीन की बातें करती रही और मैं सोच रहा था कि वह लोलिता की बातें करे। अब हम दोनों चीड़ के झुरमुट पार करने के बाद खुले में आ गये थे। झील थोड़ी दूर रह गयी थी—मैंने पूछा—

"क्या लोलिता का कोई खत आया ?"

"कई बार सोचती हूं—" वह मेरी बात को अनसुनी करती हुई बोली, "कि हमें अपने घर में ऐसी नौकरानी रख लेनी चाहिए, जो चौबीसों घण्टे घर में रहे और घर की देखभाल भी करे।"

नौकरानी रखने की धुन शार्लट को कई दिनों से समाई हुई थी। अपनी एक सहेली के यहां इस बात की चर्चा सुनकर उसे भी तुनक सवार हुई थी। वह समझती थी कि जब तक घर में चौबीसों घण्टों की कोई नौकरानी न होगी, घर की शानो-शौकत ही न बनेगी। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए वह बोली—

"सोचो तो सही, उसके घर आ जाने से कितनी आसानी हो जाएगी— और हम तुम जब, जहां जी चाहेगा, बेझिझक आ जा सकेंगे।"

"लेकिन वह रहेगी कहां... ?" मैंने पूछा।

"क्यों ? हमारे घर में...।"

"हमारे घर में, हमारे घर में जगह कहां है— ?"

"अरे हटो...।" शार्लट ने मेरी तरफ देखकर इस तरह मुस्कराते हुए कहा जैसे मैं कोई नासमझ बच्चा हूं और घर गृहस्थी के मामले में बिल्कुल अनभिज्ञ हूं। उसने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"हमारे घर में जगह है...और फिर अब तो लोलिता के न रहने से उसका कमरा भी खाली रहेगा।"

"लोलिता के न रहने से... ?" मैं चौंका—"लोलिता के न रहने वाली बात मेरे पल्ले नहीं पड़ी...।"

"ओह, मुझे सोचना चाहिए था कि—तुम्हें अभी इस बात की जानकारी नहीं है। दरअसल, मैंने तुम्हें बताया जो नहीं है। मैं पिछले सप्ताह से लोलिता के लिए बोर्डिंग हाउस में दाखिल कराने के लिए प्रयत्नशील थी, बोर्डिंग हाउस में उसके लिए सीट बुक कराने की बात मैंने कर ली है। कैम्प से सीधा वह बोर्डिंग हाउस चली जाएगी, इस बारे

। मैंने फोन पर उससे बात करके उसकी सहमति भी ले ली है। अगर वह वापस लौटकर आती भी है तो एकाध दिन के लिए ही आयेगी..।"

इस खबर ने मेरे चेहरे पर सफेदी पोत दी। मेरे अन्दर कैसी भयानक उथल-पुथल मच गयी, इससे बेखबर शार्लट अपनी धुन में कहे जा रही थी–

"पिछले कुछ दिनों से उसका पढ़ाई-लिखाई का प्रोग्राम इतना ढीला पड़ गया है कि अब उसे बोर्डिंग हाउस में रखने के अलावा मेरे सामने कोई विकल्प नहीं रह गया है। वहां रहकर वह पूरी तरह से अनुशासन में रहेगी, समय से उठना, खाना-पीना, खेलना और पढ़ाई करना। वहां वह अंकुश में रहेगी, यहां रहकर वह निरंकुश होती जा रही थी–आखिर उसे भी तो किसी के पल्ले बंधना है, अगर ऐसा ही आगे भी चलता रहा तो उसके करम तो फूटेंगे ही, जिसके पल्ले बंधेगी वह भी अपने भाग्य को रोएगा ..।" शार्लट देर तक लोलिता को लेकर–ही बस जिक्र करती रही, जबकि मैं उसके शब्दों को बहुत कम सुन पाया था।

मेरा दिमाग सांय-सांय कर रहा था। इतना परेशान हो गया था कि कुछ देर के लिए शार्लट से अलग हो जाने में ही भलाई थी। मैं इतना बड़ा अभिनेता न था कि अपने मनोभावों को दबा जाने में सफल हो जाता। और वे मनोभाव शार्लट पर उजागर होना कोई अच्छी बात न थी।

मैंने यह भी सोचा कि मुझसे ज्यादह बड़ी अभिनेत्री तो शार्लट रही, जिसने गुज़रे सप्ताह में चुपके-चुपके लोलिता को अपने से दूर रखने की योजना तैयार कर डाली और मुझे हवा तक न लगने दी। शायद इस मामले में उसकी शादी कर लेना आड़े आ गयी थी। वह नहीं चाहती थी कि किशोरावस्था में कदम रख चुकी बेटी उसकी नयी-नयी शादी की रंगरेलियां देखे–बेटी के सामने उसे नई ब्याहता का कार्य-कलाप करते संकोच था।

अब मुझे भी अभिनय करना पड़ा। मैंने चौंकते हुए कहा–"अरे, मैं मालिश का लोशन तो गाड़ी में ही भूल आया।" मैंने कहा और लौटकर गाड़ी की ओर चल दिया।

"जल्दी आ जाना, मैं यहीं इन्तजार कर रही हूं..।" वह मुझे जाता देखकर बोली।

शार्लट से अलग होकर जंगलों में इधर-उधर घूमते हुए मैं सोचने लगा कि अब क्या किया जाए ? इतने दिनों तक बेकरारी से लोलिता की प्रतीक्षा करने का अगर यही परिणाम सामने आना था तो मैंने शार्लट से शादी ही क्यों की थी ? अगर लोलिता कैम्प से वापस आकर सीधे बोर्डिंग हाउस चली जाएगी या एक दो-दिन के लिए आकर भी जाती है तो मैं

क्या करूंगा ? मुझे पहले अपने आप पर गुस्सा आया। फिर सोचा, गुस्सा करके क्यों खून जलाया जाए, क्यों न शार्लट को किसी तरह इस बात के लिए राजी किया जाए कि वह उसे बोर्डिंग हाउस न भेजे। मैं सोच रहा था लोलिता को घर में रखने के लिए क्या युक्ति भिड़ाई जाए ? क्या यह नहीं हो सकता कि मैं उसकी पढ़ाई-लिखाई की जिम्मेदारी ले लूं, तब वह उसे घर पर रखने के लिए राजी हो जाए। एक बार उसने खुद कहा था कि मैं उसे पढ़ा दिया करूं।

यह भी ख्याल आया कि यह बात उसने तब कही थी जब हमने शादी नहीं की थी। अब उसने मुझसे शादी कर ली है..अपनी ज़वान होती बेटी को, शादी के मधुर क्षणों में अपने साथ रखते हुए शार्लट को हिचक है-सोचती है कि उसकी ऐश में व्यवधान पड़ेगा, तभी उसे वह बोर्डिंग हाउस भेज रही है। पढ़ाई-लिखाई ठीक से न करने का तो बस एक बहाना है।

मैं जितना ही इस बारे में सोच रहा था, उतना ही परेशान हो रहा था, साथ ही उलझ भी रहा था। मुझे बातचीत का कोई विषय ही न सूझ रहा था जिसके आधार पर लोलिता के बारे में विस्तार से बातें करके उसे घर पर रोकने की बात की जा सकती।

यह बात सही थी कि शार्लट की जब से मुझसे शादी हुई थी वह मुझसे बेहद प्यार करती थी, लेकिन यह बात भी सही थी कि कई मायनों में वह मुझे बेवकूफ भी समझने लगी थी। शायद अधिकांश बीवियां अपने पतियों को किसी बिगड़े हुए बच्चे की तरह प्यार करने के साथ-साथ डांटते-डपटते हुए रखना पसन्द करती हैं। हालांकि बैलेरिया भी मेरी पत्नी रह चुकी थी। मैंने इस बात को भी सोचा कि शार्लट और बैलेरिया में बहुत बड़ा फर्क था। बैलेरिया मेरी पहली बीवी थी-और शार्लट दूसरी।

पत्नियों के बारे में कहा गया है कि-फर्स्ट वाइफ इज वाईफ, सेकेण्ड वाइफ इज फ्रेण्ड, थर्ड वाइफ इज मास्टर एण्ड फोर्थ इज मिडवाइफ। शार्लट मेरी दूसरी पत्नी थी, वह मेरे साथ मित्रवत् व्यवहार कर रही थी तो कोई ताज्जुब की बात न थी। मुझे उसके इस तरह का व्यवहार करने पर खीझ होती थी, मगर उसके साथ डाट-डपट या क्रोध करने से मामला बिगड़ जाने का अंदेशा था। वह उन औरतों में से थी जो दुःख तो सारी उम्र हंसते-हंसते बर्दाश्त कर सकती थी, मगर अपमान का घूंट एक मिनट भी सहन न कर सकती थी। जिन स्थितियों में मैं चल रहा था, उसमें मेरे ज़रा से संयम से काम लेने का अन्जाम डायवोर्स पर जाकर खत्म हो, यह सरासर नासमझी भरी बात होती। डायवोर्स के बाद

एक दिन भी मेरा उस घर में ठहरना सम्भव न होता, और ऐसा होने पर लोलिता, माई हार्ट से मुझे हमेशा के लिए हाथ धोना पड़ता।

लोलिता ! हां, लोलिता को लेकर ही तो मेरे विचारों की घुड़दौड़ चल रही थी। उसी लोलिता के बारे में मैं बेताबी में भरा सोच रहा था जो कैम्प के बाद अब बोर्डिंग हाउस में जाने वाली थी।

विचारों के उहापोह में डूबा हुआ मैं जिस समय झील के पास पहुंचा, शार्लट पानी में पांव डुबोए, किनारे बैठी थी। वह बैठे-बैठे पानी में फेंकने के लिए कोई कंकर ढूंढ रही थी।

"मालिश का लोशन कहां है.. ?" मिट्टी कुरेदने से कीचड़ में लिथड़ी अंगुलियों को पानी की सतह पर छपछपाते हुए उसने पूछा।

"लोशन ! लोशन तो शायद घर पर ही भूल आये..।" मैं साफ झूठ बोल गया।

"आओ तैरें...।" शार्लट ने कहा और पानी में कूद गयी। मैं भी उसका साथ देने के लिए पानी में उतर गया। वह पानी में तैरते समय बहुत चुलबुली हो जाया करती थी—"आओ... यहां गहरे पानी में... !" वह झील के बीच में पहुंचते हुए बोली।

मेरा दिल चाहा कि गहरे पानी में चला जाऊं और शार्लट की बांह मरोड़कर या पांव खींचकर उसे पानी में डुबो दूं। लेकिन हिम्मत नहीं हुई।

फिर थोड़ी देर बाद हम वापस लौट आए।

मुझे लगा था मुंह मांगी मुराद मिली। बोर्डिंग हाउस से फोन आया था, और कॉल मैंने ही अटेण्ड की थी। उधर से जो कहा गया, सुनकर मैं प्रसन्नता से भर उठा। उधर से कहा गया—

"ठीक है, कृपया इस बात को जरा बच्ची की मां से भी कह दीजिए ...।"

मैंने आवाज देकर शार्लट को बुलाया और बोर्डिंग हाउस से आये फोन की बात कहकर फोन उसके हाथ में थमा दिया। उधर से वही बात दोहरायी गयी, जो मुझसे कही गयी थी।

"मगर—पहले तो आपकी ओर से यकीन दिलाया गया था...।"

शार्लट ने विरोध जताते हुए कहा—"कि सितम्बर में ही मेरी बेटी को बोर्डिंग हाउस में जगह मिल जाएगी...।"

"हमने सारे फार्म अब छांटे हैं—और पता चला है कि वे काफी पहले से भरे गये थे—पहले से आये फार्मों को पहले स्थान देना हमारा फर्ज़ बन जाता है। यदि आप अपनी बेटी को दाखिल कराना ही चाहती हैं तो फार्म भरकर हमारे यहां जमा करा दें—जनवरी के लिए हम उसकी सीट सुरक्षित कर देंगे...।"

शार्लट का मूड ऑफ हो गया था। उसने जनवरी में दाखिले की बात पर कोई रुचि न दिखाते हुए कहा—"ठीक है, हम ऐसा ही करेंगे...।" उसने फोन रख दिया।

शार्लट ने फोन रखकर मेरी ओर घूमते हुए कहा—

"न जाने कैसे लोग हैं, पहले तो विश्वास दिलाया था कि लोलिता को सितम्बर में बोर्डिंग हाउस में वे दाखिला दे देंगे, अब कहते हैं जनवरी में कोशिश कर सकते हैं।"

मैं इस बारे में क्या कहता। मेरी तो मन मांगी मुराद पूरी हुई थी। मैंने ऐसा भाव दर्शाया जैसे उसके साथ सहानुभूति जता रहा हूं।

यूं मन ही मन मैं खुश था, पर इस बात के लिए सशंकित था कि शार्लट अगर लोलिता को अपने और मुझसे दूर ही रखना चाहती है तो किसी न किसी बहाने से वह फिर भी उसे दूर रखने की कोशिश करेगी।

खैर, जब ऐसा कोई अवसर आयेगा, तब की तब देखी जाएगी—मैंने मन ही मन में सोचा—फिलहाल तो चिंता की स्थिति टल गयी है।

इस बीच, पिछले कई दिनों से मैं एक डाक्टर से सम्पर्क बना चुका था। डाक्टर भी कुछ झक्की किस्म का था। आप पूछ सकते हैं कि डाक्टर के पास मुझे जाने की आवश्यकता क्यों पड़ गयी थी ? क्या मुझे कोई बीमारी हो गयी थी ?

इसे मेरी बीमारी ही समझ सकते हैं। मैं मानसिक तौर पर बीमार था—पर अपनी बीमारी का इलाज कराना डाक्टर के पास जाने का कारण न था। मैं तो उतावला था अपनी उस जलपरी के लिए जो लम्बी जुदाई के बाद घर लौटने वाली थी। उससे उन्मुक्त रूप से सम्पर्क बनाने की तैयारियों में मैं अभी से जुट गया था।

जब से वह गयी थी, उसके वापसी के स्वागत की मैं पूरी तैयारियों में जुटा हुआ था। शार्लट से शादी करने के बाद से ही मैं इस समस्या का हल ढूंढ रहा था। सोचा करता था कि जब वह वापस आएगी तो मैं उसे कैसे प्यार करूंगा ? बहुत सोचने समझने के बाद मैंने नींद की गोलियां इस्तेमाल कराने का फैसला किया था। यह इस्तेमाल मैं शार्लट

पर करा रहा था, लोलिता के आने पर उसे कराने वाला था। पिछले कुछ दिनों से डाक्टर से गोलियां ला-लाकर शार्लट को खिला-खिलाकर मैं उसकी प्रतिक्रिया जानना चाह रहा था।

योजना यही थी कि लोलिता के वापस आने के बाद उसकी मां को सरेशाम से ही नींद की गोलियां खिलाकर नींद में डुबो कर मैं लोलिता से मनचाहा प्यार करूंगा-फिर उसे भी नींद की गोलियां देकर, उसके बेहोशी की नींद सो जाने के बाद उसका सब कुछ हासिल कर लूंगा, जिसके लिए मैं मरा जा रहा था।

शार्लट पर नींद की गोलियों को इस्तेमाल कराना मेरे लिए इसलिए भी आसान था क्योंकि उसे हमेशा ही किसी न किसी बीमारी का वहम बना रहता था। ऐसी वहमी औरत को दवा टॉनिक के नाम पर कुछ भी खिला देना कोई भी मुश्किल बात न थी। पिछले कई दिनों से मैं उस पर गोलियों की मात्रा बढ़ाता जा रहा था। पिछली रात को जो गोली मैंने शार्लट को दी थी, उससे वह चार घण्टों तक लगभग बेहोश पड़ी रही थी। इन चार घण्टों में मैंने फुल स्पीड पर रेडियो चलाया था, तेज टार्च की रोशनी उसके चेहरे पर फेंकी थी। और उसके नाक के बहुत करीब हथेली रखकर यह देखने की कोशिश की थी कि गोलियां सचमुच ही उस पर असर कर रही हैं या नहीं।

शार्लट ने चूं तक न की थी। मैं इन गोलियों का एक डिब्बा खरीदने का फैसला करने वाला था कि मेरे दिल में एक और बात आयी। मैंने आहिस्ता से शार्लट को चूमने की कोशिश की। अभी मेरे होंठ उसके होंठों पर अच्छी तरह टिक भी न पाये थे कि उसने इस तरह आंखें खोल दीं जैसे मुझे उल्लू बनाने के लिए ही वह दो सौ चालीस मिनटों से आंखें बन्द किये रहने का ढोंग कर रही हो।

मैं इस तरह पकड़े जाने से मन ही मन घबरा गया, लेकिन मेरी कमर को कसने वाली शार्लट की बांहों ने कम से कम उस समय की परेशानी खत्म कर दी थी।

अगले दिन मैं बड़ी देर तक सोचता रहा कि शार्लट के यकायक आंख खोल देने का क्या रहस्य है। लेकिन बहुत सोचने पर भी रहस्य की पर्तें खुलती हुई न दिखी तो हार मान कर दोबारा डाक्टर के पास जाने का मैंने फैसला किया।

जिस समय मैं डाक्टर के यहां पहुंचा, वहां से लगभग सभी मरीज जा चुके थे। सिर्फ दो अधेड़ औरतें बैठी हुई थीं। डाक्टर ने मुझे देखकर

मुस्कराते हुए मेरा स्वागत किया और बोला–

"कहिए, आपको नींद आई या नहीं ?"

मैंने डाक्टर के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए अभिवादन अवश्य किया, मगर उसके प्रश्न का उत्तर न दिया। मैं डाक्टर से अकेले में बातचीत करना चाहता था। जब वे दोनों औरतें चली गयीं तब डाक्टर ने मुझसे दोबारा पूछा–

"हां साहब, तो अब बताइए, उन गोलियों से कोई फायदा हुआ या नहीं ?"

"जी, दो तीन घण्टों के लिए तो नींद आई थी, लेकिन फिर दोबारा आंख खुल गयी। यूं समझिए रात दस बजे सोया और दो बजे के आसपास उठ गया था–उसके बाद तो नींद न आई।"

डाक्टर को कुछ हैरत सी हुई, मैंने उसे बता रखा था कि मैं अनिन्द्रा का मरीज हूं। सारा दिन सख्त मेहनत करने के बावजूद मुझे भली–भांति नींद नहीं आती। पिछले काफी दिनों से मैं इसी डाक्टर से गोलियां ले–लेकर शार्लट पर प्रयोग कर रहा था। पिछली बार डाक्टर ने मुझे एक स्पेशल डोज दी थी।

"अजीब बात है। यह कैसे हो सकता है कि आप पर इन गोलियों का असर न हुआ हो ?"

"जी, मैंने कब कहा कि असर नहीं पड़ा। अगर असर न पड़ता तो मुझे चार घण्टे नींद कैसे आती ? मगर डाक्टर साहब, चार घण्टे बहुत कम हैं। कुछ ऐसा कीजिए कि कम से कम सात–आठ घण्टे मैं चैन की नींद सो सकूं...।"

मेरा ख्याल था कि डाक्टर कोई दूसरी दवाई देगा, लेकिन डाक्टर उसी तरह बैठा रहा और मेज की दराज खोलकर बन्द करने के बाद बोला–

"आप शतरंज क्यों नहीं खेलते ?"

मैं चुप रहा।

"शतरंज अच्छी नहीं लगती तो गोल्फ खेला कीजिए...।" डाक्टर ने मुझे चुप देखकर कहा।

"गोल्फ या शतरंज मेरी बीमारी का इलाज नहीं है डाक्टर साहब। ये सब काम मैं महीनों से करता आ रहा हूं।"

मेरा उत्तर सुनकर डाक्टर पहले से ज्यादह सोच में पड़ गया शायद वह फैसला कर रहा था कि मुझे कौन सी गोली दे। अचानक वह उठा और बोला–

"लगता है आपको स्पेशल गोली देनी ही पड़ेगी। यह गोली आम आदमियों के लिए नहीं बनाई गई है। इसे केवल कलाकार खाते हैं, जिनका

मानसिक तनाव इस कदर....।"

"जी, मैं जानता हूं.." मैंने डाक्टर की बात बीच में ही काटते हुए कहा–"यूनिवर्सिटी में रहते हुए मुझे ऐसे बहुत से लोग मिलते रहे हैं...।"

"हां-हां.. अच्छी बात है, तो मैं आपको तीन गोलियां देता हूं–उन्हें खाकर देखिए...।"

मैंने गोलियां लीं और दवाखाने से बाहर आ गया। पता नहीं क्यों मुझे इस बार लग रहा था कि इन गोलियों से मेरा काम सिद्ध हो जाएगा।

घर पहुंचते ही मैंने जोर से सीटी बजाई। शार्लट को मेरा यह सीटी बजाना बहुत अच्छा लगता था। मैं जब भी बरामदे में खड़ा होकर इस तरह सीटी बजाता तो वह दरवाजे पर आ खड़ी होकर मेरी ओर यूं देखती जैसे मैं उसके लिए जान हथेली पर लिए खड़ा हुआ अट्ठारह बीस साल का रोमियो हूं।

लेकिन उस समय उसकी ओर से सीटी की कोई प्रतिक्रिया सामने न आयी। शायद कही गयी हो। मैंने अपने आपसे कहा–पर मुझे बताए बगैर कहां जा सकती थी। मैं अन्दर चला आया। दरवाजा खोलने से पहले मैंने एक और सीटी बजायी, इस बार भी जवाब न मिला तो मैंने दरवाजा खोल दिया।

शार्लट अन्दर कमरे में बैठी थी। मेज पर अधखुला पेन और चार कागज पड़े थे। शायद वह खत लिख रही थी। शार्लट को खत लिखने का खास शौक था। कोई दिन ऐसा न जाता था जब वह एक दो खत न लिखती रही हो।

मुझे अन्दर आता देखकर उसने सिर्फ गरदन घुमाकर मेरी ओर देखा। उसकी आंखों में गुस्से की परछाइयां साफ तौर पर झलक रही थीं।

मुझे कुछ हैरानी हुई।

"आ गये....आइए..आइए....वहां क्यों खड़े हैं ? मैं बेवकूफ, जाहिल, गधी, गंवार, लेकिन आपको खा तो नहीं जाऊंगी।"

मेरी समझ में नहीं आया कि उसकी नाराज़गी का कारण क्या है।

"मुंह बनाए क्या खड़े हो ? मैं भोली-भाली अब तुम्हारी बातों में आने वाली नहीं। मुझे मालूम न था कि तुम इतने झूठे और दगाबाज हो, अगर मुझे मालूम होता तो मैं तुमसे शादी करने की गलती कभी न करती।"

"लेकिन आखिर बात क्या हुई ?" मैंने इतनी देर में पहला सवाल किया।

"बात, बात जानना चाहते हो ? यह क्या है।" कहते हुए उसने कुछ कागज मेरी ओर उछाल फेंके।

मैंने कागजों की ओर देखा–एक बार तो सचमुच घबरा गया–ये कागज मैंने अपनी डायरी में रखे थे–किसी तरह सरक कर बाहर आ गये थे और उसके हाथ लग गये थे। उन कागजों को देखकर मैं डरा कि कहीं पूरी डायरी तो उसके हाथ नहीं लग गयी है। उस डायरी में मैं नित्य की घटनाओं को दर्ज करता था–डायरी में लोलिता को लेकर सारी बातें लिखी हुई थीं। मेरा चेहरा धुंआ हो गया था, जिसे घुमाकर मैंने तुरन्त अपने भाव शार्लट से छुपाये और तेज कदमों से अपने कमरे की ओर चला गया।

मैंने तकिये के नीचे हाथ डाला। डायरी अपनी जगह सुरक्षित थी।

मैंने चैन की सांस ली और नीचे चला आया।

शार्लट उस समय फोन पर जोर-जोर से बोल रही थी। मैंने सुना। शायद कोई आर्डर कैंसिल किया जा रहा था। मैं वहां से हट आया।

उससे दोबारा सामना होने पर मैंने अपना दिमाग ठण्डा रखते हुए कहा–

"तो तुम मेरी और अपनी, दोनों की जिन्दगी बरबाद करने पर तुली हुई हो...।"

उस समय शार्लट ने मेरी ओर पीठ कर रखी थी। मैंने मद्धिम आवाज में अपनी बात जारी रखी–"तुम न तो कुछ सोचती हो, न कुछ समझती हो। जो मुंह में आता है बक देती हो। ये कागज जिन्हें लेकर तुमने इतना बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया है, सिर्फ मेरे नावल के नोट्स हैं। मैंने सोचा था, अब तुम्हारे साथ रहकर मेरी जिन्दगी में पहली बार जो ठहराव आया है, उसका फायदा उठाकर कुछ मौलिक चीजें लिखूंगा। बड़े दिनों से इस नावल के प्लाट पर काम करने की हसरत थी, लेकिन तुमसे चैन मिले तब न। पता नहीं क्यों, बात का बतंगड़ बनाकर बैठ जाती हो।" कहते-कहते मैंने उसकी तरफ देखा। मेरा ख्याल था कि इतनी लम्बी स्पीच के बाद उस पर कुछ न कुछ असर जरूर पड़ेगा।

पर वह उसी तरह खड़ी रही। खड़ी भी कहां रही पुनः उसी जगह पहुंच गयी जहां बैठी वह लिख रही थी। मैं उसके पीछे-पीछे पहुंचा। देखा, वह मेज पर बैठकर कागज पर पुनः कुछ लिखने लगी है। टिकट लगे दो लिफाफे टेलीफोन के पास पड़े थे। मैं समझ गया कि वह खत लिख रही थी। दो खत लिखने के बाद भी उसका मन न भरा था तो तीसरा लिखना शुरू कर दिया था।

मैंने अपनी बात की कोई प्रतिक्रिया उस पर न पायी तो सोचने लगा कि अब क्या करूं ? मुझे प्यास लगी थी, रसोईघर की ओर बढ़ा। रसोई

घर में पहुंच कर फ्रिज खोलते ही ख्याल आया कि स्कॉच के दो पैग बनाकर शार्लट के पास ले चलना चाहिए। उसे स्कॉच बहुत पसन्द थी। स्कॉच का पैग पीते ही उसका मूड ठीक हो जाने वाला था। उसके लिए स्कॉच का पैग तैयार करने से पहले मैंने बियर का एक पैग गले के नीचे उतारा। फिर स्कॉच के दो पैग तैयार किये।

दोनों हाथों में दो पैग और बगल में बोतल दबाए मैं डाइनिंग रूम की ओर यह सोचता हुआ बढ़ रहा था कि शार्लट अब भी न मानी तो क्या करूंगा।

"यह लो, मैं तुम्हारे लिए स्कॉच के पैग लाया हूं...।" डाइनिंग रूम में कदम रखते ही मैंने ऊंची आवाज में कहा।

लेकिन कोई जवाब न मिला।

वह वहां न थी।

मैंने डाइनिंग रूम से गुजर कर हाल की ओर बढ़ने का निर्णय लिया—सोचा शायद वह अन्दर चली गयी होगी—दोनों हाथ फंसे हुए थे, अतः पैर के पंजे दरवाजे में अड़ाने और कोहनी से दरवाजा खोलने के बाद मैंने ऊंची आवाज में कहा—

"कहां हो...?"

मैं आगे इससे भी तेज आवाज़ में उसे पुकारता, तभी पीछे फोन के घण्टी के बज उठने की आवाज आयी।

घण्टी बज रही थी—शार्लट का कहीं पता न था—मैंने पैग करीब के स्टूल पर रख, बढ़कर फोन उठाया।

फोन उठाते ही दूसरी ओर से मैंने आवाज़ सुनी—

"हैलो, मैं टॉमसन बोल रहा हूं...लैसली टामसन...।"

लैसली टामसन हमारा पड़ौसी था।

"जी कहिए..."

"मिसेज हम्बर्ट अभी-अभी एक कार के नीचे आ गई हैं..।"

"क्या बकते हो...।" कहने को तो मैं कह गया, मगर याद आया कि कहीं वह बुरा न मान गया हो, मैंने अपनी आवाज सम्भाली, "आप क्या कह रहे हैं। शार्लट तो अभी-अभी यहां बैठी थी।"

उसने बुरा न मानते हुए अपनी बात दुहरा दी। वह उस समय के मेरे मनोभावों को अच्छी तरह जानता था। दुर्घटना की खबर सुनने के बाद इन्सान बौखला जाता है, इस सहज बात को वह शायद जानता था।

मेरे मन-मस्तिष्क में सन्नाटा सा छा गया।

"आप जल्दी आ जाइए..।" टेलीफोन पर आवाज गूंजी और कनेक्शन कट गया।

"शार्लट....शार्लट...।" मैंने दो तीन बार चिल्लाकर पुकारा।

लेकिन मकान में मेरी आवाज सिर्फ गूंजकर रह गयी।

हड़बड़ाते हुए दरवाजा खोलकर मैं मकान से बाहर आया और टॉमसन के मकान की ओर बढ़ा।

जिस समय मैं सड़क पार करने के बाद टॉमसन के मकान के करीब पहुंचा तो वहां कुछ अजीब ही नजारा था। सड़क के उस ओर एक बड़ी काली गाड़ी पटरी पर चढ़ी उलटी पड़ी थी। गाड़ी के दोनों दरवाजे किसी फेंक दी गई किताब के पन्नों की तरह खुले पड़े थे। कार की दाहिनी ओर एक बुड्ढा आदमी औंधा पड़ा था। अच्छे कपड़े पहने जिस मजे से वह बुड्ढा लेटा हुआ था, उसे देखकर यह अन्दाजा लगाना मुश्किल नहीं था कि बुढ़ऊ कुछ देर पहले ही परलोक सिधार गये हैं।

आदमियों की भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। टॉमसन पुलिस के दो सिपाहियों के साथ खड़ा बातचीत कर रहा था। बाद में मालूम हुआ कि ये सिपाही पास में ही किसी चौराहे पर लोगों के लाइसेंस चेक कर रहे थे, इसलिए दुर्घटना की खबर पाते ही इतनी जल्दी आ पहुंचे थे।

मैं टॉमसन के पास जाकर कुछ आगे झुका ही था कि शार्लट की लाश पड़ी दिखाई दी। कार का पहिया उसके सिर से गुजर गया था। सिर्फ उसका धड़ पहचाना जा सकता था, सिर की जगह कुचली हुई हड्डियों और मांस के लोथड़े थे।

मैं शार्लट के चेहरे की तरफ देखकर कुछ सोचने की कोशिश कर ही रहा था कि एक आदमी ने मुझे तीन खत पकड़ाए। ये वही खत थे जिन्हें डालने के लिए शार्लट इतनी जल्दी सड़क पार कर लेना चाहती थी कि उसे इर्द-गिर्द और ट्रैफिक का कुछ भी ध्यान न रह गया था। बेचारी शार्लट।

उसी समय डाक्टरों की टीम आ पहुंची। डाक्टरों ने लाश का मुआयना किया। मैंने अपने आपको पूरी तरह नियंत्रण में रखा और जब पुलिस वालों ने मुझसे पूछताछ की तो बिना लड़खड़ाए सारे सवालों का जवाब देता चला गया।

शार्लट की लाश जिस समय घर में लाकर रखी गयी, उसकी लाश पर पड़ी हुई चादर और डूबते हुए सूर्य का रंग बिल्कुल एक जैसा था।

शार्लट की सहेली जीन और उसका पति जॉन इस बात को महसूस करके कि मुझे शार्लट की आकस्मिक दुर्घटना में मौत का कितना गहरा

सदमा पहुंचा हुआ होगा, वे मुझे सान्तवना देने के लिए मेरे पास ही टिक गये थे। शार्लट की लाश नीचे हाल में ही रखवा दी गई थी।

मैं अपने कमरे में आ गया।

वे हमारे बेडरूम में चले गए।

कहने को तो जॉन और जीन मेरे दुःख में हिस्सा बंटाने के लिए रात में मेरे यहां ठहर गये थे, लेकिन देर तक उनके कमरे से जिस तरह की आहटें सुनाई देती रहीं उससे इस बात का अनुमान लगाना कठिन न था कि मेरा दुःख हल्का करने के साथ-साथ वे अपना गम गलत करने की कोशिश में अकेले होते ही बेहिचक जोर-शोर से जुट गये थे।

शार्लट के अंतिम संस्कार करने और दूसरे रस्मो रिवाज की अदायगी दूसरे दिन हुई। दोपहर जब हम शार्लट की लाश दफना चुके तो जॉन और जीन हमसे कुछ देर की छुट्टी लेकर अपने घर गये—इस तरह से कुछ देर के लिए मैं अकेला छूट गया। इसे मैं अपना सौभाग्य कहूंगा कि शार्लट के अपने पड़ोसियों के सम्बन्ध बहुत अच्छे थे वरना अपना दुःख प्रकट करने आने वाले लोग रो-रो कर कमरे का फर्श तर कर देते।

जीन और जॉन के दोबारा घर से लौट कर आने तक मैं अपने कमरे में आराम से पड़ा रहा। किसी ने मुझे डिस्टर्ब नहीं किया।

वे दोनों शाम को लौट कर आए। जीन ने कॉफी बनाई और कॉफी पीते समय रस्म निभाने के लिए शार्लट की बात छेड़ दी। उन्हें शायद भ्रम था कि अगर मुझे अकेला छोड़ दिया जाएगा तो मैं शायद शार्लट के गम में आत्महत्या कर लूंगा। मेरे मन का दुःख हल्का करने के लिए वे मरने वाली की चर्चा करते रहना चाहते थे।

और मैं,

मुझे सामाजिक ढोंग को निभाना पड़ रहा था। मेरे सामने लोलिता का मुस्कराता हुआ चेहरा फिर रहा था, उसके लिए शार्लट की सहेली और उसके पति को विश्वास में लेना बहुत आवश्यक था। मुझे उन्हें इस बात के लिए पूरी तसल्ली करानी थी कि शार्लट की मौत के बाद लोलिता की परवरिश का मुझसे सुपात्र कोई और नहीं।

जब वे अपने घर गये थे, उस बीच में इस मसले पर मैंने खुद को पूरी तरह तैयार कर लिया था। मन ही मन एक कहानी गढ़ ली थी। मुझे शार्लट की किताबों में से कई वर्ष पूर्व का, पूरी जवानी के दिनों का एक फोटोग्राफ मिला था—जिसे उन दोनों को दिखाकर मैंने—एक छोटी सी कहानी गढ़ ली थी कि मेरी और शार्लट की मुलाकात अब की नहीं पन्द्रह

वर्ष पूर्व की थी। उस समय हम दोनों जवान थे—अविवाहित थे। पहली नज़र में हम दोनों एक-दूसरे के हो गये थे। पिस्की में हमारा इश्क दो साल तक जोरों से चलता रहा था। फिर मुझे किसी काम से कुछ समय के लिए योरोप जाना पड़ा। मेरे पीछे शार्लट के मां-बाप ने जबरदस्ती उसकी कहीं और शादी कर दी थी। योरोप से लौटने के बाद मुझे इस बात का पता चला तो मैं शार्लट के गम में पागल सा हो गया। मगर अब क्या हो सकता था, शार्लट किसी और की हो गयी थी। मैं कुछ वर्षों तक योरोप के शहरों में भटकता रहा। शार्लट की एक अभित्र सहेली के माध्यम से मुझे उसके बारे में हाल समाचार बराबर मिलता रहा। मुझे इस बात की जानकारी भी मिली थी कि शार्लट के कथनानुसार उससे पैदा होने वाली बेटी मुझसे ही थी, जबकि जिससे उसकी शादी हुई थी, उसने अपनी समझी थी। बदनामी के गहरे दलदल में न फंसने के डर से शार्लट अपने पति से इस बात को छुपा गयी थी। उसके उस पति से उसे एक बेटा भी हुआ था जो ज्यादह दिनों जीवित न रह सका।

यह बेटा वाला सीन इतना सटीक था कि जीन ने झट बात को लपक लेते हुए कहा—

"हां, शार्लट ने बेटे वाली बात मुझसे भी बतायी थी..और जहां तक मैं जानती हूं, यह बात उसने सिर्फ मुझे ही बतायी थी।"

"जी हां, शार्लट कहा करती थी कि यहां आप उसकी अभिन्न सहेली हैं.... हर दिन वह दो-चार बार आपका जिक्र किये बगैर न रहती थी।"

जीन इस बात से प्रसन्न हो गयी।

मैं अपनी बात आगे कहकर उन्हें विश्वास में लेता रहा कि—अन्ततः बेटी के साथ अकेली रह जाने वाली शार्लट को और मुझे स्वयं जब यह महसूस हुआ कि हम दोनों को एक हो जाना चाहिए, तो मैं यहां आ गया, शार्लट ने मुझसे शादी कर ली।

पति-पत्नी सहानुभूति भरे भाव से मेरी कहानी सुन रहे थे। इस कहानी के पीछे मेरा एक ही मकसद था कि वो इस बात का विश्वास करें कि शार्लट से मेरी मुलाकात पिछले कुछ महीनों की ना होकर पिछले पन्द्रह वर्षों की थी—साथ ही लोलिता पराई औलाद न होकर मेरी अपनी बच्ची थी।

अपनी कहानी को शार्लट के हमेशा-हमेशा के लिए बिछुड़ जाने के प्वाइन्ट पर लाकर छोड़ते समय मैंने अपनी आंखों पर रुमाल रख लिया। जीन को इस कहानी पर इतना विश्वास हो गया कि वह न सिर्फ सहानुभूति के साथ-साथ मेरे प्रति प्रशंसा के भाव में भरी, बल्कि अब

तो इस बात का भी यकीन हो गया कि जरूरत पड़ने पर वह लोगों के सामने झूठ भी बोल सकेगी कि मेरी और शार्लट की पहचान पन्द्रह वर्ष पूर्व से रही है...। उसने काफी का कप प्लेट में रखते हुए जॉन की तरफ देखा मानो कह रही हो,'देखा, सच्चे प्रेमी ऐसे होते हैं।'

जीन और जॉन अपने किसी काम से बाहर गये ही थे कि कुछ देर बाद लैसली मुझसे मिलने चला आया—उसे मैंने सड़क पार करके घर की ओर बढ़ते देख लिया था। उसे आता देखकर मेरे दिमाग में तेजी से एक बात आयी। मैं तेजी से लपककर हाल की ओर भागा—

दरवाजा खोलने से पहले मैंने टेलीफोन का रिसीवर हुक पर से उठाकर मेज पर रख दिया। जाकर दौड़ते-दौड़ते दरवाजा खोला और लैसली से बिना कुछ बोले अन्दर जाकर फोन उठा लिया। जब लैसली अन्दर आया तो मैं फोन पर बातचीत कर रहा था।

"हां, जरा जोर से बोलिए, सुनाई नहीं दे रहा है..नहीं नहीं..बहुत जरूरी है। आप हर हालत में मुझे पता दीजिए..जी हां, घर पर ही रहूंगा। देखिए, पैसों की परवाह न कीजिएगा, अच्छा गुडबाई...।"

अब तक लैसली अन्दर आकर कुर्सी पर बैठ गया था। मैंने उससे क्षमा मांगते हुए बताया कि लोलिता के कैम्प इंचार्ज से बात कर रहा था। मैं चाहता था कि लोलिता घर आ जाए, लेकिन इन्चार्ज ने बताया कि वह दो-तीन दिन के लिए पर्वतारोहण के लिए गई हुई है और कल शाम तक लौट आएगी।

हम इस विषय पर बात कर ही रहे थे कि तब तक जॉन और जीन आ गये। मैंने उन्हें भी वही बात बता दी जो लैसली को बता चुका था।

"अब क्या किया जाए.. ?" जॉन ने कहा।

"हां, कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा।" जीन बोली

"आप लोगों को कुछ न कुछ सोचना चाहिए..।" लैसली ने कहा।

थोड़ी देर तक हम चुप रहे। फिर जॉन ने सुझाव रखा—

"मैं गाड़ी लेकर चला जाता हूं और लोलिता को अपने साथ ले आऊंगा।"

अभी जॉन की बात पर विचार होना शुरू भी न हुआ था कि फोन की घण्टी फिर बजी। मैं उठकर फोन पर गया—और 'हैलो' कहते ही पता चला कि फोन लैसली के लिए है। उसका मैनेजर कुछ जरूरी कागजातों पर उससे हस्ताक्षर कराना चाहता था। लैसली माफी मांगकर चला गया।

हम कमरे में तीन। लैसली के जाते ही मैंने जॉन से फिर कहा—

"अब क्या सोचा ?"

जॉन कुछ कहता इससे पहले ही जीन कह पड़ी–

"अगर तुम चले जाओगे तो यह यहां अकेले न रह जायेंगे.. ?"

जॉन चुप हो गया। मैं भी चुप था। फिर दोबारा जीन ही बोली–

"खैर, कोई बात नहीं, मैं इनके यहां ही सो जाऊंगी।"

उसने यह बात कुछ इस अन्दाज से कही थी कि रात अकेले में मैं उसके कथन का अर्थ तलाशने की चेष्टा करता रहा।

जब मैंने देख लिया कि दोनों पति-पत्नी हाथ धोकर पीछे पड़ गये हैं, तो ऐक्टिंग का सहारा मुझे लेना पड़ा। मैंने उन्हें समझाना शुरू किया कि अगर उसे लेने जाने कोई और गया तो वह झट सवाल करेगी कि उसकी मां या मेरे में से कोई क्यों नहीं आया ? न आने की वजह बतायी गयी तो मां की मौत का जबरदस्त शॉक उसे लगेगा, इस शॉक से कहीं वह पागल न हो जाए।

मैंने सोचा था, तीर निशाने पर लगेगा। इतनी बड़ी जिम्मेदारी कोई भी उठाने को तैयार न होगा कि 'शॉक' लगने से पागल न होने की बात को नकार सकता।

पति-पत्नी चुप हो गये। कुछ देर खामोशी रही फिर जान ने कहा–

"देखिए, हम लोग शार्लट को पिछले डेढ़ साल से जानते हैं। उसकी मृत्यु के बाद लोलिता की जिम्मेदारी हम पर आ जाती है। आप उसके पिता सही, मगर आपको यहां आये दो महीने हुए हैं। इस बात की क्या गारण्टी कि आप लोलिता की देखभाल अच्छी तरह कर लेंगे।"

"जॉन...।" जीन मेरे कुछ कहने से पहले ही बोल पड़ी–

"तुम कैसे बुद्धू हो कि इतनी सी बात भी ध्यान में नहीं आ सकी कि लोलिता दरअसल इन्हीं की बेटी है। क्या तुम्हें याद नहीं कि इन्होंने बताया था कि शार्लट और उनके बीच प्रेम सम्बन्ध उसकी पहली शादी से पहले के रहे हैं। उसकी शादी जबरदस्ती कर दी गयी थी–मगर उसके गर्भ में उन्हीं की बच्ची थी, और वही लोलिता है।"

"ओह ! माफ कीजिएगा...।" जॉन ने कहा–"सचमुच मैं ही गलत समझा था, तब तो कोई दिक्कत की बात नहीं। अपनी ही औलाद को पालने में किसी को भी क्या असुविधा हो सकती है ?"

मैंने इत्मीनान की सांस ली। मेरी नाटककारी पूरी तरह कामयाब रही थी। अगर मैंने नाटककारी न की होती तो समाज वाले मुझे मेरी लोलिता से अलग कर देते–और सम्भव है यह अलगाव हमेशा के लिए हो जाता।

उस बस्ती के किसी भी औरत और मर्द को यह बात हजम न होती

कि मैं कुछ दिन का आया व्यक्ति, कुछ समय के लिए लोलिता का बाप बनने वाला इन्सान, जिसने लोलिता के कैम्प जाने के बाद उसकी मां से विवाह किया था, और जिसकी मां उसके कैम्प से वापस लौटने से पूर्व ही दूसरी दुनिया का सफर कर चुकी थी। जिसने एक दिन क्या, एक घण्टे का भी बाप का प्यार मुझसे न पाया था, वह उसकी मां से जुदा होने के बाद, उसे बाप के प्यार के लिए मेरे हवाले कैसे कर देते।

मेरी चालाकी काम आ गयी थी। फिर तो यह योजना बनने लगी कि किस तरह मैं लोलिता के कैम्प जाकर उससे मिलूंगा और उसे बताऊंगा कि उसकी मां का आपरेशन होने वाला है—उसे मैं दो-तीन दिन सैर कराने के बाद इस बात को बताने के लिए वातावरण तैयार कर लूंगा कि उसकी मां की मौत हो गयी है।

अगले दिन मैं गाड़ी लेकर लोलिता के कैम्प के लिए रवाना हो गया। जॉन और जीन दोनों ने मुझे विदा किया। विदा के समय जीन ने मेरी ओर हाथ बढ़ाया, अपना हाथ मेरे कंधे पर रखकर कहा—"अपना ख्याल रखिएगा। अब तो बच्ची आपके जिम्मे तो है ही, लेकिन बच्ची से ज्यादह आपका डर है..। मैं उस समय उसके इतना करीब था कि उसकी आंसुओं से झिलमिलाती आंखों को मैं साफ देख सका था।

मैं गाड़ी पर हवा में उड़ा जा रहा था। यह 15 अगस्त, 1947 तक की कहानी है—जिसके लिए जी चाहता है मैं अपनी डायरी के सारे पृष्ठों पर लोलिता... लोलिता.... लोलिता लिखकर भर दूं।

आप यह भी समझ सकते हैं कि शार्लट की मृत्यु के बाद मेरे सामने लोलिता से मिलने के सारे रास्ते खुल गये थे। और मैं मजे से सुख की सांस लेता हुआ, कल्पनाओं में डूबा हुआ, अपनी मंजिल पर बढ़ा चला जा रहा था।

पर वास्तव में ऐसा था नहीं। शार्लट की मौत के बाद मुझे और भी फिक्र घेरे हुए थी। मुझे यह भी सोचना पड़ रहा था कि अगर लोलिता ने मेरे साथ आने से इन्कार कर दिया तो ? या लोलिता मेरे इरादे को भांप गयी तो ? मुझे लग रहा था किसी न किसी तरह की कोई न कोई ऐसी बात जरूर हो जाएगी जो मुझे लोलिता से दूर कर देगी।

रेम्सडेल का मौसम सुहाना था। लगभग पचास मील का सफर

तय करने के बाद मुझे ख्याल आया कि कैम्प वालों को अपने आने की सूचना मुझे पहले दे देनी चाहिए। टेलीफोन करने के लिए मैंने पार्किंग्टन शहर में गाड़ी रोक दी। फोन पर कैम्प इन्चार्ज से बात हुई। उन्हें मैंने समझाया कि लोलिता की मां की तबियत ज्यादह खराब है और उसकी स्थिति इतनी गम्भीर है कि लोलिता को कैम्प से लेकर उसके पास जाना बहुत जरूरी है। साथ ही उन्हें इस बात की भी हिदायत दी कि 'डौली' को इस बारे में कुछ न बताया जाए।

उधर से टेलीफोन बन्द करने से पहले मुझे आश्वासन दिया गया कि घबराने की कोई बात नहीं है, जब मैं वहां पहुंचूंगा तो वह तैयार मिलेगी।

पार्किंग्टन का मौसम बहुत खराब हो गया था। तेज बारिश पड़ने लगी थी, आंधी तूफान के साथ बारिश में सफर करना कहीं की भी अक्लमंदी न थी। और फिर रात-रात में लोलिता के कैम्प एरिया में पहुंच जाना कोई तुक न थी। लोलिता से मुलाकात तो अगले दिन ही होनी थी।

मैंने यह भी सोचा कि लोलिता से मिलते ही सबसे पहले उसे बाजार ले जाऊंगा और उसे जी भर कर चीजें खरीदने की छूट दे दूंगा ताकि वह मुझ पर दिलो जान से न्यौछावर हो जाए। लेकिन इस खाली समय का उपयोग करने के लिए मैंने लोलिता को साथ ले जाकर खरीददारी करने के बजाय खुद ही उसके लिए कुछ चीजें खरीदने का फैसला किया। मैंने सोचा अगर वे चीजें उसे ले जाकर दूंगा तो वह आश्चर्यचकित हो जायेगी और अपनी आदत के मुताबिक उछल कर मेरी गर्दन से लिपट जाएगी। बारिश के बावजूद मैं खरीददारी करने चला गया।

शॉपिंग पूरी करने के बाद मेरी गाड़ी में एक के बजाय दो-दो सूटकेस थे। पहला सूटकेस मैं रेम्सडेल से लेकर चला था और दूसरे सूटकेस में लोलिता के लिए खरीदी गयी स्कर्ट, ब्लाउज, पेंटियां, ब्रेजरी और मेकअप का ढेरों सामान भरा था।

रात मैंने पार्किंग्टन में ही गुजारी। होटल में [illegible] समय मुझे ख्याल आया कि रात लोलिता के साथ किसी अच्छे होटल में ठहरने का इन्तजाम मुझे पहले ही कर लेना चाहिये।

खाना खा लेने के बाद मैंने कमरे में जाकर सामान निकाला और आसपास के शहरो में ऐसा शहर ढूंढ़ने लगा जो लोलिता के कैम्प से न बहुत अधिक दूर हो न अधिक नज़दीक। यह भी चाहता कि शहर कम से कम इतना बड़ा जरूर हो जहां हम दोनों भीड़-भाड़ में खो जाएं।

बहुत ढूंढ़ने के बाद मैंने ब्राइललैण्ड को छांटा, ब्राइललैण्ड लोलिता

के कैम्प से चार घण्टे की दूरी पर था। तीन साल पहले मैं वहां गया भी था। और मुझे अच्छी तरह याद है कि उस शहर का सबसे बढ़िया होटल 'इनचेंटेड हण्टर्स' है। मैंने सोचा, फोन करके डबल बेड का कमरा बुक करा लेना चाहिए।

मैं जिस होटल में ठहरा हुआ था वहां के रिशेप्सनिस्ट को फोन करके कहा कि होटल हण्टर्स का फोन नम्बर मालूम करके मुझे अवगत कराए।

रिशेप्सनिस्ट फोन नम्बर तलाश कर ही रहा था कि तभी मेरे मन के चोर ने कहा कि फोन करके मैं डबल बेड का कमरा बुक कराने के बजाय, टेलीग्राम से कमरा बुक करने की इत्तला दे देनी चाहिये। लिहाजा मैंने 'इनचेटेड हण्टर्स' को तार द्वारा रिजर्वेशन का आर्डर दे दिया।

मुझे शंका थी कि मेरे और लोलिता के मिलन में कोई न कोई व्यवधान अवश्य पैदा होगा, इस बात को सुबह उठते ही मैंने देखा। मैं छः बजे ही सोकर उठ गया था, सिर में हल्का दर्द था। रात को शायद ज्यादा शराब पीने का यह असर था। एक कप काफी लेने और तरोताजा होने के बाद मैं बाहर के वातावरण पर निगाह डालने लगा। मूसलाधर वर्षा अभी भी हो रही थी, बारिश के साथ रह-रह कर तूफान का शोर भी बढ़ जाता था। कैम्प के इलाके तक पहुंचने का रास्ता ऐसा न था जिस पर गाड़ी से बढ़ा जा सके, अतः मैंने इसी बात का निर्णय लिया कि जब तक बारिश और तूफान का जोर घट न जाय यात्रा स्थगित रखी जाए।

मैने सोच लिया था कि एक दो घण्टे और भी बाहर निकलने लायक मौसम न हुआ तो एक बार पुनः कैम्प इन्चार्ज को फोन करके मुझे इत्तला देनी पड़ेगी कि बारिस और तूफान के रुकने के बाद ही मैं चलकर पहुंच सकूंगा।

साढ़े नौ बजे के करीब मौसम यात्रा करने लायक हुआ तो मैं अपना सामान सहेज कर नीचे खड़ी गाड़ी में आ गया। गाड़ी में बैठकर इंजन स्टार्ट करने के लिए चाबी घुमाई, तीन बार ट्राई करने के बाद भी इंजन स्टार्ट न हुआ, तो मुझे शक हुआ।

मैंने हुड उठाकर देखा— पिछली शाम बारिश में घूमते रहने की वजह से बैटरी खराब हो गयी थी।

बैटरी ठीक करायी।

लगभग साढ़े ग्यारह बजे चलकर मैं ढाई बजे के आसपास कैम्प पहुंचा। गाड़ी को चीड़ों के झुरमुट की छांह में खड़ा किया और कैम्प का पता पूछने की कोशिश की। रास्ता दिखाने के लिए एक साइकिल वाला मुझे मंजिल तक ले गया।

कैम्प में अन्दर पहुंचकर कैम्प इन्चार्ज से मुलाकात करने में मुझे पांच-सात मिनट इन्तजार करना पड़ा। फिर वह मुस्कराती हुई आयी और देरी के लिये माफी मांगने के बाद कहने लगी–"आप ठीक वक्त पर आ गये, डौली बिल्कुल तैयार है। मैंने उसे सिर्फ इतना बताया है कि उसकी मां की तबियत कुछ खराब है और उसका इलाज जारी है।"

मैंने धन्यवाद अदा कर बिल मांगा। पैसे अदा किये और इधर-उधर देखने लगा।

उसी समय क्लर्क ने एक रजिस्टर मेरे सामने लाकर रख दिया। मैं रजिस्टर के पृष्ठ पलटने लगा। हस्ताक्षर करने के लिए मैंने जेब से पेन निकाला ही था कि मुझे लगा लोलिता आ गयी है। मेरा दिल जोर-जोर से धड़कने लगा, शायद चेहरा भी लाल पड़ गया था।

न चाहते हुए भी जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि वह अपनी अटैची घसीटती, डगमगाती हुई चली आ रही है। मुझसे नज़रें मिलते ही उसने कहा–

"हैलो....।"

और अधखुले होंठों से मुस्कराती हुई मेरे जवाब का इन्तजार करती, दीवार से सर लगाकर खड़ी हो गयी।

मुझे लगा, लोलिता पहले से ज्यादह पतली और लम्बी हो गयी है। फिर उस पर भरपूर नज़रें जमाते ही मुझे एहसास हुआ कि मेरे सामने सौन्दर्य की वही आधारवर्त्य प्रतिमा खड़ी है जिसके शरीर की रेखाओं को छूने के लिए मैं बारिश और तूफान में भीगता जंगलों और पहाड़ियों को लांघता, इतना बड़ा खतरा उठाकर वहां आ गया हूं। मैंने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रख दिया और बाल सहलाने लगा।

गाड़ी में बैठते ही उसने अपने घुटने पर मंडराती एक मक्खी का काम तमाम किया, उसके बाद उसने उचक कर शीशों में से तेजी से पीछे छूटते कैम्प को देखा और फिर खिड़की का दरवाजा खोलने के बाद आराम से जम कर बैठ गयी।

"मां कैसी है... ?" उसने पूछा।

"घबराने की कोई बात नहीं है। डाक्टरों ने सलाह दी है कि रेम्सडेल

के बजाय उसे लैपिंगविले में रहना जरूरी है। तुम लोलिता के बारे में जानती हो न ? लौपिगंविले एक गांव है वहां उन्नीसवीं सदी का महान कवि..।

"हम वहां कब तक पहुंच जायेंगे...।" उसने बीच में ही मेरी बात काट दी।

"तेज से तेज चलें तो भी नौ बजे से पहले नहीं पहुंच सकते। अतः आज की रात हम ब्राइललैण्ड में रुकेंगे, कल सुबह लैपिंगविले जाने की सोचेंगे....और कहो, तुम्हारे कैम्प का अनुभव कैसा रहा ?

"ठीक रहा।"

"तुम्हें यकायक मेरा आना बुरा तो नहीं लगा।"

"नहीं...।"

"कोई बात करो, तुम तो 'हां' 'न' में जवाब दे रही हो।"

"क्या बात करूं डैडी... ?"

मुझे लगा कि वह मेरा मजाक उड़ा रही है–।

"कैम्प के अनुभवों के बारे में बताओ।"

"एक बात बताओगे...?"

"क्या...?"

"तुमने मेरी मम्मी से विवाह क्यों किया ?"

"तुम अभी बच्ची हो। अभी ये बातें नहीं समझ सकोगी। जब बड़ी हो जाओगी तब जानोगी कि भावनाएं और परिस्थितियां कई बार व्यक्ति को अनायास ही सम्बन्ध जोड़ने के लिए बाध्य कर देती हैं।"

वह चुप रही। शायद बोर हो गयी थी। शायद उसे पता चल गया था कि मैं झूठ बोल रहा हूं। थोड़ी देर तक हमारे बीच चुप्पी व्याप्त रही। हमारी गाड़ी सरसराते हुए लैंडस्केप पहाड़ियों पर से गुज़रती रही।

"मुझे तुम्हारी याद आती थी।" फिर मैंने ही चुप्पी तोड़ी।

"इससे क्या फर्क पड़ता है ? और अब तो तुम्हारे पास मम्मी है। मेरी याद करने का तो वक्त भी मुश्किल से मिलता होगा।"

"ऐसा क्यों सोचती हो...?" मैंने गाड़ी की स्पीड धीमी करते हुए कहा।

"तुम नहीं जानते । तुमने इतनी देर से मुझे प्यार तक नहीं किया।" उसकी इस अदा पर मैं मर मिटा। पैर यकायक ब्रेक पर जा पड़े और गाड़ी रुक गई।

मैं अभी स्टेयरिंग व्हील से अपने हाथ हटा भी न पाया था कि लोलिता मेरी बांहों मे आ सिमटी। अगले क्षण हमारे होंठ.... डेढ़ महीने से प्रतीक्षा करते हमारे होंठ पिस रहे थे। मैं उसे डरते-डरते चूम रहा

था। ऐसे जैसे कोई प्यासा यकायक दरिया के किनारे पर खड़ा कर दिया जाने पर सहमता-सहमता सा प्रानी पीता है। लेकिन वह तो जैसे पागल हो गई थी। होंठों से होंठ मिलते ही उसकी जिह्वा का अगला सिरा दांतों के बीच लपलपाने लगा। वह मुझे चूमना नहीं पीस देना चाहती थी।

और मैं डर रहा था। शायद इसलिए डर रहा था कि कहीं उत्तेजित होकर उस गाड़ी में ही कोई ऐसी हरकत न कर बैठूं जिसके लिए आगे चलकर शर्मिन्दा होना पड़े या कहीं मुझे तैयार पाकर लोलिता होटल पहुंचने से पहले ही डर कर पीछे हटने की बात सोचने लगे।

जब लोलिता की आंच कुछ ठन्डी पड़ी तो मैंने उसे कंधों से पकड़ कर आहिस्ता से अलग किया।

"अगर मां को कहीं हमारे बारे में पता चल गया तो क्या होगा ?" लोलिता ने यकायक पूछा।

अब गाड़ी दोबारा सड़क पर दौड़ने लगी थी। मैंने लोलिता के आदेश का उत्तर देते हुए कहा-

"कैसी बात करती हो ? तुम्हें ऐसी बातें नहीं करनी चाहियें।"

"क्यों... ? क्या हम एक-दूसरे को प्यार नहीं करते ?"

"मेरा ख्याल है कि कल यहां भी काफी बारिश रही होगी, तुमने कल का समय कैसे गुजारा ?"

"किसी किताबी हीरो की तरह ऐक्टिंग मत करो डैडी।"

"कैम्प में अवश्य ही कुछ न कुछ नई बात हुई होगी।" मैंने उसे विषय से भटकाते हुए कहा।

"हां, हुई तो है....।"

"तो फिर मुझे बताओ...।"

ऐसे नहीं बता सकती। आप गाड़ी को एक तरफ ज़रा सड़क के किनारे खड़ी कर दीजिए तभी अच्छी तरह समझा सकूंगी। मैंने हैरान होकर उसकी ओर देखा तो पाया कि उसके चेहरे पर एक शरारत भरी मुस्कराहट बिखरी हुई है। मैं फिर परेशान हो उठा। पता नहीं वह मुझे बना रही थी या हाल ही में पढ़े गये किसी उपन्यास की नायिका का पार्ट अदा कर रही थी।

थोड़ी देर तक मैं चुपचाप गाड़ी को ड्राइव करता रहा फिर उसने खुद ही कैम्प के बारे में बताना आरम्भ कर दिया। रास्ते में हम एक जगह आईसक्रीम लेने के लिए रुके-लेकिन कोई खास बातचीत नहीं हुई। अलबत्ता एक बार जब मैंने हाथ उसके कंधे पर रखा तो उसने हाथ हटा दिया, जैसे उसे मेरी वह हरकत पसन्द न आयी हो। मैं चुपचाप गाड़ी ड्राइव करता रहा।

होटल पहुंचते-पहुंचते रात के नौ बज गये। होटल के पोर्च में पहुंचते ही एक नीग्रो ने कार का दरवाजा खोलकर हमारा स्वागत किया-अटैची केस उठाकर आगे-आगे चलने लगा।

लोलिता को लाउन्ज में बैठने को कहकर मैं रिशेप्सन की ओर बढ़ गया।

रिशेप्सन पर एक गोल मटोल क्लर्क बैठा था। मैंने उसको अपना नाम बताया और टेलीग्राम का हवाला देकर कमरे के बारे में पूछा। उसने रजिस्टर, फाइलें उलटीं। उसे टेलीग्राम मिल गया। टेलीग्राम देखने के बाद उसने रजिस्टर चेक किया फिर खेदजनक स्वर में बोला-

"माफ कीजिएगा, आपने आने के बारे में समय का हवाला नहीं दिया था, अतः हमने कमरा साढ़े छः बजे तक सुरक्षित रखने के बाद किसी और ग्राहक को दे दिया है।"

"लेकिन....।" मेरे माथे की त्यौरियां चढ़ीं।

उसने रोब में आकर दुबारा रजिस्टर पलटते हुए कहा-

"लेकिन आप फिक्र न करें, मैं कोई न कोई दूसरा प्रबन्ध किये देता हूं।"

"ठीक है, कीजिए...।" मैंने बोर होकर कहा और लाउन्ज की ओर मुड़कर देखा- लोलिता वहां सोफे पर बैठी एक सफेद रंग के छोटे से झबरे कुत्ते को सहला रही थी, कुत्ते की बुढ़िया मालकिन लोलिता से बातें कर रही थी।

उसी समय रिशेप्सन क्लर्क का स्वर मेरे कानों में पड़ा-

"आपके साथ ?"

जब मैंने लोलिता की ओर इशारा किया तो उसकी आंखों में ऐसा भाव उभरा जैसे मैं कोई छोकरी भगाकर ले आया हूं। मैंने स्वर उभारा-

"मेरी बेटी मेरे साथ है....।" मैंने फूलदान की ओर देखते हुए कहा और लोलिता की ओर इशारा किया। लोलिता को देखते ही उसका सन्देह मिट गया। उसने अपने अस्सिटेन्ट से पूछा-

"क्यों, कमरा नम्बर 49 खाली है न....?"

"हां...।" असिस्टेंट ने जवाब दिया- "कमरा खाली है और अगर ये चाहें तो हम वहां एक बेड और डलवा देंगे।"

"जी नहीं। मेरी पत्नी अभी एक दो दिन से पहले नहीं आ पायेगी। मैं और डोली आराम से एक कमरे में सो सकते हैं। आप जरा सामान रखवाएं।"

"तो आपको कमरा दिये देता हूं...।" कहकर उसने बोर्ड से चाबी

उतार कर मेरे हाथ में थमा दी। चुटकी बजाकर पोर्टर को इशारा किया।

पोर्टर ने सामान उठा लिया।

कमरे में पहुंचकर मैंने पोर्टर को टिप दी, उसके बाहर जाते ही दरवाजा बन्द कर लिया।

"हम लोग एक ही कमरे में सोयेंगे क्या.....?" लोलिता ने मेरी ओर देखते हुए पूछा।

"हां...।"

"डैडी, तुम पागल तो नहीं हो गये हो।"

"क्यों...।"

"मां को पता लग गया तो मेरा गला ही घोंट देंगी और तुम्हें तलाक दे देंगी।"

मुझे कुछ हैरत हुई— लोलिता को एक कमरे में सोने के सम्बन्धों का पता था या अंधेरे में तीर चला रही थी। घबराहट से बचने के लिए मैं खिड़की के पास चला गया और पर्दे हटाकर खिड़कियां खोलने लगा। खिड़की खोलकर जब मैं हटा तो देखा कि लोलिता बाथरूम जा रही थी।

उसके बाथरूम से लौटते-लौटते मैंने दूसरा सूटकेस खोलकर बेड पर रख दिया था। उसने आते ही झटके से सूटकेस खोल डाला। जिस समय उसने सूटकेस खोला मैं शीशे के पास खड़ा टाई ठीक कर रहा था। खुले सूटकेस को देखकर वह जैसे स्तब्ध हो गयी। शायद उसे अपनी आंखों पर यकीन नहीं आ रहा था। फिर जोर से बोली—

"ओह डैडी, तुम कितने अच्छे हो...।" और एक-एक करके मालाएं, टॉप्स, स्कार्फ, ब्लाउज, स्कर्ट और मेकअप का सामान निकाल कर पलंग पर रखने लगी।

जब सारा सामान बेड पर बिखर गया तो वह उठी और आकर मेरी बांहों में सिमट गयी। मैं बिना हिले-डुले कंधों पर हाथ रखे खड़ा रहा हिलने—डुलने की जरूरत भी नहीं थी।उसके जिस्म की हल्की-हल्की गर्मी और बालों से उठती नर्म खुशबू ने मुझे वैसे ही पागल कर दिया था।

अकेले कमरे मैं लोलिता की दहकती हुई बांहों के घेरे में घिरा हुआ कोई मूर्खता कर बैठता तभी वह हटकर बेड की ओर चली गयी।

जब हम डाइनिगं हॉल में पहुंचे तो वहां ज्यादा लोग न थे। लोलिता ने कपड़े पहन रखे थे और बहुत खुश नज़र आ रही थी। लेकिन इस सबके बावजूद उसके चेहरे पर सफर की थकान का असर था। वेट्रेस को खाने का आर्डर देने के बाद मैंने उससे पूछा—

"तुम लोग कैम्प में कितने बजे सोते थे ?"

"साढ़े बा.....।" कहते–कहते उसे जमुहाई आई और बारह का शब्द फैलकर जमुहाई में गुम हो गया।

हम लोग डाइनिंग हाल में बैठे हुए लोगों को देख रहे थे। एक मोटे आदमी को देखकर- लोलिता ने मेज पर रखे नेपकिन से खेलते हुए कहा–"यह मोटा आदमी हमारे डाक्टर जैसा लगता है न...?"

"हां...।" मैंने हंसकर उसकी ओर देखते हुए कहा और मीनू को दोबारा पढ़ने लगा।

इतने में वेट्रेस ने खाना लगा दिया।

खाना खाने के बाद जब लोलिता आइसक्रीम खा रही थी तो मैंने योजनानुसार जेब से नींद की गोलियों की शीशी निकाली। मैं जानता था कि लोलिता अपनी उत्सुक्ता रोक न पायेगी। उसकी उत्सुक्ता को जगाने के लिए मैंने शीशी इस तरह पकड़ रखी थी कि आधी दिखती रहे, आधी छुपी रहे।

"यह क्या है.... ?" लोलिता ने आइसक्रीम खाते–खाते पूछा।

"कुछ नहीं.....।"

"कुछ तो है जरूर...प्लीज बताओ न...?"

मैंने चारों ओर देखा। डाइनिंग हाल खाली हो चुका था। वेट्रेस काउन्टर पर खड़ी बिल बनवा रही थी। मैंने शीशी में से गोली निकाल कर हथेली पर रखी और शीशी जेब में डाल ली। लाल रंग की गोली देखते ही लोलिता ने पूछा–

"ये किसलिए है...?"

"ताकत बढ़ाने के लिए है। इसे खाने से आदमी कभी बीमार नहीं पड़ता है।"

"मै भी खाऊंगी...।"

मैं जानता था कि वह ऐसा जरूर कहेगी। थोड़ी देर की ना–नुकुर के बाद मैंने गोली उसे दे दी। उसने पानी के घूंट के साथ गोली निगल ली।

वेट्रेस बिल लेकर आयी। मैंने बिल पर हस्ताक्षर किये–और उठ खड़ा हुआ। लोलिता मेरे साथ उठी।

गोली ने बहुत जल्दी असर दिखाया। लिफ्ट से कमरे तक पहुंचते-पहुंचते लोलिता की आंखे मुंदी जा रही थीं। एक बार तो उसने लड़खड़ा कर मेरा सहारा लिया।

"क्या बात है ? तबियत तो ठीक है न... ?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं, नींद जोरों की आ रही है।"

"मेरा मन किया कि मुस्कराऊं, मगर मुस्कराने से लोलिता को सन्देह हो सकता था– अतः चुप चाप कमरे की तरफ बढ़ता रहा।

कमरे में पहुंच कर बिस्तर पर बैठते ही वह फैल गयी।

"अपने बूट तो खोल लो...।" मैंने कहा।

मेरी बात सुनकर वह ऊंह–आह करती हुई बड़ी मुश्किल से दोबारा उठी। जल्दी–जल्दी किसी तरह उसने बूटों के फीते खोले और मोजे उतार कर फर्श पर फेंके। बाथरूम जाकर कपड़े बदले और तकिये पर सिर रखकर लेट गयी।

मै चुपचाप कुर्सी पर बैठा सब–कुछ देख रहा था। कुछ देर बाद जब मैंने अपना पाइप सुलगाया तो वह सो रही थी। मैं उठकर कमरे से बाहर चला गया।

आप सोच रहे होंगे कि मैं शान्त हो गया था। पर ऐसा नहीं–लोलिता के सो जाने के बाद मैं बाहर आया था तो इस बात को देखने के लिए कि वहां कोई ऐसा दरवाज़ा तो नहीं है जिससे कोई आदमी अन्दर आ सकता। संतुष्ट हुआ कि कमरे में सिर्फ एक दरवाजा था और उसकी चाबी मेरे पास थी– जिसे मैंने जेब में पड़ी मुट्ठी में दबा रखा था।

अब आप समझ गये होंगे कि कमरे से बाहर आने पर मतलब यह कतई नहीं था कि मैंने अपना इरादा बदल दिया था। जी नहीं, मेरे इरादे बिल्कुल दृढ़ थे। पर मैं जल्दबाजी से काम बिगाड़ने के बजाय सावधानी से धीरे–धीरे काम करना चाहता था।

मुझे इस बात का भी विश्वास था कि लोलिता को सेक्स के मामले में थोड़ा बहुत अनुभव अवश्य रहा होगा। लेकिन यह एहसास कि उसकी उम्र अभी अपरिपक्व है, मुझे बार–बार आगे बढ़ने से रोक रहा था। मैंने दरवाजे के की होल से अन्दर झांककर देखा और सोचा कि अब तक वह न जाने क्या-क्या सपने देख चुकी होगी।

आसपास की आहट लेते हुए मैंने आगे बढ़कर लाउन्ज का चक्कर लगाया– वहां भीड़–भाड़ न थी। इक्का–दुक्का लोग सोफे पर बैठे अखबार के पृष्ठ पलटने में लगे हुए थे। रिशेप्सन पर क्लर्क खड़ा उबासियां ले रहा था। मुझे आता हुआ देखकर उसने मुंह पर हाथ रख लिया।

"मेरी पत्नी का कोई फोन तो नहीं आया.... ?" मैंने पूछा और

आराम के मूड में काउन्टर पर कोहनियां टिका दीं। उसने इंकार किया।

"तब ठीक है, तीसरा बेड लगवाने से पहले पूछ लीजिएगा...। मगर हम लोग कल भी यहीं रुके तब तीसरे बेड की आवश्कता पड़ेगी अन्यथा ख्वामखाह आप लोगों को कष्ट देने की क्या आवश्यकता।"

"यस सर....।"

वहां से हटकर मैं होटल के बरामदे में आ खड़ा हुआ। रात के घने अंधेरे में सड़क के किनारे जलते लैम्प पोस्टों के इर्द-गिर्द हजारों पतंगे मंडरा रहे थे। "तुम भी इन्हीं में से एक हो" मेरे अन्दर से कोई बोला, और मैंने अपने अन्दर से उठती हुई अदाओं को अनसुना करने की कोशिश की।

मैं बरामदे से निकलकर लाउंज की तरफ बढ़ा ही था कि एक व्यक्ति मेरी ही आयु के आसपास का, मेरे सामने आकर प्रश्न उछाल बैठा-

"यह चिड़िया कहां से फांस लाये... ?"

शायद वह काफी देर से अंधेरे में बैठा हुआ था और उसकी आंखें अंधेरे की अभ्यस्त हो गयी थीं।

"क्षमा कीजिए आपने क्या कहा ?" मैंने अंधेरे में उसे देखने की कोशिश की। मेरे दिल की धड़कन बेतहाशा बदल गयी थी। मैं जिस स्थिति से बचना चाह रहा था, वह सामने आ गयी थी।

कमरे से बाहर आकर, इधर-उधर चक्कर काटता हुआ मैं जो सतर्कता बरत रहा था इसके पीछे यही तो कारण था कि किसी को शक न होने पाए कि मैं लड़की को उड़ा लाया हूं और उसके साथ होटल में रात गुज़ारना चाहता हूं। ऐसा विचार रखने वाले के लिए ही तो मैं कमरे से बाहर आकर उस समय इधर-उधर समय गवां रहा था, ताकि किसी को शक हो तो वह रफा हो जाए। मेरा विचार था कि ऐसा इरादा रखने वाला कमरे से बाहर नहीं निकलता और अपना मतलब जल्द से जल्द गांठने के चक्कर में लगा जाता है।

पर ताड़ने वाले कयामत की नज़र रखते हैं- वाली कहावत यहां चरितार्थ हो रही थी।

"मौसम पहले से अच्छा हो गया है।" उसने बात पलटी। इस बार मैंने उसकी बात जैसे पूरी तरह से सुन ली थी, तभी तो कहा-

"जी हां, कल और आज की बारिश के बाद मौसम अच्छा हो गया है।"

"लड़की कौन है..... ?"

"मेरी बेटी.....।"

"बकवास करते हो, तुम्हारी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा।"

"माफ कीजिएगा, आपने क्या कहा मैं सुन नहीं पाया।" मैंने उसकी

बात हवा में उड़ा दी। गुस्सा तो इतना आ रहा था कि घूंसे मार कर उसका मुंह तोड़ दूं। अगर लोलिता मेरी सगी बेटी होती तो वाकई मैं ऐसा ही करता। मगर चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात, मुझे ऊंचा सुनने का बहाना बनाना पड़ रहा था। ऐसी वैसी कोई हरकत कर बैठता तो निःसन्देह बवाल हो जाता। हो सकता है पुलिस तक मामला पहुंच जाता। लोलिता से पूछताछ होती और वह पूछताछ में ठहर न पाती तो मामला मेरे विरुद्ध जा सकता था। मेरे और इसके बीच रिश्ते की अजीब कड़ी थी। मैं उसका बाप हो भी सकता था, और नहीं भी। मान लेने वाले के लिए मैं उसका बाप था, न मानने वाले की नज़रों में कुछ भी नहीं था। उसकी मां के न रह जाने के बाद अगर देखा जाए तो मैं कुछ भी न रह गया था।

"मै कह रहा था कि इस साल जुलाई में काफी गर्मी पड़ी। इस लड़की की मां कहां है ?" उसने फिर मुझे डराने वाला प्रश्न दागा।

"है, नहीं थी....।"

"ओह–कल आप दोनों लंच मेरे साथ क्यों नहीं लेते।"

"हम लोग कल सुबह ही चले जाएंगे...।"

मुझे डर लगा। मैं उसके सामने ज्यादह देर ठहरना नहीं चाहता था। न जाने क्यों ऐसा लग रहा था जैसे मैंने इससे ज्यादह देर बातचीत की तो मैं कमजोर पड़कर हकीकत उगल बैठूंगा।

उस व्यक्ति ने जरूरत से ज्यादह पी रखी थी– बावजूद इसके उसका जेहन पूरी तरह होश में था, और ऐसा लगता था जैसे मेरी ही लाईन का आदमी हो। तभी तो उसने सारा मामला ताड़ लिया था।

उसने पीछा छोड़ दिया था। मैं कमरे की ओर बढ़ने लगा था।

कमरे में बिस्तर पर लोलिता सोई पड़ी थी। उसकी पीठ मेरी ओर थी। नाइट गाउन हट जाने से उसकी एक जांघ बिल्कुल नंगी हो गयी थी। मैंने अपने बिस्तर की ओर देखा–ठण्डा बिस्तर मुझे घूर रहा था।

पता नहीं कब और कैसे मैंने कपड़े बदले और नाइट सूट पहन कर बिस्तर पर लेट गया। बिस्तर पर लेटते ही जब मैंने सिर नीचे टिकाया तो पाया, तकिया बिस्तर पर नहीं था। मैंने लोलिता की तरफ देखा तो वह दोनों तकिये को अपने सिर के नीचे रखे मजे से सो रही थी।

उसे सोता देखकर मेरी हिम्मत बंधी। मैं हिला और अपना घुटना लोलिता के बिस्तर पर रखकर उसका चेहरा देखने लगा उसी समय यकायक उसकी आंखें खुल गयी। मैंने ध्यान से देखा–वह सो रही थी। मुझे लगा शायद वहम हो गया था। क्या सचमुच वह जागी थी और एक

क्षण को जागकर फिर से सो गयी थी।

गोली खाकर उसका इस तरह जाग जाना, मुझे आश्चर्यजनक लगा। किसी बहुत ऊंची बुर्जी से छलांग लगाने वाले तैराक की तरह एक–दो मिनट तक मैं उस पर झुका रहा। फिर दोबारा हिम्मत जुटाकर मैंने उसे छुआ।

अभी मैंने उसकी बांह पर अंगुलियां ही रखी थीं कि उसने दोबारा सिर उठकर मेरी ओर देखा।

इस बार धोखे की कोई गुंजाइश न थी। वह सचमुच जाग गई थी।

बहुत दिनों बाद जाकर, एक कैमिस्ट से पूछताछ करने के बाद मुझे पता चला था कि उस उल्लू के पट्ठे और क्रेक डाक्टर ने जो लाल गोली दी थी वह पागलों के लिए थी। साधारण लोगों पर उस गोली का कोई असर न पड़ता था।

लेकिन ये सब बातें बाद की हैं।

उस अंधेरे कमरे में लोलिता की दो बार खुल जाने वाली आंखों से डरकर मैं अपने बिस्तर पर लेटा हुआ सोचने लगा कि यह क्या मजाक हो रहा है।

क्या सचमुच गोली फेल हो गयी है ? मैंने लोलिता की तरफ देखा, वह चुपचाप सो रही थी। मेरा मन एक बार फिर उठकर उसकी ओर बढ़ने को हुआ। लेकिन पता नहीं क्यो ऐसा लगा कि मेरे ज़रा सा हिलते ही वह दोबारा जाग जाएगी और शोर मचा–मचाकर सारा होटल सिर पर उठा लेगी। अतः मैं उसी तरह पड़ा रहा।

अब मैंने अपना चेहरा उधर से हटाकर इधर–उधर भटकाना आरम्भ किया। अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि अमेरिकन होटलों से ज्यादह शोरगुल किसी और जगह नहीं होता। कोई भी मौसम हो, दिन हो, शाम हो, इन होटलों में किसी न किसी किस्म का शोर बना ही रहता है।

हमारा कमरा लिफ्ट से अन्दाजन तीन कमरे आगे था–जब कभी भी लिफ्ट नीचे जाती एक हल्की सी गड़गड़ फर्श से उठकर दीवारों तक फैल जाती। कभी बरामदे से लोगों के हंसने–विदा होने की आवाजें आती तो कभी कोई खांसता हुआ व्यक्ति आगे बरामदे से गुजरता हुआ, सोने वालों के तालाब में पत्थर फेंक जाता और अपना नाम बताए बिना आगे गुम हो जाता। पास के कमरों में फ्लश के चलने पर पानी बहने की आवाजें, खिड़की के नीचे सड़क पर दौड़ते हुए ट्रकों की गुर्राहट।

धीरे–धीरे ये सारे शोर मेरी कनपटी पर हथौड़ियों की तरह

खटखटाने लगे।

मैं सोच रहा था कि कब तक लोलिता के इस तरह सो जाने का इन्तजार करूं कि वह यकायक अचानक उठकर बैठ गयी।

मैं सहम गया।

वह आंखें बन्द किये बड़बड़ा रही थी–

"किश्तियां.... जल्दी करो.... रोज.... रोज.... हैलो...।"

साफ था कि वह नींद में बड़बड़ा रही थी।

यह सोच कर कि कहीं उसे बोलने के साथ-साथ नींद में चलने की आदत भी न हो, मैं उसे फिर से सुलाने के लिये अपने बिस्तर से सरक कर उसके बिस्तर पर चला आया।

मैंने उसे छुआ ही था कि वह खुद-ब-खुद लेट गई। लेटते-लेटते जो उसने करवट बदली तो उसकी कलाई जोर से मेरी ठुड्डी पर आ लगी।

मैंने डरते-डरते उसे दोबारा देखा। वह सो रही थी। लेकिन स्थिति अभी तक वही की वही थी। नाइट गाउन में लापरवाही से अपने नितम्ब मेरी ओर किये, मुड़ी-मुड़ी लेटी हुई लोलिता और कुहनी पर सिर टिकाए अंधेरे में लोलिता के नज़दीक होने का उपाय सोचता हुआ हम्बर्ट।

जब तनाव अधिक बढ़ गया तो मैं उठकर बाथरूम चला गया।

बाथरूम से बाहर निकला ही था कि लोलिता ने अधखुली आंखो से झुंझलाई आवाज में कहा–

"पानी....।"

मैं समझ गया कि डिनर के बाद आइसक्रीम ज्यादा खा लेने से उसे प्यास लग आई है। मैंने झटपट कांपते हाथों से गिलास उसे थमाया। उसने आंखें बन्द किये-किये पानी पिया और जब तक मैं गिलास पकडूं मेरे नाइट सूट के आस्तीन से मुंह पोंछकर वह दोबारा औंधी हो गई।

गिलास मेज पर रखने के बाद मैं मुड़ा। वह आराम से सो रही थी।

आगे भी यह खेल चलता रहा। मैं जब भी उसकी ओर बढ़ने का इरादा करता वह कुलमुला कर या तो करवट बदल लेती या मेरे नज़दीक आते-आते चौंक कर जाग जाती। जाहिर था कि नींद की गोली का उस पर कोई असर न था। मैं शायद मुश्किल से दो घण्टे सो पाया हूंगा। वे दो घण्टे भी मैंने लोलिता के सपने देखते हुए गुज़ारे–कभी देखता कि वह समुद्र तट पर निर्वस्त्र होकर दौड़ रही है और मैं मछुओं का जाल लिए उसके पीछे दौड़ रहा हूं तो कभी लगता कि हम दोनों एक झील के किनारे कमर तक आगे-पीछे खड़े रेत में गाड़ दिये गये हैं और वह रेत के नीचे से धीरे-धीरे झुककर सरकती हुई

अपने नितम्ब मेरी ओर बढ़ा रही है और प्रतीक्षा में जलती हुई मेरी आंखों पर उसके नितम्ब की गोलाइयां दबकर चपटी होने लगी हैं।

जिस समय मेरी आंख पुनः खुली सुबह की चहल-पहल शुरू हो चुकी थी। नीचे गाड़ियां आनी आरम्भ हो चुकी थीं—नौकरों के काम करने की आवाज़ें उभरने लगी थीं। मैंने घड़ी में समय देखा—पौने छः बजे थे। लोलिता अभी सो ही रही थी। उसे जगाने की आवश्यकता न समझकर मैंने नित्य क्रिया निपटाई।

साढ़े छः बजे करीब लोलिता भी जग गई।

ज्यूरी के माननीय सदस्यों, इन बातों को विस्तृत रूप में बताने की आवश्यकता इसलिए पड़ गयी है क्योंकि मैं आपको इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मैं लोलिता के साथ बलात्कार करने पर नहीं तुला हुआ था। यह सत्य है कि मैं उसे पाना चाहता था, पाने के लिए दीवाना था, मगर यह दीवानगी उसकी रजामंदी के साथ ही उजागर करना चाहता था। मैं कोई भ्रष्टाचारी अपराधी नहीं था, जो एक लड़की को अकेली पाकर उसे मसल देने पर तुल जाऊं। मैं तो कवियों की तरह कल्पनाओं के लोक में विचरता, योगियों की तरह अथाह धैर्य से काम लेता हुआ इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि लोलिता प्रसन्न होकर अपनी मर्जी से मुझे वरदान दे।

यही हुआ भी....चौंकिए नहीं—मेरी बात को धैर्य से सुनिये। थोड़ी देर बाद आप स्वयं जान जायेंगे कि मैंने लोलिता को कुछ भी करने को बाध्य नहीं किया था बल्कि उसने खुद वासनाओं के उत्तेजित थपेड़ों में बिखर जाने के लिए, मुझे हाथ पकड़कर सुनहरी सांपों की अंधी घाटी में धकेल दिया था।

नित्य क्रिया से निवृत होकर, उसके जगने की प्रतीक्षा करता हुआ मैं—बिस्तर पर अधलेटा पड़ा नाना प्रकार के विचारों में भरा हुआ था। अब भी—मैं इस आशंका में भरा हुआ था कि कहीं आंख खुलते ही, मुझे एक ही बिस्तर पर पाकर वह शोर मचाना न शुरू कर दे। कहीं वह रेम्सडेल पहुंचकर, मां से मिलने की जिद न कर बैठे, तब मैं क्या करूंगा ?

लेकिन लोलिता ने ऐसा कुछ न किया। मेरी आंखें बन्द थीं, पर मैं यह महसूस कर रहा था कि वह जग गयी है और बैठी-बैठी मुझे देखे जा रही है। फिर वह बिस्तर से पलटी खाकर मेरी ओर आयी। उसके लिए इन्तज़ार की इन्तहा हो चुकी थी। उसने रात भर हर पल प्रतीक्षा की थी कि मैं उसके शरीर को छुऊंगा—और वह सब कुछ करूंगा, जिसकी उसे चाह थी। मगर, मेरे संकोच ने दूरी रख छोड़ी थी। एक ही डबल बेड पर

सोते रहने के बाद हम दोनों आलिंगनबद्ध तक न हो सके थे। मेरे संकोच को सही तरह से समझ कर उसने अपनी ओर से पहल कर दी थी।

उसके अति निकट, करवट बदल कर आ जाने के बाद भी मैंने शीघ्रता से हाथ न बढ़ाया तो उसने अभिसारिका की सी मोहक और मादक मुस्कान से मुझे देखा। उसे मुस्कराता पाकर मेरी हिम्मत बढ़ी, मैंने उसके बाल सहलाने शुरू किये। उसके बालों से होती हुई मेरी अंगुलियां अभी कंधों तक पहुंची ही थीं कि वह एक झटके से उठी और मुझे चूमने लगी।

उसके चुम्बनों में एक ऐसा दबाव था, जिसे महसूस कर इस बात का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल न था कि स्कूल के दिनों में कभी न कभी लोलिता को किसी कुंवारी टीचर से घनिष्ठ सम्बन्ध जरूर रहे होंगे। मैंने आंखें खोलकर देखा उसके गाल सुर्ख पड़ गये थे।

मुझ पर झुकी-झुकी लोलिता की आंखों में ऐसी मुस्कराहट थी जिसके सामने मेरी सारी मुस्कराहट फीकी पड़ गयी। उसने धीरे-धीरे मेरी कनपटियों से अपने होंठ सरकाने शुरू कर दिये। और, उसके हाथ, मेरी कमर को छूते हुए नीचे सरकते चले गये। अब तो कोई सन्देह न रहा कि वह इस मामले का अनुभव उठाए हुए थी।

इसके बाद क्या हुआ, बताने की आवश्यकता नहीं। मेरे लिए सब कुछ नया था। वैसे अनन्त युगों से चली आ रही इस सृष्टि की प्रक्रिया में हम दोनों की सांसे दहक रही थीं।

जैसा कि मैंने सोचा था कि लोलिता अनुभव उठाए हुए थी, यह बात सच साबित हुई। मेरे पूछने पर उसने इस बात को बेझिझक स्वीकार कर लिया। खाने की मेज पर उसने बताना शुरू किया। टुकड़ों-टुकड़ों में उसने जो कुछ बताया उससे पता चला कि दो साल पहले किसी और कैम्प में एक लड़की ने उसे यौन उत्तेजना का पहला पाठ पढ़ाया था।

जब मैंने उस लड़की का नाम पूछा तो उसने नाम बताने से इन्कार किया, मगर वह मेरी उत्सुकता जगा उठी थी। मैंने पूछा—

"क्या ग्रेस एंजिल.....।"

"नहीं....।"

"रोज.....।"

"नहीं.....।"

"ऐगन्ज.....।"

"नहीं–मगर तुम्हें ये सब नाम कैसे पता चले..... ?"

"रेम्सडेल में एक बार तुम्हारी कापी देखी थी। उसी में इन सब लड़कियों के नाम लिखे हुए थे।"

थोड़ी देर तक हम दोनों चुप रहे। अपने खाने में लगी रहकर वह बोली–

"अच्छा, तो जानना ही चाहते हो तो, सुन लो– उसका नाम एलिजाबेथ था–।"

मुझे हल्का सा आश्चर्य हुआ। एलिजाबेथ को लोलिता के क्लास की सबसे अच्छी लड़की के रूप में जाना जाता था। शार्लट बड़े गर्व से अपने मेहमानों के सामने बताया करती थी कि लोलिता की एलिजाबेथ बड़ी अच्छी सहेली है–गोया कि एलिजाबेथ की शराफत के साथ लोलिता के शराफत की वे गारण्टी लेती थीं। काश ! शार्लट यह सुनने के लिए जिन्दा रहती कि उसकी बेटी को सेक्स का पहला पाठ पढ़ाने वाली क्लास की सबसे सीधी और शरीफ लड़की एलिजाबेथ ही थी।

अब तो मुझे यह जानने की भी उत्सुकता हुई कि लोलिता का किसी लड़के के साथ शारीरिक सम्बन्ध बना था या नहीं। उसने जिस तरह आनन्ददायक साथ दिया था, और सब कुछ आराम से सह लिया था, उससे इस नतीजे पर भी मैं पहुंच चुका था कि वह नितान्त अपरिचित न थी।

थोड़ी देर तक लोलिता बात को घुमाती फिराती हुई अपनी क्लास की लड़कियों के किस्से सुनाती रही। फिर सीधी बात पर आ गयी–"हमारे कैम्प की हीरोइन बारबरा थी–सब लड़कियां उससे दोस्ती करने को व्याकुल रहती थीं–पर उसने सभी लड़कियों में मुझे ही अपनी सहेली के रूप में चुना था–इसकी वजह यह थी कि मैं कैम्प की सबसे अच्छी तैराक मानी जाती थी। हम लोग रोज सुबह ही जंगलों में दूर-दूर तक घूमने के लिए निकल जाते थे। कई बार झीलों में किश्ती चलाने के लिए मैं और बारबरा छोटी सी रबर की नाव भी ले लेते थे। कैम्प की सीमाओं में एक बूढ़े किसान और अधबहरे चौकीदार के सिवाय कोई और मर्द न था। सिर्फ होम्स का लड़का था....चार्ली। होम्स हमारे कैम्प की इन्चार्ज थी और चार्ली तेरह बरस का था। सुबह-सवेरे हम तीनों जंगलों की सैर को निकल जाते।

एक दिन बारबरा–चार्ली को लेकर झाड़ी के पीछे चली और मुझे निगरानी के लिए कह गयी। पहले तो मेरी समझ में कुछ न आया। लेकिन थोड़ी देर बाद जब झाड़ियों में झांक कर देखा तो सब कुछ समझ गयी। चार्ली के लिए बारबरा ही मास्टर बनी थी।

इसके बाद तो चार्ली हर दिन यही कुछ दोहराने को दीवाना रहने लगा। और बराबरा भी उसके लिए पल-पल प्रतीक्षा में समय गुज़ारती। एक सप्ताह तक यही सब चलता रहा—चार्ली को लेकर बारबरा झाड़ियों के पीछे चली जाती और मैं निगरानी करती रहती। एक बार बारबरा ने मुझको भी ट्राई करने के लिए कहा; लेकिन पता नहीं क्यों मेरा मन नहीं मानता था। चार्ली था भी ऊबड़-खाबड़ सा लड़का। बारबरा के अलावा कैम्प की और कोई भी लड़की उसके करीब आने की इच्छा न करती थी। वैसे था हट्टा-कट्टा। आखिर एक दिन बारबरा ने जब बहुत जोर दिया मैं मान गई। यह सोचकर तैयार हो गयी कि जब बारबरा इतना आनन्दित होती है तो मुझे भी एक बार ट्राई कर लेने में क्या हर्ज है। मैं भी चार्ली के पीछे झाड़ियों में चली गयी। मुझे और चार्ली को कोई पन्द्रह मिनट लगे होंगे—जब मैं लौटी तब भी मुझे उत्तेजना का एहसास था।

मुझ पर बलात्कार का अभियोग लगाने वाले ज्यूरी के माननीय सदस्यों, आप इस बात को भी जान गये होंगे कि लोलिता की जिन्दगी में आने वाला मैं पहला पुरुष न था।

अब तक दस बज चुके थे। हम लोग कमरे में लौट आये। खिड़की के नीचे बढ़ता हुआ शोर, कॉरीडोर को साफ करती हुई नौकरानियों की गुनगुनाहट और अपनी बढ़ती हुई उम्र की जिम्मेवारियाँ मैं सब कुछ भूल गया था। अगर याद रह गया था तो बस यह कि मेरी बांहों में छटपटाता हुआ लोलिता का दुबला-हल्के गुलाबी रंग का जिस्म, कमर के गिर्द फैली हुई दो पतली-पतली बांहें और पसीने के गढ़े में छलछलाती हुई मोटी-मोटी मछलियों की तरह लोलिता के गोरे-गर्म और मरमरी नितम्ब।

हमें बारह बजे से पहले-पहले कमरा खाली कर देना था, वरना हम पर दूसरे दिन का किराया मुफ्त में ठुक जाता। कमरे से बाहर निकलने से पहले लोलिता तीसरी बार बाथरूम गयी।

बाथरूम से आकर वह निढाल एक आराम कुर्सी पर बैठ गई। मैंने कपड़े पहन लिये थे। लेकिन वह अभी तक तैयार न हुई थी। जब मैंने उसे कपड़े पहनकर तैयार होने के लिए कहा तो उसने एक नज़र मेरी ओर देखा, फिर उसी तरह पड़ी रही। उपहारों से भरा हुआ सूटकेस आराम कुर्सी के पास ही पड़ा था, जब मैंने अपनी बात दुहराई तो वह झुंझलाकरउठी और सूटकेस को ठोकर मारती हुई शीशे की तरफ चली गई। सूटकेस का सारा सामान कमरे में बिखर गया।

मैंने उसकी ओर देखा। उसके चेहरे पर गुस्सा नहीं, पीड़ा थी।

"तुम तैयार हो जाओ, तब तक मैं होटल का हिसाब चुकाता हूं... ।" कहकर मैं नीचे चला गया।

नीचे आकर मैंने क्लर्क से इस बात को फिर पूछा कि मेरी पत्नी का टेलीफोन तो नहीं आया था ? उसके इन्कार करने पर मैंने कहा–

"खैर, कोई बात नहीं। अगर हमारे पीछे फोन आये तो कह दीजिएगा कि हम लोग राबर्ट के यहां चले गये हैं।"

क्लर्क ने सहमति में सर हिलाया और मेरे सामने बिल रख दिया। बिल देकर लाउंज की तरफ देखता हुआ बैठने की सोच ही रहा था कि लिफ्ट का दरवाज़ा खुला। लोलिता नीचे आ गयी थी।

मैंने सामान कार में रखवाया और पोर्टर को टिप देकर इंजन स्टार्ट कर दिया।

लोलिता अब तक चुप थी।

आधे घण्टे के बाद हम लोग ब्राइसलैण्ड की बस्ती से बाहर आ गये। उस आध घण्टे में लोलिता ने एक शब्द ही नहीं कहा था। वह चुपचाप एक मैगजीन पढ़ती रही थी।

"क्या बात है, तबियत तो ठीक है ना... ?" मैंने गियर बदलते हुए पूछा।

कोई जवाब न मिला।

"बोलती क्यों नहीं.... ।" मैंने गुस्से को दबाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"चुप रहो, मुझे परेशान मत करो..... ।" कहकर वह दोबारा उसी तरह सीट में धंस गयी।

अगले आध घण्टे तक मैं चुपचाप गाड़ी ड्राइव करता हुआ इस बात पर विचार करता रहा कि कहीं उसके साथ मैंने कोई ऐसी गलती तो नहीं कर दी है जो सारी उम्र अभिशप्त प्रेतात्मा की तरह मुझ पर मंडराती रहे।

मैं सोच रहा था कि उसे किस तरह बातचीत के लिए राजी किया जाए कि पीछे से आवाज आयी–

"ओ..... ।"

"क्या बात है..... ?" मैंने पीछे मुड़कर देखना चाहा, मगर गाड़ी की स्पीड इतनी तेज थी कि पीछे सिर न घुमा सका।

"ए..... ध्यान से गाड़ी चलाओ। तुमने अभी एक गिलहरी को गाड़ी के नीचे कुचल दिया है।"

मेरा मन हुआ कि हंस पडूं। लेकिन चुप रहा।

"अगले पेट्रोल पम्प पर ज़रा थोड़ी देर के लिए गाड़ी रोक लेना... ।" वह बोली—"मैं जरा बाथरूम जाना चाहती हूं।"

"ठीक है।" मैंने कहा और गाड़ी की स्पीड नब्बे से घटाकर सत्तर कर दी। मैं उससे मीठी-मीठी बातें करके उसे ख़ुश करना चाहता था। इस बात को भी सोच रहा था कि सड़क के इर्द-गिर्द फैले हुए जंगल घने हो गये हैं। पेट्रोल पम्प तो बहुत दूर होगा—सोचा क्यों न गाड़ी यहीं कहीं रोक दी जाए ताकि लोलिता को ज्यादह देर तक दबाव न सहना पड़े।

गाड़ी की स्पीड कम हो ही रही थी कि वह सीट पर सम्भल कर बैठ गयी। पता नहीं गाड़ी की स्पीड के कम होने का उसने क्या अर्थ लगाया था। ठीक या गलत, मुझे मालूम नहीं—लेकिन उसने कहा जरूर—

"रुको मत.....।"

"तुम घबराती क्यों हो.....।" मैंने गाड़ी की स्पीड दोबारा बढ़ा दी।

तभी वह हौले से हंसी।

मुझे यकीन न हुआ। मैंने पीछे मुड़कर देखा—वह सचमुच मुस्करा रही थी। उसे इस तरह मुस्कराते देखकर मेरे मन पर पड़ा सैकड़ों मन का बोझ जैसे उतर गया।

"बदमाश कहीं के.....।" उसने कहा—"मैं एक सीधी-सादी लड़की थी और तुमने मुझे बहला-फुसलाकर खराब कर दिया। जी कर रहा है इसी वक्त पुलिस को बुलाकर तुम्हारी रिपोर्ट कर दूं.....। लफंगे कहीं के।"

मेरी समझ में कुछ न आ रहा था।

आंखें सड़क पर, हाथ स्टेयरिंग पर, कान पीछे और दिमाग अगले शहर में, मैं कई हिस्सों में बंटकर रह गया था। कोई हिस्सा कुछ कहता था, कोई कुछ। जैसे बहुत सी आवाज़ें थीं और हर आवाज़ का अलग-अलग अर्थ था। सांय-सांय करती हवा में लोलिता की आवाज़ फिर उभरी—

"मैं ठीक से बैठ नहीं पा रही हूं....लगता है अन्दर कहीं जख्म हो गये हैं...।"

मुझे पसीना आ गया। गाड़ी को कन्ट्रोल में रखने की कोशिश करने लगा।

"तुम्हारे पास कुछ चेंज है- ?" लोलिता ने पूछा—"मैं मां से बातचीत करना चाहती हूं। अस्पताल का नम्बर क्या है ?"

"नम्बर। नम्बर जानकर क्या करोगी ?"

"क्यों..... ?"

"तुम मां से बातचीत नहीं कर सकती—क्योंकि तुम्हारी मां मर चुकी है।"

उसने अविश्वास के साथ मुझे देखा, जैसे मैं अभी हंस पड़ूंगा, पर

मेरी गम्भीरता देखकर उसे यकीन कर लेने पर मजबूर होना पड़ा।

मुझे उसे बताना पड़ा कि किन स्थितियों में उसकी मां दुर्घटना का शिकार होकर मृत्यु को प्राप्त हो गई है।

वह दोनों हाथों में चेहरा छुपाकर रो पड़ी।

शाम होने से पहले हम लोग लैपिंगविले पहुंच गये।

लैपिंगविले पहुंचने पर मैंने लोलिता को चार कामिक्स, एक चाकलेट का बाक्स, दो कोकाकोला, एक शानदार घड़ी, एक जड़ाऊं अंगूठी, एक टेनिस का बल्ला, एक जोड़ी स्केटिंग शूज, दूरबीन, ट्रांजिस्टर, च्विंगम का पैकेट, रेनकोट, धूप का चश्मा, एक बाक्स सैनेटरी पैड और कुछ नये कपड़े खरीदकर दिये।

होटल में हम दोनों अलग-अलग कमरे में ठहरें, पर आधी रात को लोलिता सिसकियां भरती हुई मेरे कमरे में चली आई।

हम दोनों ने समझौता कर लिया था।

अब मेरी कहानी का नया अध्याय शुरू होता है। यह अध्याय अनवरत यात्रा का है। हम दोनों सारे अमेरिका में एक जगह से दूसरी जगह घूमते हुए पता नहीं कितनी सड़कों पर से गुज़रे, कितने कस्बों में गये और कितने होटलों में ठहरे।

शक से बचने के लिए पहले-पहल मैं अगल-बगल कमरे किराये पर लेता था, लेकिन यह महसूस करके कि अलग-अलग कमरे का किराया भी देना पड़ता है और सुविधाजनक भी नहीं रहता, हम दोनों डबल बेड वाले कमरे में ठहरने लगे।

लोलिता मेरी जिन्दगी में बहुत ही महत्वपूर्ण रोल अदा कर रही थी। वैसे स्वभाव में यह तेरह-चौदह साल की लड़कियों से किसी भी तरह भिन्न नहीं थी, उसे भी जॉज की तेज-रफ्तार धुनों पर थिरकना, नाच गाना, आइसक्रीम, सिनेमा की पत्रिकाएं और मनोरंजक पिक्चरें पसन्द थीं। रिकार्ड सुनने का तो मानो उसे मर्ज था। पता नहीं कितने हजार सिक्के मैंने ज्यूक बाक्सों के भेंट किये होंगे-बुद्धू इतनी थी कि जो भी इश्तहार देखती उसी पर यकीन कर लेती। अगर वह किसी जगह पर लिखा हुआ देखती कि हमारी दुकान पर आइए तो वह उस दुकान में जाने की जिद्द पकड़ लेती। हम उस दुकान में जाते भी और आधा घण्टा खराब करने

के बाद नन्हीं-नन्हीं गुड़ियों, सस्ते गहनों, ऊट-पटांग खिलौनों से लदे फंदे बाहर निकलते।

अगर किसी रेस्त्रां के बाहर ठण्डी आइसक्रीम का कोई बोर्ड लगा होता तो लोलिता आइसक्रीम खरीदे बगैर न रहती। अब उसे कौन समझाता कि आइसक्रीम तो हर जगह ठण्डी ही मिलती है, गर्म नहीं।

अगर मैं कभी उसकी जिद्द पूरी न करता तो वह मारे गुस्से के या तो चुप हो जाती या जोर-जोर से रोने लगती। मगर इन सबसे अलग उसका अचूक हथियार उसका जिस्म था। जिसके लिए वह हजार मिन्नतें और मान-मनौव्वल करवाती, तब मेरी बांहों में आती।

कई बार सड़क पर गाड़ी चलाते-चलाते अगर मेरा जी, थोड़ी देर के लिए जंगलों में रुककर प्राकृतिक छांव के नीचे देह की प्यास बुझाने के लिए कर आता तो वह सैकड़ों नखरे करने के बाद, किसी न किसी किस्म का वायदा करवाकर ही हाथ लगाने की अनुमति देती।

मैंने शुरू में ही जान लिया था कि अगर लोलिता के साथ सम्बन्ध बनाए रखना है तो सिर्फ उसकी मांगे पूरी कर देने से ही काम नहीं बनेगा। उस पर कोई न कोई प्रतिबन्ध भी लगाकर चलना होगा। इसीलिए मैं अक्सर उसके कानों में फूंकता रहता कि मेरे और तुम्हारे सम्बन्ध एकदम गुप्त रहने चाहिएं-अगर किसी को पता चल गया तो मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, अलबत्ता तुम्हें सुधारगृह भेज दिया जाएगा।

मैं उसके मन में डर बिठाते हुए कहता-

"सुधारगृह या नारी निकेतन का मतलब जानती हो? ऐसी जगह जिसके बारे में कहा जा सकता धरती पर बना हुआ नर्क का टुकड़ा; जहां अच्छा खाना या सुख मिलने की बात तो दूर कच्ची-पक्की रोटी तथा च्विंगम तक मिलना दूभर हो जाएगा। अतः हम लोगों की भलाई इसी में है कि एक-दूसरे के राज पर पर्दा डालते हुए चुपचाप आराम से दिन गुज़ारते रहें। और फिर मेरे साथ रहने में तुम्हारा नुकसान भी क्या है? दुनिया के तमाम सुख तुम्हारे कदमों पर पड़े हुए हैं। तुम जो चाहती हो, मिल जाता है, और कहीं जाओगी तो कोई आदमी, तुम्हारी जैसी निकम्मी, फूहड़ लड़की को मुंह तक लगाना पसन्द न करेगा।"

लोलिता पर मेरी इन बातों का गहरा असर पड़ गया था।

हम दोनों में बिल्कुल दोस्तों जैसे सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। वैसे वह चाहे जितनी भी समझदार रही हो, पर हर दिन उसका दिल बहलाने के लिए मुझे कोई न कोई योजना बनानी पड़ती थी। यह बहाना

वर्जीनिया में लाइट हाउस दिखाने का होता या अर्कन्सास की गुफाओं में बने हुए अजीबो-गरीब कैफे में ले जाने का। खूबसूरत फोटो खरीदकर उसे देने का हो या जी भरकर आइसक्रीम खिलाने का। दिन गुज़ारने के लिए सुबह से ही लोलिता को एकाध सपना चाहिए होता था, जिसे कंधों पर लगाकर वह रात मेरी बांहों में उड़ी-उड़ी फिरती रहे।

इन तमाम यात्राओं के दौरान मुझे लोलिता पर कड़ी निगाह भी रखनी पड़ रही थी। मुझे हमेशा इस बात की शंका बनी रहती थी कि किसी को शक हो गया, या किसी ने लोलिता के साथ हमदर्दी दिखाकर बात पूछ ली तो सारा भाण्डा फूट जाएगा।

दो-तीन महीनों की पूर्ण स्वच्छंदता में लोलिता की देह में एक ऐसा निखार आ गया कि वह जहां भी जाती, लोग उसे एक नज़र देखकर दोबारा देखे बिना न रहते- शायद उसके लहू में थरथराती हुई मेरी उत्तेजना की लपटों ने उसे यहां-वहां से धो दिया था, जहां छू दिये जाने पर जवानी और बचपन के बीच की दीवारें टूट जाती हैं।

दो-तीन बार यादगार घटनाएं भी घटीं—एक बार गर्मियों की एक दोपहर को हम लोग पहाड़ी रास्ते से सफर करते-करते पेड़ों की घनी छांव देखकर सड़क के किनारे गाड़ी पार्क करके, नीचे चट्टानों पर उतर आये थे। मैंने एक दरी दोहरी करके पत्थरों पर बिछा दी थी और चरमराते पत्थरों की भरी गर्म छांव में लोलिता की देह मेरी परछांई में गुम हो गयी थी कि यकायक उफान उतर जाने के बाद लोलिता ने रोना शुरू कर दिया। शायद उसने शुरू-शुरू में कोई चीज मांगी थी—मैंने उत्तेजना की हालत में हां कह दी थी और अब उसे छोड़ने के लिए मजाक में वायदे से मुकर रहा था।

लेकिन लोलिता मजाक न समझ पायी थी और बच्चों की तरह सिसकियां भर-भर कर रोने लगी थी। मैं उसके निर्वस्त्र जिस्म पर बार-बार हाथ फेरता हुआ उसे मनाने की कोशिश कर रहा था। वह बार-बार मेरा हाथ झटक देती थी—मुझे दूर हो जाने को कह देती थी—और खुद वह पत्तों के नीचे चुभती किसी सूखी टहनी की चुभन सहते हुए भी पड़ी रही थी।

मैं कुहनियों पर सर टिकाए, उसके निर्वस्त्र जिस्म की खूबसूरती को निहारने की कोशिश कर रहा था कि पता नहीं कहां से दो बच्चे खेलते हुए हमारी ओर निकल आये थे।

मैं बच्चों के अकस्मात् आ जाने से सहम गया था, उठने में जल्दी न कर पाया, लोलिता ने भी बच्चों को देख लिया था, वह हड़बड़ा उठी थी, तभी करेला, ऊपर से नीम चढ़ा वाली कहावत सामने आयी—

बच्चे के पीछे से आवाज़ उभरी–

"टिन्नी। टोनी। तुम कहां चले गये।"

जब तक हम सम्भलते एक मोटी-ताजी औरत बच्चों का पीछा करती हुई हमारे सरों पर आ सवार हुई। मैं हड़बड़ा उठा। लोलिता का चेहरा भी धुंआ हो गया। हम उठकर उसी हालत में कपड़े और दरी समेटे भागकर कार तक पहुंचे। हमने कार के कुछ फासले पर एक आदमी की झलक पायी–पर इत्तफाक से वह हमारी ओर पीठ किये कैमरे से चित्र ले रहा था। वह इतना व्यस्त था कि उसे हमारे भागकर कार तक पहुंचने की आहट तक न सुनाई दी।

मैंने समय गंवाए बगैर गाड़ी का इंजन स्टार्ट कर दिया। कार को तेजी से भगाते-भगाते मैंने मोड़ घूमते समय पीछे पलट कर देखा–वह मोटी-ताजी औरत मुंह खोले, हमें यूं विस्मय से भरी देख रही थी जैसे उसने कोई अजूबा देख लिया हो।

कुछ आगे जाकर मैंने गाड़ी रोककर अपने तन पर कपड़े डाले, लोलिता को कपड़े पहनने को दिये–पिछली सीट पर बैठी लोलिता ने कपड़े पहनते-पहनते वो-वो गालियां मुझे सुनायीं कि बस ईश्वर ही जानता है–मैं कल्पना में भी नहीं सोच सकता था कि कोई लड़की ऐसी गालियां भी बक सकती है।

लोलिता की गालियां सुनकर भी मैं हंस रहा था, खुश था। और सच्चाई यह है कि अगस्त 1947 से लेकर अगस्त 1948 तक पूरे एक वर्ष तक मेरी खुशी की सीमा न थी। मैं एक छोकरी के नाज-नखरे उठाते हुए, दिन भर इधर से उधर मारे-मारे फिर कर, रात को अजनबी होटलों के रंग-बिरंगे कमरों में उसी लड़की की बांहों में पिघलने के बाद, अगले दिन फिर यात्राओं पर बढ़ जाने से, बढ़कर सुख की और कल्पना भी न कर सकता था। बेहूदगी और गुस्सा करने के बावजूद लोलिता मेरे लिए संसार की सबसे खूबसूरत लड़की थी। और मैं उसकी बात पूरी करने के लिए कुछ भी कर सकता था। एक जगह से दूसरी जगह भागने की थकान भी मुझे होती थी, मगर उस थकान को उतारने वाली लोलिता भी तो साथ थी।

मैं–आपको पहले भी बता चुका हूं कि एक साल का अरसा लोलिता के साथ भाग-दौड़ का गुज़रा। हम दोनों ने अमेरिका का कोना-कोना

छान मारा। न्यू इंग्लैण्ड से चलकर, दक्षिण में डिजनीलैण्ड होते हुए हम लोग कपास के मैदानों को पार कर प्रशान्त महासागर के तट पर पहुंचे। रास्ते में फ्लोरिडा भी पड़ता था, मगर वहां मैंने ठहरने का इरादा इसलिए न बनाया कि सम्भव है वहां शार्लट का कोई परिचित मिल जाए। प्रशान्त महासागर के उत्तर की ओर होकर घने जंगलों को काटती हुई सड़कों पर दौड़ते हुए हम कनाडा की सीमा छूकर पूर्व की ओर बढ़ने लगे।

इन यात्राओं में मैंने जो आनन्द भोगा वह अवर्णनीय है–मगर इसके साथ ही इन हजारों मील की दौड़ का कोई अर्थ न था। इतनी दूर गाड़ी चलाने के बाद भी हमें प्राकृतिक दृश्यों, शहरों, कस्बों, जंगल और होटलों की याद न थी।

इस बीच लोलिता का स्वास्थ्य भी पहले से कहीं अधिक अच्छा हो गया था। उसका कद दो इंच और भार आठ पौण्ड बढ़ गया था। पर उपलब्धि के नाम पर वासना की पूर्ति के अलावा मेरे पास कुछ था तो मैले नक्शे, मार्ग दर्शक किताबें, पुराने टायर और लोलिता का दिन ब दिन चिड़चिड़ापन।

इस बीच खर्च की भी समस्या मेरे सम्मुख उठ खड़ी हुई थी। इन यात्राओं के दौरान मेरी अधिकांश जमा पूंजी खर्च हो चुकी थी। मैं इस बात को सोचने लगा था कि किसी जगह जमकर मुझे कोई काम शुरू कर देना चाहिए ताकि इस बंजारेपन की जिन्दगी से मुक्ति तो मिले ही साथ ही लोलिता की पढ़ाई–लिखाई का भी ठीक से प्रबन्ध हो सके।

अन्ततः काफी सोच विचार के बाद मैंने बीर्डल्ले में ठहर जाने का निर्णय लिया। बीर्डल्ले का चयन करते समय मेरे सामने दो बातें थीं–एक तो वहां लड़कियों के स्कूल थे जहां लोलिता पढ़ सकती थी, दूसरे वहां एक कालेज था जहां मैं पढ़ा सकता था।

उस कालेज में फ्रेंच पढ़ाने वाले अध्यापक से पांच साल पहले मैं मिला था। तब मिस्टर गैस्टन ने मुझे कालेज में लेक्चरार का पद देने को आमंत्रित किया था। मगर बड़ी–बड़ी लड़कियों को लेक्चर देने से नफरत होने के कारण मैंने ऑफर अस्वीकार कर दिया था।

कुछ समय बाद गैस्टन ने एक पत्र में मेरी प्रशंसा करते हुए मुझे लिखा था कि मैं न सही पर मेरी फ्रेंच–इंग्लिश पाठ्य पुस्तक वे वहां पढ़ा रहे हैं।

बीर्डल्ले पहुंचकर हमें एक होटल में ठहरना पड़ा। फिर वहां के थियेटर स्ट्रीट में हमने एक मकान ढूंढ़ लिया। यह मकान कालेज के कैमेस्ट्री के एक प्रोफेसर का था, जो इन दिनों लम्बी छुट्टियां लेकर बाहर गये हुए थे। मकान में फर्नीचर वगैरह सभी कुछ था। हमें

साज-सजावट की कोई चीज़ खरीदने की जरूरत न पड़ने वाली थी।

मकान का मामला तय होने पर, मैं साजो-सामान और लोलिता के साथ वहां पहुंच गया। मकान के ड्राइंग रूम में घुसते ही लोलिता ने रेडियो ऑन कर दिया और सोफे पर लेटकर पास पड़ी हुई मैगजीनों में से एक मैगजीन निकाल कर पढ़ने लगी।

मैंने मकान का मुआयना शुरू किया। मकान बिल्कुल साधारण किस्म का था। कई कमरों को झांकने के बाद मैं दूसरी मंजिल के छज्जे पर जाकर खड़ा हो गया। छज्जे के सामने लाल रंग की बिल्डिंग दिखाई दे रही थी।

खड़ा-खड़ा चारों ओर देख ही रहा था कि कहीं दूर से घण्टी बजी और सामने दिखाई पड़ने वाली लाल बिल्डिंगों में से फ्राक पहने, किताब सीने से लगाए, हंसती-मचलती, बारह-तेरह साल की लड़कियों के ग्रुप बाहर आने शुरू हो गये। मेरा दिल खुश हो गया। मैंने मन ही मन सोचा कि मकान बढ़िया नहीं तो क्या हुआ कम से कम बैठे-बिठाए दिन में दो बार में लड़कियां तो देखने को मिला करेंगी।

मैं नीचे चला आया।

अगले दिन मैं लोलिता को अपने साथ लेकर एक स्कूल में दाखिला करवाने ले गया।

स्कूल पहुंचते ही क्लर्क ने हमारा स्वागत किया। मैंने लोलिता को उसकी हम उम्र की लड़कियों के साथ प्ले ग्राउण्ड की ओर खेलने को भेज दिया। जल्द ही मेरी मुलाकात हेड मिस्ट्रेस से हुई। उसने बड़ी आत्मीयता से मेरा स्वागत किया। जब हम बैठ गये तो चश्मा उतार कर रखती हुई वह बोली–

"प्रोफेसर गैस्टन ने आपका जिक्र किया था। वे हमारे स्कूल के बहुत शुभचिंतक हैं और अपने सभी मित्रों के बच्चों को पढ़ाने के लिए यहीं भेजते हैं।"

मैं मन ही मन हंसा। यह बात सच थी कि मिस्टर गैस्टन से उस स्कूल के बारे में चर्चा चली थी; उन्होंने मुंह बिचका कर कहा था कि वहां उस स्कूल से निकम्मी और दूसरी जगह नहीं। पर मेरे इस बात के पूछने पर कि फिर कोई दूसरा स्कूल वे बतायें–इस बात पर वे सोच में पड़ गये थे। किसी एक भी दूसरे स्कूल का नाम न ले सके थे। अन्ततः उन्हें कहना पड़ा था–अब वह स्कूल जैसा भी है, पर अन्य स्कूलों से बेहतर है।

उन्होंने यह भी कहा था कि वे स्कूल की हेड मिस्ट्रेस को फोन कर देंगे। फोन करने वाली बात इसलिए ताकि हेड मिस्ट्रेस मुझसे पूर्व ही परिचित रहे और परिचय के मामले में सवाल जवाब में समय न गंवाए।

यही वजह थी कि हेड मिस्ट्रेस ने मिस्टर गैस्टन का नाम लिया था और तपाक से स्वागत भी किया था। वह कह रही थी–

"हमारा स्कूल आम स्कूलों से ज़रा हटकर है..हम अपनी लड़कियों को किताबी कीड़ा बनाने के बजाय सुसंस्कृत और सभ्य बनाने में अधिक विश्वास रखते हैं।

आज का सामाजिक जीवन इतना जटिल हो गया है कि दुनियादारी की जिन्दगी में उतरते समय उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। अगर हम उन्हें कुछ बीती हुई लड़ाइयों, बादशाहों, कीड़े-मकोड़ों का नाम ही बताकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मान लें तो इससे फायदा क्या होगा। उन्हें बच्चों की बीमारी में काम आने वाली दवाओं, खाने में पड़ने वाले मसालों की जानकारी कहीं ज्यादह जरूरी है..क्यों..आप मुझसे सहमत हैं न... ?"

यकायक प्रश्न पूछे जाने पर मैं थोड़ा हड़बड़ा गया। फिर सम्भल कर बोला–

"जी, दरअसल यूनिवर्सिटी से मेरा सम्पर्क छूटे इतना अरसा हो गया है कि मैं..आज कल के स्कूलों के कोर्स के बारे में ज्यादह जानकारी नहीं रखता।"

वह समझ गयी कि मैं शिष्टाचार के नाते उनकी बात काट नहीं रहा हूं, मगर सन्तुष्ट नहीं हुईं। उन्होंने घण्टी बजाकर चपरासी को बुलाया और कहा–

"जरा जेबी और मार्गेट को बुला लाना।"

चपरासी के चले जाने के बाद वे मुझसे बोली–

"मैं अपने स्कूल की दो लड़कियों को बुला रही हूं, आप उनसे बातचीत करके देखिए। सम्भव है हमारे स्तर से आप पूर्णतयः सन्तुष्ट हों।"

थोड़ी देर बाद दो लड़कियां अन्दर आयीं। हेड मिस्ट्रेस ने उन दोनों का मुझसे परिचय कराया और खुद कमरे से बाहर चली गयीं। उनके बाहर जाते ही उन दोनों लड़कियों को देखकर मेरा मन मचलने लगा। दोनों लड़कियों की उम्र बारह-तेरह साल के आसपास थी। मैं कोई एकाध हरकत कर बैठता, कुछ ज्यादह नहीं तो उनको करीब बुलाकर उनसे स्नेह पूर्ण व्यवहार में बात करने के बहाने उनकी पीठ, कमर और नितम्ब पर हाथ फिरा ही लेता, मगर एक तो लड़कियां दो थीं, दूसरे मुझे ख्याल आया कि मैं लोलिता को वहां भर्ती कराने आया था, अय्याशी करने नहीं।

अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करते हुए मैंने दोनों से मौसम, इतिहास, भूगोल और जीवन की आम समस्याओं के बारे में विविध प्रश्न किये।

दोनों लड़कियों ने बड़े बेझिझक भाव में प्रश्नों के उत्तर दिये। कुछ प्रश्नों के उत्तर गलत भी थे, मगर उनकी गलतियों के लिए मैं खुद ही अधिक जिम्मेवार था। उन बारह तेरह साल की लड़कियों से मैं यूनिवर्सिटी स्तर के प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता था—बावजूद इसके यह तो मैं मान ही गया था कि उनका बौद्धिक स्तर उनकी उम्र से कहीं अधिक है। थोड़ा झिझक होने के बावजूद मैं उनसे बड़े आराम से इधर-उधर की बातें कर रहा था। चोर-चोरी से जा सकता है, मगर हेरा फेरी से नहीं। मुझे उनसे आंख सेकने का मौका तो मिल ही रहा था, आंखें तो बन्द करके रख नहीं सकता था, सो आंखें सेक रहा था। अभी यह सिलसिला कुछ देर और चलता कि तभी हेड मिस्ट्रेस आ गयीं और मुझे अपनी नज़रें उस पर टिकानी पड़ीं।

मैंने मन ही मन चटखारा लेकर अब तक का रसपान कंठ से नीचे उतारा। और हेड मिस्ट्रेस की ओर पूरी तरह मुखातिब हो गया।

हेड मिस्ट्रेस ने मेरे चेहरे के भावों से ही सन्तुष्टि का अन्दाजा कर लिया था, सो लड़कियों को जाने की इजाजत दे दी।

काश, हेड मिस्ट्रेस इस बात को जान पाती कि मुझे उनके प्रश्नों के उत्तर से कहीं ज्यादह उनके किशोर युवा अंगों की मादकता से सन्तुष्टि प्राप्त हुई थी। एक ही स्वाद को साल भर से कुछ ज्यादह समय तक चखते रहने के बाद मुझे एकदम से रस मलाई का आनन्द उठाने का मौका मिल गया था।

लड़कियां चली गयी थीं।

"कहिए, हमारे विद्यार्थी आपको पसन्द आये..?" हेड मिस्ट्रेस ने पूछा।

"बहुत...।" मैंने संक्षिप्त अर्थ में उत्तर दिया। लेखक और प्रोफेसर होने के नाते मैं बातचीत में बहुत किफायती शब्दों का इस्तेमाल करता था। फिर भी मैंने कहा—"आपकी प्रणाली परम्परागत प्रणालियों से जरा भिन्न अवश्य है, लेकिन उन दोनों लड़कियों को देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि इस प्रणाली में ऐसा कोई दोष नहीं है कि मैं अपनी बच्ची को किसी अन्य स्कूल में भर्ती कराने की सोचूं...।"

हेड मिस्ट्रेस मुस्करायी—स्पष्ट था कि प्रशंसा के ये शब्द उसे अच्छे लगे थे। उन्हें मालूम न था कि वे कितना तगड़ा चारा मेरे सामने डाल चुकी हैं।

"फीस और फार्म कहां जमा किये जायेंगे ?" मैंने बातचीत खत्म करने के इरादे से पूछा।

हेड मिस्ट्रेस ने घण्टी बजायी। चपरासी अन्दर आया।

"इन्हें मिसेज सीवर्ड के पास ले जाओ–।" उन्होंने चपरासी से कहा और मेरी ओर देखती हुई बोली–"आप इनके साथ चले जाइए ...बाहर दफ्तर में आपसे आवश्यक कागजातों पर हस्ताक्षर करा लिये जायेंगे।"

दफ्तर में लगभग आधा घण्टा लग गया। सारी कार्यवाही पूरी होने के बाद मैंने लोलिता को बुलवा भेजा। वह खेल में लगी हुई थी, आना नहीं चाहती थी–काफी समय बाद उन्मुक्त वातावरण मिला था। पर उसे आना पड़ा।

गैस्टन का बीर्डल्ले में काफी सम्मान था। यह सम्मान उसने स्वयं अर्जित किया था। लोग उसका नाम सम्मान से लेते थे। वह जिधर से गुजरता था, लोग हैट उतारकर उसका अभिवादन करते थे।

उसके परिचय से मुझे भी सामाजिक व्यवहार बनाने में लाभ मिलने की आशा थी। सब उसका सम्मान करते थे और वह मेरा सम्मान करता था। जब भी समय मिलता वह मेरे पास आ जाता। हम दोनों के बीच शतरंज की बाजी बिछती। उसे लेकर लोलिता के लिए मुझे कोई खतरा नज़र न आया था।

उसके अलावा, मैं अन्य हर ओर से सतर्कता बरतना चाहता था। चाहता था कि मेरे यहां लोगों का आना-जाना न हो। हमारे सामने वाले मकान में मिस फेबियन नामक विधवा रहती थी। वह पहले दिन से ही लोलिता में रुचि लेने लगी थी, उसके स्कूल जाते-आते समय वह उसे टोकती थी। अपने यहां आने को निमंत्रित करती थी। और मुझे यह जरा भी पसन्द न था कि लोलिता किसी से घुले-मिले।

नौकर के नाम पर हमारे यहां सिर्फ एक औरत काम करने आती थी। काम तो वह ठीक करती थी, मगर उसके बात व्यवहार से मुझे पहले दिन से ही लगा था कि वह शक्की मिजाज है। लोलिता को अपनी बेटी बताने के बाद उसने खोद-खोद कर कुछ अन्य बातें पूछनी चाही थीं–जैसे कि उसकी मां कहां है ? बिन मां की बच्ची को पालना मेरे लिए तो काफी तकलीफ देह होगा, क्यों न मैंने उसे बोर्डिंग हाउस में

रख दिया...वगैरह-वगैरह। वह आगे ज्यादह बातों की पूछताछ न करे इसलिए मैंने उससे जहां यह साबित कर दिया था कि मुझे बात करना ज्यादह पसन्द नहीं, वहीं उसकी ड्यूटी बांध दी थी। उसे अपने कमरे में तो घुसने ही न देता था—बिस्तरों को झाड़ने और चादर बदलने के कार्य पर तो उसे हाथ भी न लगाने दिया था—डर था कि कहीं वह हमारे भेद न जान ले। लोलिता को भी समझा दिया था कि उससे कोई बात न करे।

यह सब सतर्कताएं जहां चल रही थीं वहीं मैं इस बात को भी महसूस कर रहा था कि लोलिता रोज-ब-रोज पहले से ज्यादह जिद्दी और चालाक होती जा रही है। लोलिता भी भली-भांति समझ चुकी थी कि दुनियाबी तौर पर भले ही वह मेरी बेटी कहलाती हो, मगर उसकी सारी खुशियां मेरी मुट्ठी में बन्द हैं।

इसीलिए वह जिस्म के मामले में मुझे पूरी तरह मोहताज बनाए हुए थी। वह मुझे जिस तरह चाहती घुमा सकती थी। एक बार इस तरह का एहसास हो जाने पर कि वह बिस्तर पर मुझसे कोई भी बात मनवा सकती है, उसने मेरी इस कमजोरी का भरपूर दुरुपयोग करना आरम्भ कर दिया था। कई बार तो एक-एक चुम्बन के लिए वह मुझसे घण्टों खुशामद करवा लेती थी। कई बार तो वह जब तक नया खिलौना या कोई अन्य चीज दिलवाने का मुझसे वादा न करा लेती अपने पुट्ठे पर हाथ न धरने देती, पिछले तीन महीनों में उसने मुझ पर दबाव डाल-डाल कर अपना जेब खर्च दुगना करवा लिया था।

एक दो बार मैंने यह जानने की भी कोशिश की थी कि वह इतने पैसों का क्या करती है ? उसकी सारी जरूरतें तो मैं पूरी कर देता था—स्पष्ट था कि वह या तो स्कूल में रोज अपनी सहेलियों को पार्टी देती थी या फिर मुझसे चुराकर पैसों को जोड़ रही है। और मुझे शंका सताने लगी थी कि ऐसा होने पर वह ढेर सारे रुपये एकत्र कर कहीं किसी दिन फुर्र न हो जाए।

सरकारी वकील ने मुझ पर यह आरोप लगाया है कि मैंने लोलिता को उसके सगे-सम्बन्धियों से दूर रखकर जेल की सी कोठरी में बन्द कर दिया था। श्रीमान्, यह आरोप निराधार है। मैंने लोलिता को कभी भी कैद में रखने की चेष्टा नहीं की। उसे लड़के-लड़कियों से मिलने-जुलने की पूरी आजादी थी। आपको मेरी बातें अजीब लगेंगी। अब यह बात दूसरी है कि ईर्ष्यालु स्वभाव का होने के कारण मैं किसी

भी पुरुष से उसकी मित्रता होते न देखना चाहता था चाहे उसकी उम्र बारह साल की हो या बहत्तर वर्ष की।

लड़कियों में उसकी दोस्त ओपल, लिण्डा, ऐविस, इवा थी, लेकिन मोना से उसकी पक्की दोस्ती थी। एकाध बार मोना से बातचीत होने पर मैंने लोलिता के ब्वाय-फ्रैण्ड के बारे में जानने की कोशिश की थी। लेकिन मोना ने पहले तो कोई जवाब न दिया फिर जब मैंने घुमा-फिरा कर दो-तीन बार वही प्रश्न दोहराया तो हंसती हुई बोली-

"लोलिता को लड़कों में कोई रुचि नहीं। वह उनसे दोस्ती करने के बजाय उनका मजाक उड़ाती है। और सच पूछिए तो हम दोनों ही रिगर पर मरती हैं।" रिगर बीर्डस्ले का हीरो था। उम्र 32 वर्ष, पेशा-फुटबाल खेलने और शौक-शराब पीकर सड़कों पर गाते हुए घूमना।

मैं समझ गया मोना मजाक कर रही है, बल्कि सन्तुष्ट हो गया कि लोलिता का झुकाव अभी किसी लड़के की ओर नहीं बन पाया है।

दिन यूं ही बेफिक्री में गुजर रहे थे। एक दिन लोलिता ने स्कूल से लौटने के बाद बताया कि उसके स्कूल में ड्रामा होने जा रहा है। उसके कथन से ड्रामे के प्रति उसकी जिज्ञासा का ज्ञान हुआ था। मैंने पूछा-

"तुम भी उसमें हिस्सा लोगी... ?" नाश्ते की मेज पर से केक का पीस मुंह में रखते हुए मैंने पूछा।

"अभी कुछ सोचा नहीं...।"

"क्यों... ?"

"क्योंकि जब तक मैं डैडी से पूछ नहीं लेती कुछ नहीं कर सकती...।" उसने मुस्करा कर कहा-"यद्यपि सभी लोग इस बात पर जोर दे रहे हैं कि मैं ड्रामे में हिस्सा लूं।"

मैंने विस्मय के साथ उसकी ओर देखा। थोड़ा अविश्वास सा हुआ, कुछ खुशी भी। खुशी इस बात पर कि उसने अपने दिल में मेरे लिए इतना सम्मान रख रखा था कि कोई भी नया काम करने से पहले मुझसे पूछना आवश्यक समझती थी। और अविश्वास इस बात का कि वाकई क्या लोलिता मेरा इतना सम्मान करती थी।

मैंने चाय पीते हुए कहा-

"सोच कर बताऊंगा।"

उसने जिद्द न की।

मैं रात भर सोचता रहा कि उसे ड्रामे में हिस्सा लेने दूं या न लेने दूं। उसके उत्साह से मैं इस बात का आभास पा चुका था कि वह ड्रामे में हिस्सा

लेने के लिए बेताब है। उसे अनुमति न देने का अर्थ था कि उसके मन में हीन भावना जन्म ले बैठे। वह इस बात को मान बैठे कि मैं उस पर इतना अधिक अंकुश रखता हूं। मनोविज्ञान का जानकार होने के नाते मैं इस बात को भी समझता था कि अगर इस तरह बच्चों की भावनाओं को दबाया जाए तो वे उच्छ्रृंखल हो जाते हैं। उनके मन में विद्रोह की भावना जन्म ले बैठती है। वे जहां अभिभावक से पूछकर काम करने की आदत रखते हैं, वहीं उसके विरुद्ध जाकर वे चोरी से काम करने लगते हैं, क्योंकि उन्हें पूर्वानुमान होता है कि अमुक कार्य की इजाजत तो उन्हें मिलेगी नहीं।

यह स्थिति खतरनाक होती है।

साथ ही साथ–उसे नाटक में हिस्सा लेने देने की अनुमति देने का अर्थ था कि रिहर्सल के बहाने समय–असमय घर आना। ड्रामे में हिस्सा लेते हुए वह हिस्सा लेने वाले कुछ युवकों के सम्पर्क में भी आयेगी। कुछ अन्य ऐसे लोगों के सम्पर्क में भी आ सकती थी, जिनका पढ़ाने से ताल्लुक न होकर नाटक वगैरह सिखाने, निर्देशन करने से ताल्लुक हो। उनमें से कोई ऐसा भी हो सकता था जिससे लोलिता खुल जाती और वह भेद, जो हम दोनों के बीच सीमित है किसी तीसरे पर भी खुल जाता। ड्रामे में काम करने वाला कोई लड़का उसकी कोमल भावनाओं को उभारकर उससे इतनी निकटता बना लेता जो आगे चलकर मेरे लिए दुःखदायी बन जाता।

काफी सोच-विचार के बाद अन्ततः मैंने यही निर्णय लिया कि उस पर अंकुश रखूंगा। सुबह को स्कूल जाते समय लोलिता ने पूछा–

"तो क्या सोचा, मैं ड्रामे में हिस्सा लूं या न लूं...।"

मैंने शुष्कता से जवाब दिया–

"कोई जरूरत नहीं–तुम्हारी पढ़ाई लिखाई का नुकसान होगा।"

वह चुपचाप चली गयी। मुझे इस बात का जरा भी अनुमान न था कि मन ही मन उसमें ज्वालामुखी धधक रहा है। शाम को जब वह पढ़कर आयी तो किताब कापियां पटकते हुए बोली–

"आपको हेड मिस्ट्रेस ने याद किया है।"

"क्यों.. ?" मैंने चौंक कर पूछा–"तुम्हारी फीस तो समय पर जमा कर दी गई है....।"

"बात फीस की नहीं है।"

"फिर तुमने क्या कोई शरारत कर दी है, जिसकी शिकायत के लिए मुझे बुलाया गया है ?"

"ऐसा कुछ नहीं।"

"फिर क्या है... ?"

"मुझे नहीं मालूम। हेड मिस्ट्रेस ने चलते समय कहा था कि मैं अपने डैडी को भेज दूं...। मैंने आपसे कह दिया।"

अगले दिन मैं हेड मिस्ट्रेस से मिलने गया। उत्सुकता में मैं भरा हुआ था। हेड मिस्ट्रेस ने मुस्कराने की औपचारिकता दर्शाते हुए मेरा स्वागत किया। बैठने की औपचारिकता के बाद उन्होंने कहा–

"मैंने आपको इसलिए याद किया है क्योंकि मुझे मालूम हुआ है कि आप को अपनी बेटी का ड्रामे में हिस्सा लेना पसन्द नहीं।"

अब मैं समझा। उनके उत्तर के लिए मैं तैयार न था। मैंने कहा– "जी हां, उसने मुझसे अनुमति चाही थी, मैंने मना कर दिया। और मना करने की वजह यह है कि मैं इस बात को नहीं चाहता कि इस उम्र की लड़कियों को और ज्यादह आजादी मिले। उसे पढ़ाई-लिखाई के नाम पर यूं भी पूरी आजादी मिली हुई है। इसके अलावा ड्रामे में लड़के भी काम करेंगे। मुझे यह बात पसन्द नहीं।"

मैंने एक ही सांस में सारी बात कह दी थी, ताकि किस्तों में कहने की आवश्यकता न रहे। हेड मिस्ट्रेस ने धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनी। मेरे चुप होने पर कहा–

"मिस्टर हम्बर्ट–जो बात आपने कही उसका हमें पूरा-पूरा ध्यान है। हम भी इस बात को समझते हैं कि इस उम्र की लड़कियों को कितनी छूट दी जानी चाहिए, कितनी नहीं। स्कूल की तमाम लड़कियों की जिम्मेदारी हम लोगों पर है, और हमने हमेशा इस बात पर निगाह रखी है कि किसी विषय को लेकर स्कूल को बदनामी न उठानी पड़े। आपकी बेटी में टैलेन्ट है। दो-चार बार की रिहर्सल में ड्रामा टीचर ने जो टैलेन्ट पाया है, उसकी प्रशंसा शब्दों में नहीं की जा सकती। यदि रिहर्सल की वजह से कभी देर तक रुकना पड़ा तो स्कूल की ओर से इस बात की व्यवस्था रहेगी कि किसी न किसी टीचर के साथ उसे घर तक पहुंचाया जाए। ड्रामा स्कूल के वार्षिकोत्सव के अवसर पर खेला जाएगा, इससे स्कूल का नाम तो होगा ही, आपकी बेटी भी पूरे शहर में चमक जाएगी।"

हेड मिस्ट्रेस के लम्बे चौड़े लेक्चर के बाद मैंने पूछा–

"ड्रामा का नाम क्या है ?"

"ऐनचेंटेड हण्टर्स....।" उसने बताया।

मैं चौंका–क्योंकि यह उस होटल का नाम था जहां मैंने लोलिता की देह को प्रथम बार पाया था।

उसके बाद तो लोलिता पर अपने ड्रामे का पार्ट याद करने की धुन सी सवार हो गयी। सुबह हो तो, शाम हो तो, वह अपने सामने ड्रामे की स्क्रिप्ट खोले, आईने के सामने खड़ी ड्रामे के संवाद दोहरा रही है, ऐक्टिंग की रिहर्सल कर रही है। उसकी इस तन्मयता से मुझे खुशी ही होती। इसी बीच इस बात की जानकारी पाकर कि ड्रामे में उसे पिआनो भी बजाना है। रोल में स्वाभाविकता लाने के लिए मैंने उसे सप्ताह में एक बार मिस ऐम्परर के यहां जाकर पिआनो सीखने की इजाजत दे दी। पियानो सिखाने का चार्ज भी मैंने जमा कर दिया।

उस दिन मंगलवार था। मैं शाम के समय मिस्टर गैस्टन के साथ शतरंज की बाजियां लड़ा रहा था। बाजी फंसी हुई थी, मेरी सारी तन्मयता शतरंज के मोहरों के साथ थी, तभी फोन की घण्टी बज उठी। एक–दो घण्टी पर मैंने ध्यान न दिया, मगर जब घण्टी बजती ही गयी और मेरा ध्यान भंग होने लगा तो मुझे जाकर कॉल अटेण्ड करनी पड़ी। फोन मिस ऐम्परर का था। मेरी आवाज और परिचय जानकर उन्होंने शिकायती स्वर में कहा–

"क्या बात है मिस्टर हम्बर्ट, क्या आपकी बेटी ने पिआनो सीखने का इरादा स्थगित कर दिया है। वह पिछले मंगलवार को भी नहीं आयी आज भी नहीं आ पायी। मैं उसकी प्रतीक्षा करती रह गयी।"

मेरी ऊपर की सांस ऊपर, नीचे की नीचे रह गयी। मेरी समझ में न आया कि क्या उत्तर दूं। मैंने खुद को सम्भाल कर संयमित भाव से उत्तर दिया–

"आई एम सॉरी मिस ऐम्परर...मैं आपको सूचना न दे सका। दरअसल पिछले मंगलवार को लोलिता की तबियत खराब हो गयी थी, और आज भी...। आपको कष्ट हुआ उसके लिए खेद है। आइन्दा अगर ऐसी कोई बात हो तो आपको पूर्व सूचना दे दी जाया करेगी..।"

मुझे 'आज' का कोई उचित बहाना न सूझ सका था, अतः मैंने अधूरी बात छोड़कर उस दिन भी लोलिता के अस्वस्थ होने की बात एक प्रकार से कह दी थी।

"कोई बात नहीं....।" उधर से फोन रख दिया गया।

फोन रखकर मैं गैस्टन के साथ बिछी बाजी को पूरी करने के लिए बढ़ आया। मगर मनःस्थिति उखड़ी-उखड़ी थी। इस बात से गैस्टन को

उजागर करना आवश्यक न था, अतः बाजियां चलता रहा।

बेमन से चालें चलने की वजह से दो-तीन बाजी में ही मैं मात खा गया। मिस्टर गैस्टन को भी खेल में मजा न आ रहा था अतः उन्होंने आगे खेलने का इरादा त्याग कर घर जाने की बात कही।

मैं भी यही चाहता था। उनके जाने के बाद मैंने इस बात की आहट पायी कि लोलिता घर में ही थी, अपने कमरे में। मैं तेज कदमों से उसके कमरे की ओर बढ़ गया। वह ड्रेसिंग टेबल के सामने स्कर्ट पहने, टांगे हिला-हिलाकर नाटक स्क्रिप्ट सामने रखे, रिहर्सल कर रही थी। उसका स्कर्ट काफी सरका हुआ था—उसकी चिकनी पिण्डलियों के ऊपर से गुजरती हुई मेरी दृष्टि जांघों पर जा ठहरी। मैंने महसूस किया कि पिछले कुछ दिनों से लोलिता की जांघें अच्छी तरह से भरनी शुरू हो चुकी हैं, पर उस समय उसकी देहयष्टि की ओर लोलुप होने के बजाय, मेरे दिमाग में जो उधेड़बुन थी उसकी सफाई के लिए उतावला हो रहा था।

मैंने सवाल दागा—

"पिछले मंगलवार को तुम मिस ऐम्परर के यहां गयी थीं ?"

उसने कोई जवाब न दिया। वह उसी तरह स्क्रिप्ट पर नज़रें टिकाए, हाथ में केक का टुकड़ा लिए खाती, मुंह चलाती रही, अलबत्ता उसके होंठों ने बुदबुदाना बन्द कर दिया था।

"और आज तुम कहां थीं.... ?"

"आप तो ख्वामखाह ही नाराज होने लगते हैं...।" मेरा दूसरा सवाल सुनकर उसने मेरी ओर देखते हुए कहा—"पिछले मंगलवार को मैं और मोना स्कूल से सीधे बाग में चले गए थे। हमें अपना लेसन याद करना था। यहां तो सारे दिन घर में बैठे-बैठे मन ऊबने लगता है।"

मुझे लगा वह सच बोल रही है, पर विश्वास न हुआ—।

"अच्छी बात है, मैं चेक किये लेता हूं..।" कहकर मैं फोन के पास गया।

फोन मोना की मां ने उठाया। मैंने उनसे फोन पर मोना को बुलाने के लिए कहा।

मोना के आ जाने पर मैंने पूछा—

"पिछले मंगलवार को तुम दोनों कहां थीं... ?"

"जी, हम बाग में चले गए थे...।" उसने बेझिझक बताया।

"लेकिन, तुम्हें यह मालूम था कि उस दिन लोलिता को पिआनो सीखने जाना था ?"

"जी, मुझे मालूम था—मैंने लोलिता से कहा भी था, मगर उसका मूड इतना ऑफ था कि हम लोगों को दिल बहलाने के लिए बाग में जाना पड़ा था। क्या हमने कोई गलती की... ?"

"नहीं, नहीं....।" मैंने कहा और फोन रख दिया।

जब मैं फोन रखकर पलटा तो मैंने पाया ड्राइंग रूम में लोलिता एक स्टूल पर पांव रखे मुझे घूर रही है। उस समय भी उसकी स्कर्ट सरकी हुई थी, और वह कोई भोली-भाली लड़की न लगकर किसी ग्राहक की प्रतीक्षा करती बाजारू वेश्या लग रही थी। मुझसे नज़रें चार होते ही उसने कटाक्ष पूर्ण स्वर में कहा—

"तसल्ली हो गयी...।"

"हां..." मैंने झुंझलाहट में भरकर कहा—"लगता है तुमने मोना को पहले ही सिखा रखा था....।" रुककर मैंने सशंकित स्वर में पूछा—"वह हम दोनों के बारे में कितना जानती है ?"

"सब कुछ...।"

उसके इस दो टूक जवाब पर मैं सन्न रह गया। मैंने उसे घूरकर देखा—वह उसी तरह स्टूल पर पांव रखे धीरे-धीरे हिला रही थी। मैं आवेश में भर उठा था। क्रोधित स्वर में कहा—

"देखो लोलिता, बहुत हो चुका। तुम्हें अब ये बेहूदा हरकतें बन्द कर देनी चाहिएं। अगर तुमने अपने तौर-तरीके न सुधारे तो मुझसे बुरा कोई न होगा।"

"तब आप क्या करेंगे... ?" उसने सीधे मेरी आंखों में देखते हुए कहा।

मैंने गुस्से में आकर जोर से स्टूल में ठोकर मारी। स्टूल लोलिता के पैरों के नीचे से खिसक गया। मैंने चीखकर कहा—

"अपने कमरे में चली जाओ...।"

मगर वह उसी तरह खड़ी रही।

"अन्दर जाओ...।" मैंने उसकी बांह पकड़कर उसे अन्दर की ओर ढकेलते हुए कहा।

"नहीं जाती..नहीं जाती...नहीं जाती...।तुम मेरा क्या कर लोगे?"

उसके बाद हम दोनों में जोर-शोर से झगड़ा शुरू हो गया। उसने मुझ पर आरोप लगाया कि उसे हथियाने के लिए मैंने उसकी मां की हत्या कर दी है। मैं अपने क्रोध पर काबू न पा रहा था।

"तुम मुझे रोकने वाले कौन होते हो ? खबरदार जो तुमने मुझे हाथ भी लगाया। मैं चीख-चीखकर दुनिया से कहूंगी कि...।"

लोलिता बात को बतंगड़ बनाए दे रही थी—इससे पहले कि मैं गुस्से में उसके साथ ज्यादती कर बैठता, फोन की घण्टी बजी। मेरे फोन उठाने पर किसी औरत की आवाज आयी—

"आप लोगों को थोड़ी सी तमीज भी होनी चाहिए।" स्वर में चिड़चिड़ापन था—"यह शरीफों की बस्ती है—आप लोगों को लड़ने-झगड़ने का इतना ही शौक है तो दरवाजे-खिड़कियां बन्द करके झगड़िये—नुमाइश क्यों लगाते हैं।"

"माफ कीजिएगा...मेरा इरादा आप लोगों की शांति भंग करने का नहीं था।" कहते-कहते मैंने सामने देखा—सामने की खिड़की खुली हुई थी और मिस फेबियन अपने छज्जे पर खड़ी हुई उत्सुकता से हमारे कमरे की ओर देखते हुए पड़ोसियों को नमक-मिर्च लगाकर सुनाने के लिए मसाला इकट्ठा कर रही थीं। मैंने फोन क्रेडिल पर रखा और झपट कर खिड़की बन्द कर दी।

उसी समय, नीचे से दरवाजे के बन्द होने की आवाज आयी।

मैंने पलट कर देखा—लोलिता वहां न थी। वह शायद उसी समय वहां से हट गयी थी जब मैंने फोन काल अटेण्ड की थी।

मैं उसके कमरे की ओर झपटा—

"लोलिता... लोलिता..." मैंने आवाजें दीं।

सारे घर में सन्नाटा था।

मैं तेजी से बाहर आया—मकान से बाहर आते ही मुझे नुक्कड़ पर बजती हुई साइकिल की घण्टी और लोलिता के फ्राक का एक सफेद हिस्सा नज़र आया जो देखते ही देखते ओझल हो गया।

मैं पोर्च की ओर बढ़ा, मगर ध्यान आया कार तो मरम्मत के लिए गई है। अब मेरे सामने इसके अलावा कोई और चारा न था कि लोलिता के पीछे पैदल ही जाऊं।

मैं तेजी से गली पार करता हुआ आगे बढ़ा ही था कि बारिश का एक तेज झोंका मुझे भिगो गया। मैंने बारिश की परवाह किये बगैर लोलिता के पीछे बढ़ना जारी रखा।

मुझे ज्यादह दूर न जाना पड़ा—एक टेलीफोन बूथ के करीब मुझे लोलिता की साइकिल नज़र आयी। टेलीफोन बूथ के अन्दर लोलिता थी, किसी से बातें कर रही थी।

मुझे देखते ही उसने टेलीफोन क्रेडिल पर लटका दिया—।

"घर का नम्बर मिला रही थी। मैंने एक महत्वपूर्ण फैसला किया है,

लेकिन पहले कोका कोला पिलाइए... ।"

मैं ने अपना गुस्सा जब्त किया। अब और तमाशा न बनना चाहता था। उसे लेकर एक दुकान पर गया। कोका कोला का आर्डर दिया। अब तक बारिश बहुत तेज हो चुकी थी।

"हां, तो तुम क्या कह रही थी... ?" मैंने पूछा, लेकिन लोलिता ने कोई जवाब न दिया। मैं समझ गया कि वह अपने मूड से बात करेगी, जैसा कि उसका स्वभाव था।

उसने इस इत्मिनान से कोका कोला की बोतल को मुंह से लगाकर उसे पीना आरम्भ किया, जैसे हमारे बीच कोई बात ही न हुई रही हो।

कुछ देर बाद बारिश बन्द हो गयी।

मैं चलने को हुआ तो वह भी मेरे साथ हो ली। इस बार वापसी पर मैंने उसकी साइकिल थाम ली।

घर पहुंचकर मैंने उसकी साइकिल एक तरफ खड़ी कर दी। पलट कर देखा तो वह अपने कमरे में न जाकर वहीं दरवाजे के पास दीवार से सटकर खड़ी है। मुझे अपनी ओर देखता देखकर वह मुस्कराई। मैं हल्के अंधेरे में भी उसकी चमकती आंखें देख सकता था।

मैंने उसकी ओर बढ़ना आरम्भ किया। झगड़े का अंत मुझे अपनी ओर से ही करना था। मुझे अपनी ओर आता देखकर, वह हौले से हंसी और अपनी दोनों बाहे मेरी ओर बढ़ाकर एक घुटने को ज़रा ऊपर उठाकर बोली–

"बहुत थक गई हूं, मुझे उठाकर ले चलो.... ।"

उसकी यह अदा कुछ नई न थी। उन्हीं अदाओं के बल पर वह मुझे अपने काबू में रखती थी।

"लोलिता... ।" कहकर मैंने उसे उठा लिया।

मेरे दिमाग में लोलिता के व्यवहार, जिद्द और उद्दण्डता के कारण शक के कीड़े गिजबिजाने लगे थे। मैंने मन ही मन फैसला कर लिया कि उस जगह को छोड़कर एक बार फिर इधर-उधर भटकने की जिन्दगी अख्तियार कर लूं। किसी एक जगह ठहरने पर लोलिता के भटक जाने, या लोगों का हम पर शक हो जाने का अंदेशा था–और मैं उस स्थिति को आने नहीं देना चाहता था।

मैंने गाड़ी को ओवरहाल कराया। लोगों में इस बात की चर्चा

चलायी कि मुझे एक फिल्म में सलाह देने के लिए हालीवुड जाना पड़ रहा है। फिल्म का काम तीन महीने में पूरा हो जाएगा, तब तक फिल्म की कहानी में सलाह देने के लिए मुझे वहीं हालीवुड में ही रहना पड़ेगा।

जब मैं डौली के स्कूल में डौली का नाम कटवाने गया तो हेड मिस्ट्रेस ने थोड़ा एतराज उठाया–

"बच्ची को इतनी देर स्कूल से अलग रखने में उसकी पढ़ाई का नुकसान होगा।"

"मैं किसी भी हालत में लोलिता को अपने से अलग नहीं रख सकता। वह मेरी इकलौती बेटी है मैडम...।" मैंने उसकी तसल्ली करायी। उसने तसल्ली कर ली और स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट दे दिया।

इस मामले में मैं आपको बता दूं कि लोलिता ने टूर प्रोग्राम पर न कोई आश्चर्य व्यक्त किया, ना आपत्ति उठायी। बल्कि उसने जिस तरह से कहा–"मजा आ जाएगा।" उससे यही आभास हुआ कि वह उस जगह से खुद भी ऊबी हुई थी, और यात्राओं वाले प्रोग्राम की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे ना तो अपनी पढ़ाई छूटने का जरा भी दुःख हो रहा था, ना ही सहेलियों को छोड़ने का। अब आप समझ सकते हैं कि उसके ऐसे व्यवहार को पाकर क्या मैं सोचने पर मजबूर नहीं हो सकता था कि मैं उस पर ख्वामखाह ही शक कर रहा था। बहरहाल प्रोग्राम बन चुका था, अब रुकने में कोई अच्छाई न थी। लोलिता मुझ पर हंसती।

हम लोगों ने पुरानी गाइड बुकें, नक्शे पुनः निकाले, रूट तय की। इतवार की सुबह हम लोग प्रोफेसर के उस मकान से निकले। मुख्य सड़क पर आते ही हमारी गाड़ी फर्राटे भरने लगी। हम मैदानों, खेतों, जंगलों और शहरों को फलांगते हुए होटलों में टिकने और आगे बढ़ने लगे।

इन यात्राओं के बीच मेरे मस्तिष्क में एक बार फिर इस बात का शक का कीड़ा कुलबुलाने लगा कि लोलिता मुझसे छिपकर किसी से मिलती है।

एक दिन हम लोग पेट्रोल लेने और पानी भरवाने के लिए गैस स्टेशन पर रुके। मैं गाड़ी का हुड उठाए, कारीगर के साथ झुका उसे कुछ समझा रहा था कि लोलिता मेरी नज़रों से ओझल हो गयी। इस तरह नज़रों से ओझल हो जाने का कार्य वह अक्सर किया करती थी, मगर मुझे ऐसा कोई कारण न मिलता था कि उसे तम्बीह कर सकूं। पेट्रोल भरवा कर जब मैंने गाड़ी को आगे बढ़ाने के लिए तीन–चार हार्न तब वह न जाने कहां से टपक पड़ी। पूछने पर उसने बताया कि पहले बाथरूम गई थी, फिर सामने की दुकान पर चली गई थी।

"लेकिन कम से कम मुझे बताकर तो जाना चाहिए था।"

"गलती हो गई थी। आगे से ऐसा नहीं करूंगी।" उसने कहा और मैंने समझा बात खत्म हो गयी।

हम कास्बीन के होटेल चैस्टनट में ठहरे।

कास्बीन शहर आते समय लोलिता की इच्छा थी कि अपने ननिहाल से केवल तीस मील दूर स्थित उस कस्बे को दोबारा देखना चाहेगी, जहां उसका बचपना गुजरा था। मगर उस स्थान पिस्की में उसके किसी रिश्तेदार से मुठभेड़ हो जाने का अन्देशा था, अतः मैंने कास्बीन से दूसरी दिशा में निकल जाने का इरादा बनाया।

अगले दिन मैंने जब घूमने जाने का प्रोग्राम बनाया तो उसने कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं।

"तुम्हारी तबियत को क्या हुआ ?"

"लड़कियों की बात है, तुम्हें पूछना नहीं चाहिए...।"

उसने मुझे बाजार जाने, खुद वहीं रहने और वापसी पर कुछ फल लाने को कहा।

मैं कभी-कभी पैदल चलने का शौकीन हूं। होटल से बाजार कोई एक मील दूर था, इसलिए मैंने मजे से टहलते हुए पैदल ही जाने का निर्णय लिया।

वापसी पर डेढ़ घण्टे का समय लग गया था।

जिस समय मैं कमरे में पहुंचा, लोलिता बिस्तर पर बैठी हुई थी। उसके बिस्तर पर बैठने में कोई खास बात न थी, मगर मैंने नोट किया कि मेरे जाने के बाद उसने कपड़े चेंज कर लिये थे। वह टी शर्ट और स्लैक्स पहने बेड पर अनिश्चित सी बैठी थी। मेरे अन्दर आते ही उसने इस तरह से मेरी ओर देखा था जैसे पूछ रही हो—इतनी जल्दी कैसे आ गये ?

निकट पहुंच कर मैंने जाना कि उसने अभी तक स्नान नहीं किया था। उसने लिपिस्टक लगा रखी थी।

मैंने उसका हाथ थामा और बाजार से खरीददारी करके लाया सामान रख दिया। मैं उसे कुछ पल तक घूरता रहा। मेरे मुंह से निकला—

"तुम बाहर गयी थीं ?"

कहते-कहते मैंने उसके सैण्डिलों पर निगाह जमा दी—सैण्डिलों पर मिट्टी जमी हुई थी।

"बैठी-बैठी बोर हो रही थी। बाहर निकल कर मैंने देखना चाहा था कि तुम लौट रहे हो या नहीं।" कहते-कहते उसकी नज़र मेरे द्वारा खरीदकर लाए गये केलों पर पड़ी और वह झपट कर उन्हें खाने लगी।

मुझे शक हो गया था, मगर उस शक को विश्वास में बदलने का मेरे पास कोई प्रमाण न था। मैंने खिड़की के बाहर देखा—तभी मुझे ध्यान आया कि जब मैं लौटा था तो हमारा पड़ोसी मुझे देखकर मुस्कराया था। उसकी मुस्कराहट मुझे अब याद आ रही थी और मेरे मन में बिजली कौंध रही थी—पर मैं पूरी तरह असमर्थता महसूस कर रहा था।

मैंने दरवाजा बन्द कर चिटखिनी चढ़ाई। अपना शक दूर करने के लिए मैंने उसके कपड़े उतारने शुरू किये—उतारने में देर लगी तो फाड़ दिये। अपना शक दूर करने के लिए सबूत ढूंढ़ रहा था। मगर सबूत था कि मिल नहीं रहा था।

उस रात सोने से पहले मैंने अपनी 32 बोर की पिस्तौल बाक्स से निकालकर अपने ओवरकोट की जेब में डाल ली थी।

हमने अगली सुबह वह होटल छोड़ दिया। और मुझे कुछ देर बाद इस बात का आभास हुआ कि एक लाल कार हमारा पीछा कर रही है।

कास्बीन से आगे बढ़ने के बाद मैंने नोट किया था कि एक लाल रंग की गाड़ी हमारा पीछा करती रहती है। हम जहां कहीं भी जाते, कार के साइड ग्लास से एक लाल रंग का धुंधला सा धब्बा झिलमिलाता रहता। लगता था जैसे कोई जासूस हमारा पीछा कर रहा है।

मैंने एक दो बार डॉज देकर रास्ता बदलने की कोशिश की थी, मगर कामयाब न हो सका था। कभी-कभी सोचता कि क्या लोलिता के किसी रिश्तेदार ने यह जानने के लिए जासूस को पीछे लगा दिया है कि मैं लोलिता के साथ क्या कर रहा हूं ?

मुझे रात के समय सपने में भी वह लाल गाड़ी दिखाई देती। उस समय भी उस लाल धब्बे को देखता हुआ मैं एक गैस स्टेशन पर रुका। जब मेरी गाड़ी में पेट्रोल भरा जा चुका और मैंने भुगतान करने के लिए ट्रेवलर्ज चेक निकाला तो यूं ही मैंने मुड़कर देखा—मेरा दिल धक्क से रह गया।

एक हट्टा-कट्टा आदमी अपने गंजे सिर को थोड़ा नीचे झुकाए लोलिता से बातें कर रहा था।

लोलिता जिस तरह हवा में हाथ घुमा-घुमाकर, आंखें नचाती हुई फटा-फट बोलती जा रही थी, उससे लगता था वे दोनों किसी गम्भीर विषय पर बातचीत कर रहे हैं। यही नहीं, उन्हें देखने वाला कोई भी आदमी बता सकता

था कि वे दोनों पहली बार नहीं मिले हैं बल्कि बहुत दिनों से परिचित हैं।

मेरे देखते ही देखते उसने सिर हिलाया और पीछे मुड़कर लाल गाड़ी की तरफ देखने लगा। मैंने ध्यान से देखा तो लगा, लाल गाड़ी की ओर बढ़ता हुआ यह आदमी मेरे एक चचा से बहुत मिलता-जुलता है। स्विट्जरलैण्ड में रहने वाले मेरे एक चचा ट्रैप व इस गाड़ी वाले ड्राइवर की शक्ल बिल्कुल एक जैसी थी। कहीं यह 'ट्रैप ही तो नहीं' मैंने सोचा। मुझे स्विट्जरलैण्ड गये हुए पांच साल हो गये थे और इस अरसे में उनमें तब्दीली आ सकती थी।

गाड़ी में बैठने के बाद मैंने लोलिता से पूछा-

"वह आदमी तुमसे क्या पूछ रहा था... ?"

"आदमी, ओह, वह आदमी। हां...वह पूछ रहा था मेरे पास नक्शा है ? उसका कहना था कि लगता है वह रास्ता भूल गया है।"

"देखो लोलिता।" मैंने गाड़ी बढ़ाते हुए कहा-"मुझे पता नहीं कि तुम झूठ बोल रही हो या सच। पर अपना दिमाग सही रखकर बताओ कि उससे क्या-क्या बातें हुईं ? मुझे लगता है वह जासूस है। मैं लाल गाड़ी को बराबर अपनी गाड़ी के पीछे लगा महसूस करता रहा हूं।"

मेरी बात को उसने हंसी में उड़ा दी। कहा-

"अगर वह आदमी सचमुच पुलिस का है तो डरने की जरूरत नहीं, क्योंकि डरने से उसका सन्देह पक्का हो जाएगा।"

"क्या पूछ रहा था-?" मैंने झुंझला कर कहा।

"उसके पूछने से क्या होता है। तुम्हारे कहेनुसार अगर वह आदमी जासूस या पुलिस का है तो उसे अब तक सब कुछ आप ही आप पता चल चुका होगा।" वह मुस्कराकर बोली।

मुझे लगा वह मेरा मजाक उड़ा रही है। मैंने उसे अपने स्विट्जरलैण्ड वाले चचा ट्रैप के बारे में बताकर शंका व्यक्त की कि मुझे लगता है वह मेरा चचा है।

"हो सकता है वह ट्रैप ही हो..." उसने लापरवाही से कंधे हिलाए और सीट में धंसकर मैगजीन उठा ली।

मुझे उसके हाव-भाव से लगा यदि उसके मन में कहीं चोर होता तो भाव चेहरे पर झलक जाता। मैं ख्वामखाह उस पर शक कर रहा हूं।

उसके बाद भी मैं उस लाल गाड़ी द्वारा अपना पीछा किये जाने का आभास पाता रहा। शाम लगभग चार बजे जब मैं एक चौराहा पार कर रहा था तो, ट्रैफिक सिगनल की वजह से मेरी गाड़ी आगे निकल गयी

और वह गाड़ी पीछे रह गयी। उसके बाद वह नजर न आयी।

उसके बाद हम बेस शहर पहुंच गये। बेस में उस शाम खाना खाने और लोगों की बातचीत सुनने के बाद मैंने जाना कि शहर में एक महत्वपूर्ण नाटक होने जा रहा था। मैंने लोलिता के साथ नाटक देखने का प्रोग्राम बनाया। नाटक देखने के बाद, उसमें काम करने वाली अपनी पसन्द की उम्र की लड़कियों को देखकर मेरा मूड बन गया था। मैं अच्छे मूड के साथ लोलिता के साथ होटल के कमरे की ओर बढ़ने लगा था।

अपनी चिट्ठियां मंगवाने के लिए बीर्डल्ले के पोस्टमास्टर को बेस का पता दे दिया था। बेस पहुंचकर अगले दिन मैं बेस के पोस्ट आफिस गया। मेरे कुछ खत प्रतीक्षा कर रहे थे।

एक खत लोलिता के नाम भी था, जिसे मोना ने भेजा था। उसका खत मैंने खोलकर पढ़ा। उसने ड्रामे के बारे में लिखा था कि वह कामयाब रहा। अपने बारे में उसने लिखा था कि वह स्विट्जरलैण्ड जाएगी, जहां किसी स्कूल में दाखिला लेगी। आगे भी उसने खत भेजते रहने को लिखा था।

खतों के लेने के लिए मैं लोलिता को साथ लेकर पोस्ट आफिस गया था। उसे बाहर बरामदे में छोड़कर मैं अन्दर गया था। लेकिन जब वापस उस स्थान पर पहुंचा तो वह वहां न थी। मैंने चारों ओर नज़रें दौड़ायीं। वह कहीं नजर न आयी। मैंने वहां झाड़ू देते एक सफाई कर्मचारी से लोलिता का हुलिया बताकर उससे उसके बारे में पूछा–"क्या तुमने यहां उसे खड़ा देखा था ?"

"हां–।" उसने कहा–"वह उस तरफ गयी है।"

मैंने उससे दिशा की ओर पुनः जानकारी पायी और तेजी से आगे बढ़ गया। मैंने उसकी जोर-शोर से तलाश की।

जेल की कोठरी में बैठे-बैठे कई रातों को जागते हुए मैंने कई बार सोचा है कि लोलिता उस दिन सचमुच चली क्यों न गई ? मैंने उसे क्यों तलाशा ? वह लौट क्यों आयी थी ? शायद उसे नये कपड़े और सुविधाएं पसन्द थीं। उन्हीं के लिए वह रात दिन मेरे चंगुल में फंसी रहती थी।

लेकिन यह तो बाद की बात है–उस समय मैं उसकी तलाश हर दुकान, मोटर पार्टस्, दवाइयों की दुकानों पर और न जाने कहां-कहां कर रहा था। अभी इतना समय न हुआ था कि बाजार की सभी दुकानें

खुलतीं और हलचल होती—उस हलचल में वह खो सकती।

अकस्मात् मुझे लगा वह आ गयी है। पलट कर देखा वह आ गयी थी। मेरे नज़दीक आकर उसने मेरी आस्तीन पर हाथ रख दिया और मुस्कराने लगी। मुझे गुस्सा हद से ज्यादह आ रहा था। गुस्से पर काबू पाते हुए मैंने उससे फौरन कुछ न कहा। उसे साथ लिये हुए गाड़ी तक आया। दरवाजा खोलकर उसको हुक्म दिया—

"बैठ जाओ।"

वह चुपचाप गाड़ी में बैठ गई।

मैंने गाड़ी स्टार्ट कर आगे बढ़ायी और सोचने लगा कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं यह भी नहीं चाहता था कि मेरी बेचैनी के बारे में वह जाने और खुश हो। न जाने क्यों मैं ऐसा भी महसूस करने लगा था कि मुझे परेशान देखकर वह आनन्दित होती है।

वह आराम से सीट में धंस गयी थी। आंखें बन्द कर ली थीं।

वह यूं तो खुद को पूरी तरह निश्चिंत दिखा रही थी मगर मैं समझ रहा था कि वह अन्दर ही अन्दर बेचैन होगी। कुछ आगे जाकर मैंने पूछा—

"कहां चली गयी थी...?"

"कहीं भी तो नहीं....।"

"कहीं तो...?"

"बाजार देखने गयी थी।"

"किसके साथ... ?" मैंने कुतूहल के साथ पूछा।

"बीर्डल्ले की एक सहेली मिल गयी थी।"

"कौन सी सहेली ? मैं तुम्हारी सभी सहेलियों को जानता हूं। उसका नाम बताओ ?"

"वह मेरी क्लास फेलो नहीं थी।"

"कोई बात नहीं। मेरे पास तुम्हारे स्कूल की तमाम लड़कियों के नामों की पूरी लिस्ट है।"

"वह हमारे स्कूल में नहीं थी—कस्बे में कहीं रहा करती थी।"

"उसका ही नाम बताओ—शायद है मैं जानता हूं...।"

"लेकिन मैं उसका पूरा नाम नहीं जानती...।"

"पूरा न सही, जितना जानती हो, वही बताओ।"

"उसका और मेरा नाम एक है—उसे भी डौली कहते हैं।"

"ओह ! तो यह बात है। खैर...।" मैंने रिस्ट वाच की ओर देखते हुए कहा—"तुम अन्दाजन अट्ठाइस मिनट तक गायब रही हो। तुम दोनों

डौली कहां गयी थीं।"

"हम लोग एक ड्रग स्टोर पर गयी थीं।"

"क्या करने... ?"

"कोका कोला पीने....।"

"अच्छी तरह याद कर लो...।"

"उसने कोका कोला पिया था, और मैंने एक गिलास पानी।"

"तुम्हें कुछ याद है कि तुम कहां गयी थीं ?"

"हां...।"

मैंने गाड़ी एक साइड में रोकी। खुद उतर पड़ा। उसे भी नीचे उतर आने को कहा।

वह नीचे उतर आयी।

"अभी हम ज्यादह दूर आगे नहीं बढ़ सके हैं—पैदल ही चलना पसन्द करोगी या गाड़ी को बैक करूं.. ?"

"किसलिए ?"

"उस दुकान पर चलकर मुझे तसल्ली कराओ–।"

"एक सेकण्ड ठहरिये। मेरा ख्याल है कि दुकान कहीं कोने के आसपास थी।"

मैं उसे आगे लेकर चलने को ही था कि उसने होंठ काटकर कहा—

"मैं नहीं जाती।"

"बदतमीजी करने से क्या फायदा ?"

"तुम तो ख्वामखाह ही परेशान कर रहे हो। अच्छा चलो, उसने कोका कोला नहीं पिया, मैंने पानी नहीं पिया। हम सिर्फ आपस में बातें करती हुई खिड़कियों में रखे फैशन मॉडल देख रही थीं।"

"एक के बाद एक झूठ बोल रही हो। मैंने बाजार की लगभग सभी दुकानों पर तुम्हें देख डाला था—उस समय सभी ड्रग स्टोर बन्द थे, इसलिए तुम्हारे कोका कोला और पानी पीने की बात तो झूठी थी, साथ ही फैशन शो की दुकानें भी बन्द थीं। तुम बार-बार झूठ क्यों बोल रही हो। सच बात क्यों नहीं बताती।"

वह निरुत्तर हो गयी। उसी तरह खड़ी रही।

मैं करता भी क्या। गाड़ी में उसे बैठने को कहा और गाड़ी [illegible] कर दी। वह कुछ देर बाद तटस्थ भाव से इस तरह कामिकस [illegible] लगी जैसे कोई बात ही न हुई हो।

शहर से तीन चार मील आगे निकल आने के बाद मैं [illegible]

पर काबू न पा सका। गाड़ी में ब्रेक लगा, पलटकर लोलिता को एक तमाचा जड़ दिया।

कुछ क्षणों तक वह स्तब्ध मेरी ओर देखती रही, जैसे थप्पड़ का अर्थ न समझी हो। फिर हथेलियों में चेहरा छुपा कर रोने लगी।

मुझे दुःख हुआ। मैं उसे मारना नहीं चाहता था। मैं क्रूर आदमी नहीं हूं। मुझे किसी को मारने में मजा नहीं आता। लोलिता को इस तरह रोते देखकर मेरा सारा गुस्सा पिघल गया और मैंने धीरे-धीरे उसे थपथपाना शुरू कर दिया।

इस थपथपाहट के साथ मेरी उत्तेजना भी सर उठा बैठी।

कुछ देर बाद मैंने गाड़ी पेड़ों के झुरमुटों के बीच खड़ी कर पिछली सीट पर पहुंच गया।

लाल गाड़ी से पीछा होने का सिलसिला अब बन्द हो गया है, इस बात को मैंने अगले एक-दो दिन में महसूस किया। पीछे दूर-दूर तक निगाह डालने पर वह कहीं नज़र न आती। मैंने सोचा कि पीछा होने का मामला मेरे मन का वहम रहा होगा।

पर, यह सोच जल्द ही मुझे बदलनी पड़ी। मुझे अब इस बात का अहसास हुआ कि लाल गाड़ी वाला बेहद शातिर और चालाक किस्म का इंसान है, उसने उस बात को जान लिया था कि लाल रंग की गाड़ी का मुझे संदेह हो चुका है, अतः उस रंग को बदल कर उसने विभिन्न रंगों की गाड़ियों का इस्तेमाल करना आरम्भ कर दिया था। वह हर नयी जगह से बढ़ने पर अपनी गाड़ी का रंग या गाड़ी ही बदल लेता है। अब मुझे लग रहा था लाल के बजाय उसे भूरा रंग प्रिय है। भूरे रंग की शेवरलेट, भूरे रंग की डॉज, भूरे रंग की सीडान, भूरे रंग की फिएट वगैरह गाड़ी अब हमारे पीछे लगी रहती।

मैं उसके प्रति अब सतर्कता बरत रहा था, अतः जब कभी हमारे पास से कोई सन्देह वाली गाड़ी गुज़रती मैं खिड़की से देखे बिना न रह पाता। उसकी छोटी मूंछे, चौड़े कंधे और कमीज के खुले बटन—मैं अब इस पर्सनाल्टी को चालक सीट पर बैठे व्यक्ति से मिलाने की कोशिश में था।

एक दिन हम लोग चढ़ाई चढ़ते-चढ़ते ज़रा कम स्पीड से ऊपर जा रहे थे कि मेरे पीछे से वह धुंधला धब्बा फिर उभरा। इस बार मैंने देखा नीले

रंग की एक सीडान हमारा पीछा कर रही थी।

मैंने सोचा आज पीछा करने वाले को घेर लिया जाए–तभी 'फट्-फट्-फट्' की आवाज सुनाई दी। मैंने ध्यान से समझने की चेष्टा की कि आवाज़ कहां से आ रही है।

"शायद टायर पंचर हो गया है...।" लोलिता ने पीछे से इस तरह मुस्करा कर कहा जैसे टायर पंचर न हुआ हो बल्कि घर में किसी पालतू बिल्ली ने बच्चे दे दिये हों।

गाड़ी रोकनी पड़ी। वह हाथ बांधे उसी तरह बैठी रही। मैंने बाहर निकलकर पहिया देखा तो टायर का बिल्कुल कबाड़ा निकल गया था।

उसी समय मैंने पीछे देखा–पीछा करने वाली गाड़ी हमारी गाड़ी से लगभग 50 गज पीछे रुक गयी थी।

पता नहीं क्या सोचकर मैंने उसकी ओर बढ़ना आरम्भ किया।

दो-चार कदम आगे चलने के बाद मैंने सोचा था कि उसके पास जाकर जैक मांगूंगा और इसी बहाने से उसकी सूरत और सीरत को समझने का अवसर पा जाऊंगा।

लेकिन दिल की दिल में रह गयी–उसी समय एक ट्रक मेरे और उस गाड़ी के बीच से गुज़रा और उसी समय मैंने महसूस किया पीछा करने वाली गाड़ी का इंजन जग उठा। मैं हड़बड़ाया–लेकिन ट्रक गुज़रने के बाद मैं झुंझला उठा–पीछा करने वाली गाड़ी का नहीं हमारी गाड़ी का इंजन जगा था। मैंने देखा कि लोलिता ही गाड़ी के स्टेयरिंग पर बैठी हुई है और गाड़ी को आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ा रही है।

मैं बुरी तरह घबरा उठा था–क्योंकि चढ़ाई और उतराई पर गाड़ी खतरनाक स्थिति में थी, लोलिता को गाड़ी चलाने का कोई अनुभव न था–वह गाड़ी को खड्ड में गिरा सकती थी। मैंने तेजी से दौड़ लगायी और उछाल मार कर अपनी गाड़ी का इंजन बन्द कर दिया।

लोलिता घबराई हुई सी मेरी ओर देखने लगी। लेकिन उसके चेहरे के भाव को गहराई से देखने पर कोई भी समझ सकता था कि वह बन रही है। उसकी घबड़ाहट में शरारत या षड़यंत्र की रेखाएं थीं। उस समय मेरा ध्यान बंट जाने के कारण पीछा करने वाला गाड़ी बढ़ाकर फर्राटे के साथ आगे निकाल ले जाते हुए रफूचक्कर हो गया था। मेरी झुंझलाहट की कोई इन्तहा न रही, क्योंकि मैंने उसे ऐसी स्थिति में घेर लिया था कि वह गाड़ी को बैक तो कतई करके ले ही नहीं जा सकता था और आगे बढ़ाने से पहले उसे मुझसे मुलाकात अवश्य करनी पड़ती–कम से कम मैं उसे अच्छी तरह

देख तो सकता था, मगर उसे ऐसा सुअवसर मिल गया था कि सरलता से गाड़ी निकाल ले गया था।

मैंने इस बार दोबारा गाड़ी आगे बढ़ाने से पहले कपबोर्ड से पिस्तौल निकालकर जेब में रख ली।

उस अवसर पर लोलिता पर मैं बहुत खीझा–खिसियाया, बुरा भला कहा। वह खुद को मासूम और भोली–भाली दर्शाती हुई मेरी सारी बातें सुनती रही और खुद को निर्दोष साबित करते हुए कहती रही कि उसने ज़रा ड्राइविंग के शौक में चालक सीट सम्भाल कर यह देखा था कि क्या वह गाड़ी को साइड में लगा सकती है या नहीं। जबकि मैं यह सोच रहा था कि उसने जान बूझ कर गाड़ी को साइड में लगाने का कार्य इसलिए किया था ताकि पीछा करने वाले को सिगनल दे सके कि वह अपनी गाड़ी को आगे निकाल ले जाए। मेरी गाड़ी ऐसी भी बीच सड़क पर न थी कि साइड लगाने की जरूरत पड़ती। अगर ऐसा होता तो वह ट्रक ही क्योंकर गुजर जाता।

हमारा अगला पड़ाव फ्लोरिडा का होटल चैम्पियन था। मैं अभी तक आपको यह नहीं बता पाया कि लोलिता को टेनिस खेलने का बहुत शौक था। वह टेनिस खेलती भी बहुत अच्छा थी। अगर मैं उसका प्रेमी न होकर उसका टेनिस कोच होता तो उसे चैम्पियन बना देता।

होटल चैम्पियन में टेनिस कोर्ट की बहुत अच्छी व्यवस्था थी। मैं लोलिता के साथ कोर्ट पहुंच गया था। हमें खेल शुरू किये हुए पन्द्रह मिनट हुए होंगे कि लाल बालों वाला एक युवक और सांवली सी एक युवती हमारा खेल देखने टेनिस कोर्ट के पास आ खड़े हुए। युवक की उम्र पचीस साल के आसपास और युवती बीस की रही होगी। उन दोनों ने भी अपने हाथों में टेनिस के बल्ले पकड़ रखे थे–मैंने सरसरी नज़र से उन दोनों की ओर देखा और अपने खेल में व्यस्त हो गया।

अपनी जवानी में मैं टेनिस का अच्छा खिलाड़ी समझा जाता था। लोलिता के साथ टेनिस खेलना मेरे लिए ऐसा ही था जैसा किसी पहलवान का किसी बच्चे के साथ कुश्ती लड़ना। लेकिन मैं खेल इसलिए रहा था क्योंकि मुझे लोलिता के मुकाबले हारना अच्छा लगता था। वह जीतने के बाद जब खुश होकर तालियां बजाती थी तो मुझे बहुत प्रिय लगती थी–मैं चूंकि उसे प्यार करता था अतः उसके खुश होने की ऐसी हर अदाएं मुझे प्यारी थीं।

यकायक मुझे प्यास लग आई। मैंने लोलिता से खेल रोकने को कहा और कोका कोला स्टाल की ओर बढ़ गया। मैंने टेनिस कोर्ट से बाहर कदम निकाला ही था कि युवक हाथ बढ़ाकर मेरी ओर बढ़ आया और अपना

परिचय देता हुआ बोला–

"मेरा नाम मीड है और यह पीज है.." उसने युवती की ओर इशारा किया– "आपने शायद इन्हें फिल्मों में देखा हो। इनकी आज ही एक फिल्म रिलीज हुई है।"

मैंने दोनों को बारी–बारी से देखा–अभी उनका अभिवादन स्वीकार करना ही चाहता था कि पीछे से आवाज़ आयी–

"मिस्टर हम्बर्ट..।"

मैंने पीछे मुड़कर देखा। होटल का एक नौकर हाथ हिलाता हुआ मेरी ओर बढ़ आया। दह हांफ रहा था, जल्दी में आया था, बोला–

"सर, आपके नाम अर्जेन्ट काल है..।"

"किसकी.. ?"

"बीर्डल्ले से कोई साहब बातचीत करना चाहते हैं।"

मैं लाउन्ज की ओर जाने के लिए लोलिता की ओर बढ़ा अपना कोट पहना और लोलिता से बोला–

"अभी एक मिनट में आता हूं..।"

टेनिस कोर्ट से निकलकर रिशेप्सन की ओर बढ़ते हुए मुझे नाना प्रकार की बातें सोचनी पड़ रही थीं–कौन फोन कर सकता है ? जब तक मैं इस बात को सोचूं–मैं लाउन्ज में था।

रिशेप्सन पर खड़े क्लर्क ने अभिवादन करते हुए मुस्कराकर एक कागज़ का टुकड़ा मेरी ओर बढ़ा दिया। कागज़ के टुकड़े पर लिखा था–

'मिस्टर हम्बर्ट। बीर्डल्ले स्कूल की हेड मिस्ट्रेस आप से बात करना चाहती हैं। फोन नम्बर 2-8282। कृपया इसी समय फोन पर बात कर लीजिए।

बीस मिनट बाद जब मैं बूथ में रहने के बाद बाहर आया तो मेरे सामने चार बातें स्पष्ट थीं–नम्बर एक 2-8282 बीर्डल्ले का नम्बर नहीं था। नम्बर दो–स्कूल की हेड मिस्ट्रेस इंग्लैण्ड गई हुई थी। नम्बर तीन– बीर्डल्ले में किसी को मालूम न था कि उस समय मैं वहां के होटल चैम्पियन में ठहरा हुआ हूं। नम्बर चार–यह फोन मुझे उल्लू बनाने के लिए किया था।

अपने निष्कर्षों की जांच के लिए मैंने क्लर्क से एक्सचेंज को फोन करवाया। पूछताछ करने के बाद यही उत्तर मिला कि पिछले आधे घण्टे से बीर्डल्ले से होटल के नाम कोई फोन नहीं आया।

इन प्वाइण्टों में नम्बर–तीन प्वाइण्ट सबसे मजबूत था–अर्थात् बीर्डल्ले में रहकर किसी को क्योंकर मालूम हो सकता था कि मैं इस समय होटल

चैम्पियन में ठहरा हुआ था। इस बात पर अगर मैं पहले ध्यान दे लेता तो शायद फोन में इतना समय बर्बाद न करता। मगर फोन करने वाले ने मनोविज्ञान का पूरा लाभ उठाकर मुझे मूर्ख बनाया था। मेरी जगह कोई भी होता तो इस तरह के फोन सन्देश पर मूर्ख बन जाता। उसे बाद में इस बात की जानकारी होती कि वह उल्लू बन गया। मुझे इस चक्कर में दो फोन करने पड़े थे– एक तो दिये गये फोन नम्बर पर काल करनी पड़ी थी। यह जानने के बाद कि वह फोन नम्बर बीर्डल्ले का नहीं, मैंने हेड मिस्ट्रेस को फोन घुमाया था। स्कूल फोन करने के बाद ही मुझे पता चला था कि हेड मिस्ट्रेस लंदन गयी हुई हैं।

झल्लाया हुआ मैं टेनिस कोर्ट की ओर दोबारा आया तो मेरी नज़र लाउंज में खेलती लोलिता पर पड़ी।

वे लोग डबल खेल रहे थे। लोलिता, मीड़ और पीज के अलावा एक चौथा आदमी लोलिता के साथ खेल रहा था। वह बार–बार अपने रैकेट के सिरे से लोलिता को थपथपा देता था–उसका सिर गोल और कंधे चौड़े थे। उसे बहुत दूर से ही मैंने देख लिया था– यह आदमी कौन है– सोचता हुआ मैं आगे बढ़ा ही था कि उस आदमी की नज़र मुझ पर पड़ गयी। उसी समय उसकी ओर गेंद आयी, टेनिस से छूटी–और वह गेंद के पीछे भागा।

फिर वह ऐसा लापता हुआ जैसे उसे देखना मेरा भ्रम रहा हो। किसी कार का इंजन जगा था और वह लापता हो गया था। मैं जब टेनिस कोर्ट में पहुंचा तो लोलिता, मीड और पीज बिखरी हुई टेनिस की गेंद समेट रहे थे।

"मिस्टर मीड, यह आदमी कौन था ?" मैंने टेनिस कोर्ट में पहुंच कर सीधा मीड से प्रश्न किया।

मीड और पीज ने इस तरह मुझे देखा और इधर–उधर देखने लगे जैसे मैंने उनसे व्यर्थ का प्रश्न किया हो।

मैं लोलिता से यही सवाल दोहराने वाला था कि उसने टेनिस का बल्ला मुझे थमाते हुए मेरे कोट की आस्तीन थामकर कहा–"गर्मी हो गई है, आइए स्वीमिंग पूल चलें...।"

मेरे सवाल के दोहराये जाने पर उसने बताया कि मेरे जाने के बाद वह आ गया था। मीड और पीज पार्टनर बन गये थे, मेरे साथ खेलने के लिए वह खड़ा हो गया था। मैंने खेलने में कोई बुराई न समझी थी।

मैं क्या कहता– बुराई तो शायद मुझमें थी, जो मैं इस कदर शक्की था। कम से कम मेरे सवाल–जवाब में लोलिता यही कहा करती थी। वह इस बात का इशारा करती थी कि शायद मैं अपनी बढ़ती उम्र के कारण

कुछ ज्यादह ही शक्की मिजाज़ हो गया हूं। मैं बार-बार अपने आपसे प्रश्न करता क्या मैं सचमुच शक्की मिजाज़ हो गया हूं ?

कुछ देर बाद स्वीमिंग पूल के पास हम आकर बैठ गये। लोलिता को कहीं से एक कुत्ता मिल गया था। वह कुत्ते के साथ गेंद खेलने लगी। वह बार-बार गेंद फेंकती—कुत्ता गेंद के पीछे भागता। कुत्ता गेंद मुंह में दबाकर लाता। लोलिता उसका सिर थपथपाने लगती।

मैं तैरना नहीं चाहता था, अतः स्वीमिंग पूल से थोड़ा फासले पर पेड़ों की छांह में लेटा हुआ था। मैं इस बात को महसूस कर रहा था कि लोलिता आज कुछ ज्यादह ही खुश है। आखिर क्यों ? मैंने अपने आप से पूछा और इस सवाल के जवाब से बचने के लिए मैं इधर-उधर देखने लगा।

उसी समय मैंने महसूस किया स्वीमिंग पूल से कुछ फासले पर हटकर कोई व्यक्ति पेड़ों के पास खड़ा है। वह वहां खड़ा आधा शरीर ढंके अपना जिस्म पोंछने का बहाना करता हुआ रह-रह कर लोलिता की ओर देख लेता है। लोलिता जानती थी कि कोई उसे देख रहा है। पेड़ की धूप-छांव से ढंके हुए उस आदमी का जिस्म का रंग कहीं से सावंला और कहीं से गोरा नज़र आ रहा था। लोलिता अब भी कुत्ते को गेंद पकड़ने के लिए भेजती है तो हसंती हुई ताली बजाकर एक क्षण के लिए उस आदमी की ओर भी देख लेती है।

मेरे देखते ही देखते उसने कुत्ते को गेंद के पीछे भेजने के बजाय, गेंद मारकर उसे परेशान करना आरम्भ कर दिया। वह इस तरह बार-बार गेंद का निशाना साधती कि गेंद कुत्ते के शरीर पर लगती। उसे खेल में मजा आ रहा था।

लोलिता, कुत्ते और उस अजनबी को देखता हुआ मैं बिना हिले स्तब्ध खड़ा रहा। तभी उस आदमी ने शायद महसूस कर लिया मेरी निगाहों ने उसे चेक कर लिया है। उसके हाथ से तौलिया छूटा, जिसे उठाने के लिये वह झुका। अब मैंने साफ तौर से उसका चेहरा देखा— ध्यान दिया तो पहचान लिया—वह ट्रैप ही था।

तभी लोलिता हंसी। कुत्ता भौंका। ट्रैप मुड़कर तेज-तेज कदमों से चलता हुआ पेड़ों के पीछे गुम हो गया। उसका तौलिया वहीं छूट गया था।

लोलिता चुपचाप लेट गई थी। कुत्ता दांतों में गेंद दबाए उसके पास खड़ा था। खेल दोबारा शुरू होने का अब लोलिता के लिए आकर्षण न रह गया था, क्योंकि खेल देखने वाला जा चुका था।

पता नहीं क्या हुआ— शायद मानसिक तनाव की अधिकता के कारण ऐसा हुआ था— मुझे जोर की उबकाई आयी सीने में दर्द होने लगा। मैंने

सीने पर हाथ रखकर मिचली रोकने की चेष्टा की। बदहजमी का एक भभका उठा। मुझे एक के बाद दो उल्टियां आयीं। लोलिता तेजी से उठकर मेरे पास आयी। मुझे सम्भाला।

"इन्हें कभी–कभी ऐसा हो जाता है...।" मेरे कानों में आवाज़ पड़ी। लोलिता ने करीब आ गयी हमदर्दी जताती एक महिला से कहा था।

मेरी हालत ऐसी न थी कि अपने हाथ पैरों से चलकर जा सकता। होटल के दो कर्मचारियों के सहारे में अपने कमरे में पहुंचाया गया।

मेरा अस्वस्थ हो जाना कुछ खास समस्या न थी। डाक्टरी सहायता लेने के कुछ देर बाद मैं ठीक हो गया। कुछ घण्टे मुकम्मल आराम की सलाह डाक्टर ने मुझे दी थी। उस आराम के बाद मैंने आगे के सफर की तैयारी की। मेरा अगला सफर एलिफिंस्टन के लिए था। इस बीच लोलिता अनमनी सी थी। शायद मेरी कुछ देर की अस्वस्थता ने उसे चिंतित कर दिया था।

समुद्र तट से सात हजार फुट की ऊंचाई पर हरे–भरे पहाड़ों से होकर गुज़रने वाला मार्ग बड़ा ख़ूबसूरत था। लोलिता को जब इस तरह से मैंने उदास देखा तो फैसला किया कि एलिफिंस्टन ज्यादह देर न ठहरेंगे– कैलिफोर्निया चले जायेंगे और मैक्सिकन सीमा पार कर गन्नों, खाड़ियों के प्राकृतिक दृश्यों को देखते हुए आगे बढ़ेंगे।

ऐलिफिंस्टन पहुंच कर हम जिस मोटल कोर्ट में ठहरे उसकी मालकिन मिसेज हेज एक मोटी–ताजी हंसमुख महिला थी। मुझे देखते ही उसने पूछा–

"आप स्विस हैं... ?"

"हां, आपने कैसे पहचाना ?"

"मेरी बहन की शादी भी एक स्विस से हुई थी। आइये, अन्दर आइए। यह रही आपके कमरे की चाबी।"

कमरे की चाबी ले लेते हुए मैंने लोलिता की ओर देखा– वह गठरी बनी हुई थी। शायद थक गयी है– मैंने सोचा। कमरे में पहुंचने के बाद वह सोफे पर मुड़ी–तुड़ी सी बैठ गयी। मेरे पूछने पर उसने तबियत ठीक न होने की बात कही। मैंने मन ही में सोचा– शायद रात को बचने के लिए वह ऐसा कर रही है। दिन भर की थकान के बाद मैं रात को थोड़ी देर के लिए लोलिता को अपनी बांहों में भरकर तरोताजा हो जाना चाहता

था। लेकिन मेरा स्पर्श पाते ही वह छुई–मुई बन गयी। इसका शरीर गर्म था। मैंने उसे उठाकर बिस्तर पर लिटा दिया। उसके कपड़े उतार कर मैंने उसके शरीर पर दोबारा हाथ फेरा–उसके छोटे–छोटे यौवन उभारों के अग्र बिन्दु , कोयले की तरह दहक रहे थे।

मैं समझ गया कि आज की रात कुछ न हो सकेगा। थोड़ी देर बाद उसका शरीर कांपने लगा। मैंने उसे दो कम्बलों से लपेट दिया लेकिन उसकी सर्दी कम न हुई, मैं घबराकर बाहर गया और मिसेज हेज को सूचना दी।

"आप घबराईये नही....।" मिसेज हेज ने मुझे ढाढस बंधाते हुए कहा–"यहां डाक्टर ब्ल्यू जैसा काबिल डाक्टर मौजूद है। वह जिस मरीज को एक बार हाथ में ले लेते हैं, मरीज चंगा।"

मिसेज हेज द्वारा फोन करने के आधे घण्टे बाद ड़ाक्टर ब्ल्यू आये। उन्होंने पांच-सात मिनट तक लोलिता का मुआयना किया, मुस्कुराकर लोलिता को हसांने की कोशिश की और बाहर निकलते समय मुझे इशारों से बाहर चलने को कहा।

"टाइफाइड है...।" उन्होंने बाहर निकलकर गम्भीर स्वर में कहा। मैंने इधर-उधर देखा–लोलिता हमारी बात सुन रही थी। फिर पता नहीं डाक्टर क्यों राजदाराना अंदाज में बोला था। शायद उसका यह स्वभाव था।

"जी....।" मैंने कहा।

"दवाई लिख दी है। सुबह तक देख लीजिए। कल नौ बजे फोन करके मरीज का हाल बता दीजिएगा। अगर फर्क न पड़ा तो बच्ची को हास्पिटल में भर्ती कराना पड़ सकता है।"

कहकर डाक्टर चला गया। मिसेज हेज ने दवाई मंगवा ली। मैं डिनर लेने चला गया। डिनर ठीक-ठाक था, पर लोलिता के साथ न होने पर खाने में मजा न आया। डिनर के बाद मैंने दो–तीन पैग ढाले–आगे और पीना चाहता था, मगर ख्याल आया कि हो सकता है लोलिता की तीमारदारी के लिए सारी रात जागना पड़ जाय इसलिए मुझे ज्यादाह न पीना चाहिये।

मैं कमरे में आया। मैंने देखा लोलिता हौले-हौले कराह रही थी। मैंने उसके माथे पर हाथ रखा। माथा सिक रहा था। मैंने नब्ज छुई-काफी तेज चल रही थी। थोड़ी देर बाद वह बड़बड़ाने लगी।

सारी रात उठते-बैठते लोलिता की तीमारदारी में गुजार देने के बाद मुझे यकीन हो गया कि डाक्टर का कहना ठीक ही था। मिसेज हेज भी रात में दो बार आकर लोलिता का हाल पूछ गयी थी। बड़ी परोपकारी किस्म की औरत मालूम होती थी।

सुबह भी वह देखने आयी। मैंने उससे डाक्टर के मश्वरे की बात बतायी। तय हुआ कि लोलिता को हास्पिटल में भर्ती करवा देना ही उचित होगा।

हमने लोलिता को हास्पिटल में भर्ती करवा दिया। वह वहां नौ दिनों तक रही। इस बीच मुझे खाते-पीते उठते-बैठते यही फिक्र सताती रही कि अगर उसे कुछ हो गया तो उसके नाते-रिश्तेदारों को क्या जवाब दूंगा ? खुद क्या करूंगा ? उसके लिए रोज प्रेजेण्ट खरीद कर ले जाता। फूल-खिलौने और मनोरंजन के अन्य सामान उसके सिरहाने रखवा देता ताकि उसे अकेलापन न महसूस हो।

छठे दिन उसकी तबियत ज़रा सुधरी। मैं चार-पांच कहानियों की किताबें उसके लिए खरीद कर ले गया।

मैं अभी उसके कमरे में प्रविष्ट होने वाला ही था कि उसकी नर्स बाहर आयी। पिछले दो-तीन दिनों में मैंने यह नोट किया था कि 'मेरी' नामक यह नर्स मुझे पसन्द नहीं करती। वह मुझे देखते ही उल्टे पांव अन्दर चली गयी। शायद उससे लोलिता ने कह रखा था कि मैं जब आऊं तो उसे इत्तला दे दी जाये। लोलिता लेटी हुई थी। सफेद चादर पर हल्के गुलाबी रंग का फ्राक पहने वह थोड़ी-थोड़ी कमजोर लग रही थी। वैसे इस हालत में वह पहले से ज्यादह खूबसूरत लग रही थी। उसे देखकर मैं मुस्करा या। मुझे मुस्कराता देखकर वह भी मुस्करा दी, लेकिन उसकी मुस्कराहट कमजोर थी। मैं वहां पड़ी हुई कुर्सी पर जा बैठा।

"ये सफेद-सफेद फूल कैसे भिजवा देते हो।" उसने अपने सिरहाने पड़े फूलदान में पड़े फूलों की ओर देखकर मुझसे कहा।

वह जब से बीमार पड़ी थी मैंने हास्पिटल वालों को आदेश दे रखा था कि दिन में तीन बार उसके सिरहाने फूल बदले जायें।

लोलिता की बात सुनकर मैंने फूलदान की ओर देखा। नर्गिस के पीले-पीले फूल हौले-हौले मुस्करा रहे थे। फूलदान के पास एक प्लेट थी-जिस पर मुड़ा-तुड़ा एक लिफाफा था।

"ये कैसा लिफाफा है...?"

मेरा प्रश्न सुनकर लोलिता ने उधर देखा और बोली-

"अभी-अभी मेरी मुझे अपने प्रेमी का खत पढ़कर सुना रही थी। शायद वह जल्दबाजी में छोड़कर चली गयी।"

मैं चुप रहा। तसल्ली कर ली। उस समय मुझे ज़रा भी आभास न था कि लोलिता इतनी कुशलता के साथ मुझसे झूठ बोलकर मेरे

साथ षड़यंत्र कर रही है।

धूप कमरे में भर आयी थी, कभी-कभी मैं शीशे के पार मैदान में देखता और मुझे लगता कोई लाल रंग की कार धुंधली-धुंधली नज़र आ रही है।

"तुम्हारे ठीक होने के बाद हम यहां से चले जायेंगे।" मैंने इधर-उधर की बातें छेड़ते हुए कहा।

"तुम हमारे कपड़े यहां भेज देना..." लोलिता ने जैसे मेरे कथन पर ध्यान न देते हुए कहा।

"लेकिन...हमें यहां ज्यादह दिनों तो रहना नहीं। तुम कपड़ों का क्या करोगी ?" मैंने पूछा।

"इससे तुम्हें क्या लेना-देना...मैं अपने सारे कपड़े मेरी को दिखाना चाहती हूं- इससे मुझे खुशी होगी....।" उसने बात बनायी। मैगजीन उठाकर उसके पन्ने उलटने-पलटने लगी। तभी कहीं बरामदे में घण्टी बजने की आवाज आयी। घण्टी बजते ही लोलिता ने मैगजीन नीचे डालकर कहा-

"कपड़े भूरे सूटकेस में रखकर लाना।"

कुछ देर बाद मैं उठा और फिर आने की बात कहकर उससे जाने की इजाजत ली।

वहां से आकर अपने केबिन में बैठकर मैं बेतहाश शराब पीने लगा एकाकीपन मुझे काटने लगा था।

रात को भी जरूरत से ज्यादा शराब पीने की वजह से सुबह मेरे सिर में तीखा-तीखा दर्द हो रहा था। मैंने एक नौकर को बुलाकर लोलिता के समस्त कपड़ों का बक्स उसके हाथ हास्पिटल भेज दिया। अगर लोलिता को अपने ढेर सारे कपड़े नर्स मेरी को दिखाकर खुशी होने वाली थी तो मुझे क्या परेशानी थी। मैं तो उसे जल्द से जल्द स्वस्थ, हंसता-मुस्कराता देखना चाहता था।

दोपहर को नौकर ने आकर पूछा कि लोलिता का फोन आया है और उसने पूछा है कि मैं कितने बजे आऊंगा। मैं खुद भी अस्वस्थ हो गया था- मैंने कह दिया-

"फोन पर उससे कह दो कि मैं अगले दिन किसी समय आऊंगा।" मैं फिर से शराब पीने लगा, जितना ही शराब पीता तलब उतनी ही बढ़ती जाती। लगता कुछ खाली-खाली सा है, जिसे भरने के लिए मुझे शराब का सहारा लेना पड़ रहा है।

अगले दिन जब सुबह मैं उठा तो मेरा सिर पहले से ज्यादह भारी

था। टूथ ब्रुश करने के बाद मैंने काउंटर पर जाकर हास्पिटल फोन मिलाया तो नर्स की मीठी आवाज़ मेरे कानों में गूंजी। नर्स से मेरी तीन चार मिनट तक बात होती रही। उसने बताया कि कल शाम तीन बजे लोलिता के चाचा मिस्टर गुस्ताव हास्पिटल आए थे। मिस्टर गुस्ताव के पास कैडिलाक गाड़ी थी और साथ में झबरे बालों वाला कुत्ता था। उन्होंने बिल अदा करने के बाद लोलिता को कैडिलाक में बिठाया और चले गये। जाते समय लोलिता ने मेरे लिए संदेश छोड़ा था कि फिक्र की जरूरत नहीं-वह और चाचा, अपने बाबा के यहां गांव जा रहे हैं।

मैं एकदम पागल सा हो उठा था। फोन पटक कर मैं अपना संतुलन खोए हुए किस तरह कार तक पहुंचा और गाड़ी स्टार्ट कर कब हास्पिटल पहुंच गया, मुझे कुछ होश न रहा। न जाने क्यों रास्ते में मैं दुर्घटना न कर सका-मेरी मनः स्थिति ऐसी थी कि कुछ भी न सूझ रहा था- आंखों के सामने बस लोलिता ही लोलिता थी।

हास्पिटल पहुंच कर मैं लोगों पर बुरी तरह बरस पड़ा था। न जाने किस डाक्टर को तमाचा मारने को मैंने हाथ उठाया। पता नहीं कितनी देर तक नर्स मेरी को ढूंढ़ता रहा- लेकिन मेरी की किस्मत अच्छी थी, वह उस समय वहां नहीं थी, अन्यथा में उसका खून ही कर देता। उस साजिश में उसको ही पूरी तरह भागीदार मैं समझ रहा था। मैं जोर-जोर से चीखने चिल्लाने और अपशब्द कहने के पूरे शबाब पर आ गया था। मेरे चारों ओर नर्सें और डाक्टर एक हो गये थे।

एक आध ने यह पहचानने की कोशिश की कि मैं कौन से बेड का मरीज हूं। लेकिन जब मैंने उनके सारे सवालों का जवाब गालियों से दिया तो वे गम्भीर हो गये। मैं गुस्से से पागल हो रहा था, मगर यह नहीं सूझ रहा था कि मुझे करना क्या चाहिये। मैं लोलिता को कहीं से भी ढूंढ कर लाने को कह रहा था।

डाक्टरों से पीछा छुड़ाकर मैं वहां के चीफ स्टॉफ की खोपड़ी तोड़ देने के इरादे से बढ़ ही रहा था कि एक नर्स ने मुझे वे कहानियों की किताबें लाकर दीं जो मैंने लोलिता को प्रेजेन्ट की थीं। उसने मेरे सामने एक रसीद बढ़ाकर उस पर हस्ताक्षर करने को कहा। मैं झल्लाहट में भरा हुआ उसे थप्पड़ से पूजने ही जा रहा था कि तभी मेरी नज़र दरवाजे पर पड़ी। चीफ स्टॉफ ने पुलिस वालों को बुला लिया था और दो सिपाहियों के साथ मेरी ओर बढ़ रहा था। मैंने चुपचाप रसीद पर हस्ताक्षर कर दिये और किताबें लेकर बाहर निकल गया।

आह ! लोलिता मेरी जिन्दगी से चली गयी, मैं अकेला रह गया। उसका कोई ना तो खत आया, न खबर आई। अन्ततः मैंने उसे ढूंढ निकालने का फैसला किया।

लोलिता को ढूंढ निकालने के लिए मेरे पास ट्रैप का हुलिया मौजूद था। मुझे लग रहा था कि एक लम्बे समय से वह मेरा पीछा कर रहा था–लिहाजा मैंने उन तमाम होटलों, सरायों और मोटर कोर्टों में जाकर दोबारा चक्कर लगाने की सोची, जहां-जहां मैं ठहरता हुआ आया था।

ऐसे किसी होटल में पहुंच कर मैं पिछले रजिस्टर चेक करने का कोई न कोई बहाना तलाश लेता। मैं 5 जुलाई से 18 नवम्बर तक लगभग 342 होटलों में ठहरा, इनमें से 300 जगह मुझे रजिस्टर देखने को मिल गये। 300 रजिस्टरों में से 20-25 रजिस्टर ऐसे थे जिन्हें देखने के बाद मुझे लोलिता को भगा ले जाने वाले अपराधी से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूत्र मिले। इन सूत्रों से यह पता चला कि वह काफी पढ़ा–लिखा आदमी था, उसे फ्रेंच आती थी। वह लड़कियों की तरह बना–बना कर लिखता था और इसी तरह बीस–पच्चीस से ज्यादह नाम बदलने के बावजूद उसके टी. डब्लू. और एल. सभी नामों में एक ही तरह से लिखे जाते थे।

हालांकि आगे चलकर मेरी यह सारी खोज व्यर्थ साबित हुई–ट्रैप नाम का कोई वजूद न था, न ही ऐसा कोई व्यक्ति जो लोलिता का लम्बे समय से पीछा करता रहा था। होटलों के चक्कर सब व्यर्थ और मेरा वहम था। मगर यह बात तो आगे चलकर खुलेगी। उस समय तो मैं एकदम तन्हा रह गया था। मैं दीवाना आशिक बनकर दुनिया भर में मारा-मारा फिर रहा था– कहीं चैन न आ रहा था।

मुझे अजीब–अजीब से सपने दिखाई देते। कभी लगता मैं बीमार पड़ गया हूं, और लोग मुझे उठाकर हास्पिटल ले जा रहे हैं– ऐसे समय लोलिता मेरे पास वापस आ गयी है। मैंने लोलिता की निशानियां एक–एक करके मिटानी शुरू कर दी थीं। उसके बचे हुए कपड़े–लत्ते, खिलौने अन्य सामान मैंने एक अनाथालय भिजवा दिये थे। जिस दिन मैंने पार्सल अनाथालय भिजवाया उस दिन लोलिता का पन्द्रहवां जन्म दिवस था।

इन्हीं दिनों मैंने लोलिता की याद में एक दो कविताएं भी लिखीं–

चाहता तो उन्हें छपने के लिए भेज देता, और वे छप भी जातीं। मगर मैं तो दिनो-दिन टूटकर बिखर रहा था– मुझे नाम न चाहिये था।

धीरे–धीरे मेरा सम्पर्क समाज से टूटने लगा। एक बार तो ऐसा हुआ कि एक होटल के रजिस्टर में अपना हस्ताक्षर करने के लिए मुझे पांच मिनट तक अपना नाम याद करना पड़ा। मैंने अन्त में कैलिफोर्निया जाकर टिकने का निश्चय किया। वहां जाकर मैं कुछ लिखने पढ़ने लगा था। मेरे लेख अखबारों में नाम-पते के साथ छपने लगे थे।

अगर आप समझते हैं कि लोलिता के जाने के बाद मेरी आदतें बदल गयी होंगी तो यह गलत है–मैं जहां कहीं तेरह-चौदह साल की लड़की देखता उनका स्पर्श पाने के लिए आतुर रहता।

इन्हीं रातों में मेरी जिन्दगी में रीता आयी। रीता बड़ी मजेदार औरत थी। जी हां, औरत, उसकी उम्र लोलिता से दुगनी रही होगी। उसकी और मेरी मुलाकात मान्ट्रियल और न्यूयार्क के बीच एक कैफे में हुई थी। वह यकायक मेरी मेज पर आकर बैठ गयी थी। मुझसे हाथ मिलाकर तरह–तरह के सवाल पूछने लगी थी। वह समझ गयी थी कि मैं टूटा हुआ इन्सान हूं। उसने मेरा हाथ अपने पंजों में लेकर मुझसे पूरी सहानुभूति दर्शायी थी। वह ऐसी–ऐसी बातें करने लगी जैसे हम कभी एक साथ पढ़ते रहे हों।

थोड़ी देर बाद मैंने तीसरे डबल पैग का आर्डर दिया– तो यूं लगा जैसे रीता और मैं बचपन के दोस्त बेशक न रहे हों, मगर उस वक्त तो ऐसा ही लगता था जैसे हम एक-दूसरे को बरसों से जानते हों।

उसने अपने बारे में जो बताया उसके अनुसार वह कैलिफोर्निया के एक कस्बे की रहने वाली थी। उसका भाई कस्बे का मेयर था। रीता का चाल चलन देखकर उसके भाई ने उसके नाम बैंक में एक निश्चित रकम जमा करा दी थी, जिसका ब्याज उसे हर वर्ष इस शर्त पर मिलता था कि वह कस्बे में जाकर उसकी बदनामी का कारण न बने। वह भी अकेलेपन में साथी की तलाश कर रही थी। मैं तो अकेला था ही।

1950 से 1952 तक मैं रीता के साथ रहा। मैंने उसे बता दिया था कि मैं एक खोई हुई लड़की की तलाश कर रहा हूं। अधिक पूछ–ताछ करने के बजाय वह मेरा साथ देती रही।

1952 के आखिरी महीने में रीता जिस तरह मेरी जिन्दगी में आयी थी, वैसे ही गायब हो गयी। लेकिन उसके और लोलिता के गायब होने में थोड़ा अन्तर था। रीता के जाते ही एक सप्ताह बाद मुझे खबर मिली थी कि पुलिस

ने उसे जेल में डाल दिया है, जबकि लोलिता की अभी तक कोई खबर न थी।

सितम्बर 1952 में मुझे दो खत मिले। पहला खत फार्लो का था। शार्लट की मौत के बाद रेम्सडेल से निकलते समय, शार्लट की सम्पत्ति की देखभाल का काम मैंने फार्लो के जिम्मे लाद दिया था। फार्लो ने लिखा था कि वह जल्द ही दक्षिणी अमेरिका चला जाएगा और मेरी सम्पत्ति के सारे कागजात शहर के वकील मुलक को देता जाएगा। मुलक को मैं जानता था, वह वहां का सम्मानित वकील था। फार्लो ने लिखा था कि– वह एक जवान लड़की के साथ हनीमून मनाने हिन्दुस्तान जा रहा है। खत से स्पष्ट था कि वह मुझसे नाराज है। शायद लोलिता के मुझसे अलग होकर चले जाने की भी उसे जानकारी थी और यह भी कि मैं उन दिनों एक वाहियात औरत के साथ रह रहा था। उसने खत में यह भी लिखा था कि शार्लट के मकान में जो लोग किरायेदार के रूप में रह रहे हैं, वे उसे खरीदना चाहते हैं। उसने एक मुस्कराती हुई लड़की का फोटो भी भेजा था जिसके साथ वह हनीमून मनाने जा रहा था।

फार्लो का खत खत्म करने के बाद मैंने अंगड़ाई ली। दूसरा खत खोला–उसकी लिखाई देखते ही सापों की गति की तरह मेरे शरीर के लहू में गति तैरती चली गयी। वह खत लोलिता का था। लिखा था–

"प्रिय डैडी। क्या हाल चाल है ? मेरी शादी हो गयी है मेरे बच्चा भी होने वाला है। मेरा ख्याल है कि बच्चा क्रिश्मस के आसपास होगा। यह खत मैं तुम्हे बड़ी कठिनाई में लिख रहीं हूं। आजकल मैं बड़ी परेशान हूं, क्योंकि हमारे पास अपना कर्ज चुका कर यहां से बाहर निकलने के लिए कोई पैसा नहीं है। डिक खानों का इन्जीनियर है और उसे अलास्का में नौकरी भी मिल गयी है। मैं इस नौकरी के बारे में ज्यादह नहीं जानती, नौकरी लगते ही लगता है हमारे दिन फिर जायेंगे। अब शायद अभी तक मुझसे नाराज होंगे। मुझे एक चेक जल्दी भेज दीजिए। वैसे तो मुझे चार सौ डालर की जरूरत है, लेकिन आप जितना भेज दें उतना ही काफी होगा। मुझे खत लिखिएगा। आपके खत का मैं इन्तजार करूंगी।

डौली (मिसेज एफ. शिलर)

अगले दिन मैं लोलिता से मुलाकात करने के लिए गाड़ी पर सवार हुआ।

मेरा ठिगना सा काला दोस्त मेरी जेब में पड़ा हुआ था। शहर से बाहर निकलकर ज्योंही मैं सन्नाटे में पहुंचा तो सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी करके मैंने पिछली सीट से एक पुराना स्वेटर निकाल लिया। वहां पहुंचने से पहले मैं ड्रामा के सीन का पूरी तरह से रिहर्सल कर लेना चाहता था। स्वेटर को एक पेड़ से टांगकर मैंने निशाने लगाए। स्वेटर में पांच–छः छेद हो गये। स्वेटर को दोबारा गाड़ी में फेंका। गाड़ी स्टार्ट करते समय दिमाग में बात आयी कि पिस्तौल का ट्रेगर ज़रा सख्त है आगे चलकर इसमें थोड़ा तेल दूंगा।

खत 18 सितम्बर, 1952 को लिखा गया था और मुझे 21 सितम्बर को मिला था और मैं 22 सितम्बर को रवाना हो गया था। खत कैलमौंट से लिखा गया था जो न्यूयार्क से लगभग आठ सौ मील दूरी पर स्थित एक छोटा सा औद्योगिक कस्बा है।

शाम को मैं जाकर एक होटल में ठहरा। सोने से पहले अगले दिन की तैयारी पूरी कर लेनी चाही। होटल लोलिता के कस्बे से दो– ढ़ाई घण्टे की दूरी पर था। शेव करने, सेण्ट लगाने, बालों को शैम्पू कर लेने के बाद मैंने घड़ी का अलार्म छः बजे का लगा दिया।

एक शानदार सूट, एक रेशमी रूमाल और पीली कश्मीरी टाई लगाकर मैं जा रहा था। मुझे इस रूप में जो देखता, सोचता मैं शादी करने जा रहा हूं, हत्या करने नहीं।

कैलमौंट पहुंच कर मैं लोलिता का मकान तलाश करने लगा। पत्र में लोलिता ने अपने पति का पूरा नाम नहीं लिखा था। मैंने पता लगाया हण्टर रोड के इलाके में रहते थे।

दरवाजा लोलिता ने ही खोला था। मेरे दिल की धड़कनें उस रूप परी को देखने के लिए बढ़ी हुई थीं। उसने आंखों पर हल्के गुलाबी रंग के फ्रेम वाला चश्मा चढ़ा रखा था। अच्छा जूड़ा बांध रखा था। कुछ लम्बी हो गयी थी। पेट आगे को निकला हुआ था। काफी कुछ बदल गयी थी, मगर थी तो मेरी लोलिता ही। अपने उस रूप में जहां वह काफी कुछ बदल गयी थी वहीं उसका चेहरा कुछ छोटा लगने लगा था। भूरे रंग की स्लीवलेस खुली पोशाक पहने हुए थी। मुझे देखा तो चौंक पड़ी–कहा–

"अरे....।"

शायद उसे मेरे खत का इन्तजार था, सीधा मैं चला आऊंगा ऐसी

आशा न थी।

"तुम्हारा पति घर पर है...?" मैंने जेब में मुट्ठी भींचते हुए पूछा। शायद आप सोच रहे होंगे कि मैं उसे कत्ल करने आया था। नहीं, मैं उसे कैसे कत्ल कर सकता था। दरअसल उसकी वज़ह से ही तो मैं कत्ल करना चाहता था। उसे मैं प्यार करता था, फिर भला कत्ल कैसे कर सकता था।

"अन्दर आ जाओ...।" उसने मुस्कराते हुए कहा।

मेरे अन्दर प्रवेश करते समय वह दरवाजे पर ही खड़ी रही। मैं बड़ी सतर्कता के साथ अन्दर प्रविष्ट हुआ। मैं उसके आगे को निकलते हुए पेट का स्पर्श नहीं करना चाहता था।

उसी समय उसका पालतू कुत्ता आने लगा, उसे बाहर रहने को कहकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

मैंने अन्दर प्रविष्ट होकर देखा हम जिस कमरे में खड़े थे वहां से किचन और पिछला दरवाजा साफ नज़र आ रहे था। घर के सभी दरवाज़े खुले हुए थे, किसी दरवाज़े पर कोई पर्दा नहीं था। मैं कुछ देर तक यूं ही खड़ा रहा।

"बैठ जाइए....।" उसने दीवान की तरफ इशारा करते हुए कहा–

"डिक नीचे है, उसे बुलाऊं....।"

मुझे नहीं मालूम था कि डिक कौन है। उसने खुद ही कहना शुरू कर दिया–

"वह अपने पड़ोसी के लिए कुछ ठोका पीटी कर रहा है– क्या मैं उसे बुलाऊं....?"

"मैं किसी डिक से मिलने नहीं आया।" मैंने कहा–"वह कहां है?"

"कौन....?"

"वही....।"

वह समझ गयी–

"देखो, अब इस मामले में झगड़ा करने से क्या फायदा?"

"तो मैं यहां आया किसलिए हूं?"

लोलिता चुप हो गयी। वह पिछले कुछ वर्षों में समझदार हो गयी मालूम देती थी। फिर उसने रुक–रुक कर बताया कि उसके और मेरे सम्बन्धों के बारे में डिक को कुछ भी पता नहीं। वह समझता है कि मैं लोलिता का पिता हूं।

अब मैं समझ गया था कि डिक उसका पति है और उसने शादी शुदा जीवन में आकर समझदारी की है कि मेरा अपना रिश्ता छुपा डाला था। मैंने पूछा–

"डिक कौन है.... ? उसका पूरा परिचय दो...।"

"डिक एक आदर्श पति है और कुछ नहीं....।" फिर वह मुझे समझाने लगी कि बीती हुई बातों पर अफसोस करने से कोई फायदा नहीं है जो बीत गया। वह बीत गया।

"क्या आपको पता है कि वे मम्मी के अच्छे दोस्त हैं ? एक बार वे हमारे घर भी ठहरे थे। वे आपको जानते थे।"

उसी समय रसोईघर में दो आदमियों की बातचीत की आवाज़ आयी। लोलिता ने बताया कि डिक और बिल काम करने के बाद बियर तलाश कर रहे थे।

फिर वे जब मेरे सामने आये तो लोलिता ने परिचय कराते हुए कहा– "इनसे मिलो–ये मेरे डैडी हैं।" लोलिता ने इतनी ऊंची आवाज़ में डिक से मेरा परिचय कराया था कि मैं समझ गया डिक कम सुनता है।

बाद में मैंने उसके बारे में जो जानकारी पाई उसके अनुसार लड़ाई में भाग लेने के कारण उसके कान के पर्दे कुछ कमज़ोर हो गये थे और वह केवल जोर से बोलने पर ही सुन सकता था।

नीली आंखें, काले बाल, तीन दिन से बिना बनी दाढ़ी। हम लोगों ने हाथ मिलाए। बिल बियर ले आया। मैं पीना नहीं चाहता था, मगर सोचा लोलिता को बुरा लग सकता है।

डिक का ख्याल था कि ठहरने के इरादे से आया हूं। उसने लोलिता के कान के पास मुंह ले जाकर कहा–

"इन्हें कोई तकलीफ न होने देना– हम अन्दर सो रहेंगे।"

उसकी यह बात सुनकर मैंने लोलिता को बताया कि मैं तो सिर्फ उनसे मिलने आया हूं। लोलिता ने यह बात डिक को समझा दी। फिर लोलिता और बिल दोनों उठकर अन्दर चले गये।

थोड़ी देर के लिए मैं और डिक अकेले रह गये। मैंने डिक की ओर देखा और सामने पड़े हुए काउच को। इसी काउच पर डिक और लोलिता ने सैकड़ों बार सहवास का सुख भोगा होगा। उसी वक्त डोली और बिल अन्दर आए। डिक उठ खड़ा हुआ। वह मेरे पास बैठने में कुछ कठिनाई महसूस कर रहा था।

"मैं और बिल थोड़ी देर और काम करेंगे, तुम डैडी से बातचीत करो...।" उसने लोलिता से कहा।

बिल के अपने घर चले जाने के बाद मुझसे लोलिता ने पूछा– "सिगरेट पिओगे.. ?"

"नहीं.... ।"

उसने अपने लिए सिगरेट सुलगा ली। मैं उसे पहली बार सिगरेट पीता देख रहा था। मुझे लगा शार्लट जिन्दा हो गई है।

"तुमने मुझे धोखा दिया... ।" मैंने कहा।

"तुम यह कैसे कह सकते हो" उसने अपनी बात कहनी आरम्भ की। उसने बताया कि हास्पिटल से भागकर वह और क्विलिटी एक फार्म पर चले गये थे। क्विलिटी शारीरिक रूप से नपुंसक था, इसलिए लड़कियों से घिरा रहना चाहता था। उसने लोलिता से वायदा किया कि वह एक फिल्म बनाएगा और उसकी हीरोईन टेनिस चैम्पियन होगी। टेनिस चैम्पियन का पार्ट लोलिता को दिया जाएगा।

यह क्विलिटी वही व्यक्ति था जिसे टेनिस कोर्ट में मैंने लोलिता के पार्टनर के रूप में टेनिस खेलते और फिर नज़रें चुरा कर भागते देखा था। उसी क्विलिटी ने मेरी लोलिता को बहका लिया था– उसे फिल्म का लालच देकर हास्पिटल से उसका चचा बनकर भगा ले गया था।

क्विलिटी के फार्म पर जाकर लोलिता ने पाया था कि वहां वह और क्विलिटी अकेले नहीं थे। वहां एक और लड़की थी, दो मर्द थे, बूढ़ी औरत फोटोग्राफर थी। क्विलिटी टेनिस खेलने वाली चैम्पियन की नहीं, बिस्तर में लेटी पसीने-पसीने होती हुई लड़कियों की फिल्में खींचता था। लोलिता ने उसका इरादा जानने के बाद उसकी बात मानने से इन्कार कर दिया था। यह इन्कार लोलिता को बहुत महंगा पड़ा था। उसे क्विलिटी की यंत्रणा सहनी पड़ी थी। अगले दो वर्षों तक लोलिता को होटलों में वेट्रेस, अस्पतालों में नर्स और दफ्तर में चपरासी के रूप में काम करना पड़ा था। 1951 में उसकी मुलाकात डिक से हुई। फिर वे लोग शादी करके वहां आ गये। उसकी दुःखद कथा सुनकर मैं उठ खड़ा हुआ। उसे निमंत्रित किया कि इस आर्थिक तंगी भरी जिन्दगी को छोड़ कर मेरे साथ खुशहाल जिन्दगी गुजारने के लिए अभी और इसी समय चली चले। उसने इन्कार किया। मैंने उसके होने वाले बच्चे को अपना बच्चा बनाने, परवरिश करने का विश्वास दिलाया, मगर वह न मानी।

फिर मैंने जेब से निकालकर एक लिफाफा लोलिता को पकड़ा दिया। लिफाफे में चार सौ और छत्तीस सौ डालर का एक चेक पड़ा था। उसने लिफाफा पकड़ा, नोट गिने। चैक पढ़कर और हंसकर मेरी ओर देखा–"यानी तुम मुझे चार हजार डालर दे रहे हो।" उसे विश्वास न हो रहा था।

मैं रो पड़ा... सिसक पड़ा। मैं उससे प्यार करता था। इतनी आर्थिक

तंगी में उसे पाकर मुझे रोना आ गया था। लोलिता ने मेरा कन्धा सहलाकर मुझे धैर्य बंधाने की कोशिश की। उसके स्पर्श से मेरे भीतर उमड़ता तूफान और भी तेज हो गया। मैंने कहा–

"क्या तुम्हारे लौट आने की कोई सूरत नहीं है ?"

"नहीं... ।" उसने कुछ देर चुप रहने के बाद कहा। वह मुझे पहुंचाने बाहर तक आयी। मैंने विदा लेते हुए कहा–"सुनो, अगर कभी–किसी भी दिन तुम्हें लगे कि मैं तुम्हारे किसी काम आ सकता हूं तो बेधड़क चली आना। मैं तुम्हें हर हाल में स्वीकार करने को तैयार हूं। याद रहेगा न.. ।"

"नहीं.... ।" उसने मुस्करा कर जवाब दिया।

मैं गाड़ी में बैठा और गाड़ी चला दी। मुझे पीछे कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, क्योंकि आंखों में आंसू भरे हुए थे।

क्विलिटी का कुछ पता लोलिता से मिल चुका था–कुछ पता मैंने उसके बारे में खुद लगाया। लेखकों की डायरेक्टरी में उसका नाम था। मैंने उसका नाम पता देखकर सारा प्रोग्राम तय कर लिया।

अगली सुबह पार्किंग्टन से रवाना होने के बाद मैंने पहले पिस्तौल की जांच की। मुझे डर था कि कहीं उसमें जंग न लग गया हो। मैंने पिस्तौल को तेल लगाया और पुराने कारतूस निकाल कर उसमें नये कारतूस भर दिये।

ग्रिन रोड पर क्विलिटी का भारी भरकम मकान दूर से ही दिखाई पड़ रहा था। वहां पहुंचकर मैंने घण्टी बजाई, लेकिन कोई जवाब न मिला। पहली बार मुझे शक हुआ कि कहीं वह वहां से चला न गया हो। मैंने मुड़कर गैराज की ओर देखा–उसकी काली कैडीलाक खड़ी थी। मैं कुछ आश्वस्त हुआ। इस बार मैंने घण्टी का प्रयोग करने के बजाय दरवाजे को खटखटाना बेहतर समझा। लेकिन उसका कोई जवाब न मिला। मैंने धक्का देकर दरवाजा खोल दिया और अन्दर चला गया।

अन्दर जाकर मैंने देखा हाल में कोई नहीं था। मैं हाल पार करके कमरों की ओर बढ़ने लगा। सब कमरे खाली पड़े हुए थे। बेडरूम देखकर लगता था रात उसपर कोई सोया है। लगभग पांच मिनट तक मैंने कमरों का निरीक्षण किया। हर कमरा देख लेने के बाद जब मैं बाहर निकलता तो कमरा बन्द कर लॉक कर देता और चाबी जेब के हवाले कर लेता।

कमरे देख लेने के बाद मैंने बाथरूम देखने शुरू किये–एक, दो,

मैं तीसरे बाथरूम में घुसने ही वाला था कि उसमें से क्विलिटी बाहर निकला। उसने मुझे देखा और बिना कुछ बोले-चाले, बेडरूम की तरफ बढ़ने लगा। शायद उसे लगा था कि मैं कोई भूत हूं। मुझे देखकर वह अनदेखा कर देना चाहता था।

वह ड्राइंग रूम में चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। ड्राइंग रूम में पहुंचकर जब वह मुड़ा तो शायद अब तक उसने निर्णय ले लिया था कि मुझसे बात कर लेने में कोई हर्ज नहीं है। उसने कहा-

"कौन हो तुम.....कहीं तुम्हारा नाम ब्रिस्टर तो नहीं है ?"

मैं समझ गया कि रात की खुमारी अभी टूटी नहीं है। मैंने कहा-"हां, मेरा नाम ब्रिस्टर ही है।"

"लेकिन यार, तुम ब्रिस्टर लगते नहीं।"

"तो फिर मैं ब्रिस्टर नहीं हूं।"

"अच्छा तुम कहीं टेलीफोन का बिल तो लेने नहीं आए.....।"

"क्यों, क्या इस महीने का बिल तुमने नहीं दिया..... ?"

"कहां से दूं-यहां सैकड़ों ऐरे-गैरे, नत्थू खैरे चले आते हैं और फोन उठाकर नम्बर घुमाना शुरू कर देते हैं, मानो मेरा टेलीफोन न हुआ बच्चों का तमाशा हो गया।"

मुझे लगा नाटक बहुत हो चुका। मैंने कहा-

"क्विलिटी, तुम्हें डौली हेज नाम की लड़की याद है ?"

"अच्छा, तो तुम्हें डौली ने भेजा है.....। लेकिन मुझे क्या परवाह। यहां रोज लड़कियां आती हैं और चली जाती हैं।"

"तुम्हें परवाह हो या ना हो, पर मुझे है। मैं डौली का पिता हूं-।"

"बको मत। तुम तो शक्ल से ही किसी पब्लिशर के एजेण्ट लगते हो-।"

"कान खोलकर सुनो क्विलिटी.....वह मेरी बच्ची थी।"

उसने मेरी तरफ देखा। एक मिनट के लिए उसकी आंखों में पहचान की चमक उभरी, फिर बुझ गयी। वह बैठकर उठना चाहता था।

मैंने कहा-

"वहीं बैठे रहो.....।"

उसने आश्चर्य से मेरी ओर देखा। छोटी सी पिस्तौल मेरी हथेली में उसे साफ दिखाई दे गयी थी। उसने पूछा-

"यह पिस्तौल तुमने क्यों पकड़ रखी है ?"

"मैं यहां एक ड्रामा करने आया हूं.....।" मैंने मुस्करा कर कहा।

"अच्छा- तुमसे मिलकर बड़ी खुशी हुई.....।" उसने हाथ बढ़ाया

मगर मैंने उसे कुर्सी पर धकेल दिया।

"धक्का क्यों देते हो.....?" उसने लापरवाह स्वर में कहा।

"बकवास बन्द करो। तुम्हारा आखिरी वक्त आ गया है।"

"क्या यह ड्रामे का कोई डायलाग है—?"

जवाब में मैंने पिस्तौल का ट्रिगर दबाया, लेकिन गोली नहीं चली। मैंने झल्लाकर दूसरी बार ट्रिगर दबाया—इस बार हल्की सी आवाज़ हुई—गोली निकली और कालीन में छेद हो गया।

मैंने उसे धमकाते हुए कहा—

"अब तो तुम्हें यकीन हो गया।"

"पिस्तौल मुझे दे दो—।" उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"डौली हेज को याद करने की कोशिश करो। तुम मुझे यह बताओ कि वह तुम्हें कैसे मिली थी.....?"

"मुझे कुछ याद नहीं पड़ता।"

"याद नहीं पड़ता—।" वही डौली हेज जिसे तुम भगा लाए थे....।'

"भगा लाया था... ?" वह चिल्लाया—"तुम्हें मुझ पर यह इल्जाम लगाते हुए शर्म आनी चाहिए। उसका बाप उसे इस्तेमाल कर रहा था। मैंने उस लड़की को एक अपराधी के चंगुल से मुक्त कराया है.....।"

जब वह अपनी बात खत्म कर चुका तो मैंने उससे पूछा कि वह बैठे-बैठे मरना पसन्द करेगा या खड़े-खड़े।

"यह बड़ा मजेदार सवाल है ?" उसने मेरी ओर देखते हुए कहा—

"पता नहीं तुम्हें यह बात मालूम है या नहीं कि मैंने डौली के साथ कुछ नहीं किया। दरअसल मैं किसी भी लड़की के साथ कुछ करने लायक ही नहीं। बहुत इलाज करवा चुका हूं—।" कहते-कहते वह मेरी ओर झपटा। पिस्तौल छूट कर नीचे गिर पड़ी। हम दोनों गुत्थम-गुत्था हो गये। लेकिन मैं उससे ज्यादह तगड़ा था। कुछ देर बाद वह कुर्सी पर बैठा हांफ रहा था।

"देखो भाई, यह जिन्दगी और मौत का मजाक करना अब बन्द करो। मैंने अपने ड्रामों में ऐसे सैकड़ों सीन लिखे हैं।" कहते-कहते वह खड़ा हो गया।

इस बार मैं सावधान था। वह भी जानता था कि मैं चौकन्ना हूं। लेकिन फिर भी उसने मुझ पर दूसरा झपट्टा मारा। हम दोनों दोबारा गुत्थम गुत्था हो गये।

हम दोनों की सांस ज़रा ठीक हुई तो मैंने क्विलिटी से पूछा—"तुम्हारी आखिरी ख्वाहिश क्या है।"

"मेरी स्क्रिप्ट लाओ, वह सामने मेज पर रखी हुई है। मैं तुम्हें अपना ड्रामा पढ़कर सुनाऊंगा।"

मैं मेज पर से कागजों का एक बण्डल उठा लाया। उसने दो-चार पन्ने पलटने के बाद पढ़ना शुरू किया और लगभग पन्द्रह मिनट तक हाव-भाव में पढ़ता रहा।

जब खत्म कर चुका तो मेरी ओर देखा। एक ठण्डी सांस ली और कुर्सी पर ढीला होकर पड़ गया जैसे ड्रामा पढ़ने से बहुत थक गया हो।

मैंने ट्रिगर दबाया।

गोली उसकी बांह में लगी।

गोली लगते ही वह उठा और घायल बांह को हवा में ऊपर उठाए-उठाए-दूसरे कमरे की ओर बढ़ने को झपटा। कमरा बन्द था। मैंने चाबी लगाकर कमरा खोला और उसके अन्दर घुसने के बाद मैं उसके पीछे हुआ।

कमरे की हल्की-हल्की रोशनी में कई तरह के वाद्ययंत्र रखे हुए थे। वह जाकर एक पिआनो पर बैठ गया और कोई दर्दीली धुन निकालने की कोशिश करने लगा। मुझे उसके पिआनो की धुन सुनने में कोई दिलचस्पी न थी। अगर मैं उसे छूट दे रहा था तो इसलिए कि वह अपनी अंतिम इच्छा पूरी कर ले। मैंने दूसरी गोली चलाई। इस बार गोली उसकी दूसरी बांह में लगी।

"मैंने तुम्हारी वह दोनों पापी बांहें बेकार कर दी हैं, जिससे तुमने मेरी डौली को छुआ था कमीने...और अब मैं तुम्हें मौका दे रहा हूं ...भागकर अगर जान बचा सकते हो तो बचाओ। तुम नीच, पापी, जवान लड़कियों से जिस्म का..उनकी गंदी फिल्में बनाकर हराम की कमाई करके ऐश करने वाले नीच आदमी-तुमने मेरी डौली को भी बहका कर इसी लाइन पर लगाना चाहा था...मैं तुझे तड़पा-तड़पाकर मारूंगा...आसान मौत तू न मरेगा.....।"

वह जान बचाने के लिए भागा। वह कमरे से निकल कर ऊपर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा-जब वह पांच-सात सीढ़ियां चढ़ चुका तो मैंने एक के बाद-एक तीन गोलियां चलायीं। गोली लगने के बाद वह हौले से कराहता। वह इसी तरह जख्मी हालत में बेडरूम में पहुंच गया-बिस्तर पर गिरा। मैंने उसकी छाती का निशाना लेकर एक और गोली चलाई। इस गोली के लगते ही उसने एक बार सिर उठाकर मेरी तरफ देखने की कोशिश की, लेकिन देख न सका। उसी समय उसके मुंह से खून का एक छोटा सा बुलबुला उठकर फूलता-फूलता एक छोटे गुब्बारे जितना हो गया और मेरे

देखते ही देखते ... गया।

बेडरूम का ...वाज़ा बन्द कर मैं नीचे आया तो हाल में तीन चार औरतें और चार पांच ... शराब पी रहे थे।

"क्विलिटी ... गया...।" मैंने आखिरी सीढ़ी पर खड़े होकर घोषणा की।

दीवान पर बै... औरत ने मेरी तरफ देखा और अपने साथी से बात करने लगी। उसे ... यकीन ही न हुआ था कि मैं क्या कह रहा हूं। हो सकता है वे लोग मुझे न... में समझते रहे हों।

"मैंने क्विलि... को मार डाला है....।" मैंने दोबारा चिल्लाकर कहा।

"बहुत अच्छा किया....।" एक अधेड़ औरत के प्याले में शराब ढालता हुआ एक युवक बो...

"यह काम तो ... ले हो जाना चाहिए था....।" एक मोटा आदमी हंसकर बोला।

मुझे लगा वे ... मेरी बात का यकीन न करेंगे। वे शायद मुझे नशे में समझ रहे थे, ... बात को विश्वास करने योग्य ही नहीं मान रहे थे कि मैं उस ... कम्मे आदमी को मार कर भला कौन सा अपना लाभ कर सकता है।

मैं हाल से नि...ल कर बाहर चला आया।

इसके बाद क... किस्सा तो आप लोगों ने अखबारों में पढ़ ही लिया होगा। मैंने अप... ...ील को आदेश दे रखा है कि मेरी यह किताब लोलिता के म...ने ... बाद ही प्रकाशित की जाए।

हो सक... है ... धरती पर ज्यादह दिन न रहूं—लेकिन जब तक हूं, अलास्... ...ने पति के साथ रहने वाली लोलिता के लिए मेरी दुआ है कि व... सुखी रहे। मेरा लोलिता से कहना है अपने पति को सदा ख... रखन... उसको धोखा न देना। इसी में तुम्हारे बच्चे, आने वाले बच्चों ... भल... है.....मेरी आत्मा, यह शरीर छोड़ने के बाद भी तुम्हारे आस-पास ...राती रहेगी, लोलिता!

यहां आकर मे... कहानी समाप्त हो जाती है।

○ समाप्त ○